यूनियन धारा
Union Dhara

जिल्द. 45, सं. 4 Vol.XXXXV No.4, मुंबई अक्तूबर – दिसंबर, 2019

North-East Special
पूर्वोत्तर विशेषांक

गृहपत्रिका • HOUSE MAGAZINE OF

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया Union Bank of India

अनुक्रमणिका
Contents

यूनियन धारा
अक्तूबर–दिसंबर, 2019
UNION DHARA
October-December 2019
प्रकाशन तिथि : 14–02–2020

महाप्रबंधक (मानव संसाधन)
ब्रजेश्वर शर्मा
General Manager (HR)
Brajeshwar Sharma

संपादक
डॉ. सुलभा कोरे
Editor
Dr. Sulabha Kore

संपादकीय सलाहकार
अविनाश कुमार सिंह
के. पी. आचार्य
नितेश रंजन
नवल किशोर दीक्षित
Editorial Advisors
Avinash Kumar Singh
K. P. Acharya
Nitesh Ranjan
Naval Kishor Dixit

Printed and published by **Dr. Sulabha Kore** on behalf of Union Bank of India and printed at **JAYANT PRINTERY LLP** 352-54, Murlidhar Temple Compound, Near Thakurdwar Post Office, J.S.S. Road, Mumbai-400002. and published at Union Bank Bhavan, 'Nariman Point, Mumbai-400021.

Editor - Dr. Sulabha Kore
E-mail : sulabhakore@unionbankofindia.com
Our Address : Union Dhara,
11th Floor, Union Bank Bhavan,
239, Vidhan Bhavan Marg,
Nariman Point, Mumbai - 400 021.

E-mail : uniondhara@unionbankofindia.com
Mob. No. 9820468919
Tel.: 22896595 / 22896545 / 22896590

- परिदृश्य 3
- क्षेत्र महाप्रबंधक, कोलकाता/ क्षेत्र प्रमुख, गुवाहाटी 4
- संपादकीय 5
- साहित्य जगत से 6–7
- काव्यधारा 8–9
- पूर्वोत्तर, एक नया भारत 10–11
- पूर्वोत्तर की नदियां 12–13
- वर्तमान पूर्वोत्तर भारत का विकास 14–16
- जतिंगा 17
- पूर्वोत्तर भारत का खानपान 18–19
- Abode of clouds 20–21
- पूर्वोत्तर राज्यों का परिधान 22–23
- Incredible Tripura 24–25
- Future of handicrafts in Tripura 26–27
- (व्यक्ति विशेष) दिल हुम हुम करे... 28–29
- Kamakhya Temple 30
- Chabimura/उज्जयंता पैलेस 31
- Manipuri or Meitei Traditional Costumes 32
- Flavours of Manipur 33
- उगते सूरज का प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश 34–35
- पूर्वोत्तर का वन्य जीवन 36–37
- नागालैंड की बांस, बेंत संस्कृति 38–39
- Mizoram/मिजोरम 40–41
- सेंटर स्प्रेड (हॉर्नबिल फेस्टीवल) 42–43
- स्थापना दिवस, 2020 44–45
- उनाकोटी/जोनबील 46–47
- यूनिवन दिवाली मेला 48–49
- पूर्वोत्तर राज्य एवं उग्रवाद 50–51
- What's new 52–53
- पूर्वोत्तर भारत में उद्योग विकास 54–55
- प्रतियोगिता/परिणाम 56
- शिखर की ओर... 57
- शुभमस्तु/हमें गर्व हैं 58
- बधाई 59
- Face in UBI Crowd 60–61
- पूर्वोत्तर के ग्राहक/बालप्रतिभा 62–63
- सेवानिवृत्त जीवन से... 64–65
- Awards Gallore/ केंद्रीकृत समाचार 66–67
- समाचार दर्शन 68–81
- हेल्थ टीप्स/व्यंजन 82
- आपकी पाती 83
- बैक कवर 84

इस पत्रिका में व्यक्त विचारों से प्रबंधन का सहमत होना अनिवार्य नहीं है.
Designed and Printed at **JAYANT PRINTERY L.L.P.**, Mumbai-400002.

परिदृश्य
PERSPECTIVE

साथियों,

हमारी द्विभाषिक गृहपत्रिका–'यूनियन धारा' के जरिए आपसे मिलकर मुझे बेहद खुशी होती है. इस बार यूनियन धारा की टीम ने पूर्वोत्तर भारत विशेषांक प्रकाशित करने का उचित निर्णय लिया है. आठ राज्यों को समाहित कर बना हुआ पूर्वोत्तर का यह हिस्सा जैव विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के साथ अपनी भौगोलिक सुंदरता के लिए जाना जाता है. प्राकृतिक संसाधनों से यह हिस्सा पूरी तरह से समृद्ध है. यहां की जलवायु में कृषि उत्पाद, खेती, बागवानी एवं वानिकी के लिए वृहद अनुकूल संभावनाएं है. इसके अलावा, पूर्व एशिया के साथ इसकी भौगोलिक निकटता के कारण पूर्व एशिया के साथ व्यापार हेतु यह उत्तम प्रवेश द्वार के रूप में है. पूर्वोत्तर क्षेत्र, पर्यटकों और निवेशकर्ताओं को बहुत तेजी से आकृष्ट कर एक आर्थिक केंद्र बनता जा रहा है. यह क्षेत्र उद्यमशीलता की भावना से भरपूर है तथापि यहाँ की युवा शक्ति को सही तरीके से जोड़ने और उद्यमियों को समर्थन देने की आवश्यकता है, जिससे कारोबार को बढ़ावा देकर उसे वैश्विक स्तर की प्रतियोगिता हेतु तैयार किया जा सके.

पूर्वोत्तर की क्षमता को वास्तविकता में उभारने में बैंकिंग और वित्तीय उद्योग की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है. इस क्षेत्र में कृषि और एमएसएमई के वित्तपोषण में यूनियन बैंक महत्वपूर्ण भूमिका के रूप आगे आ रहा है तथा वित्तीय संकट के प्रबंधन में घरेलू स्तर पर भी मदद दे रहा है.

यूनियन धारा का यह विशेषांक पूर्वोत्तर क्षेत्र के लोग, वहाँ की संस्कृति और कारोबार को बेहतर और समृद्ध तरीके से समझने में हमारी सहायता करेगा. यह अंक स्थानीय समाधान तैयार करने के साथ ही वहां के लोगों के साथ हमारे जुड़ाव को और मजबूत करने में हमारी मदद करेगा. मैं एक बार फिर इस अंक में पूर्वोत्तर क्षेत्र को उसकी पूरी गरिमा के साथ समेटने के प्रयासों हेतु यूनियन धारा की टीम की प्रशंसा करना चाहूंगा.

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ,

राजकिरण रै जी

राजकिरण रै जी.

Dear Unionites,

I have the pleasure of reaching you all through our in-house bilingual magazine, 'Union Dhara'. It is apt that Union Dhara team has chosen to bring the North-East India special issue this time. The North-Eastern part, well known for its beautiful geographical greenery, comprises of eight states, with its rich cultural heritage and vivid biodiversity. It is richly endowed with natural resources. The favourable agro-climatic conditions here have a huge potential for farming, horticulture and forestry. Besides, its geographical proximity with East Asia makes it a perfect gateway for trade with East Asia. North-East region is fast becoming a economic hub, attracting tourists and investments. It is brimming with entrepreneurial spirit. There is a need, however, to channelise youthful energy and support entrepreneurs to scale businesses that can compete globally.

Banking and financial industry has an important role to play in realising North-East potential. Union Bank has emerged a key player in financing agriculture and MSMEs in the region and also helping households to manage financial adversities.

This special issue of Union Dhara will further enrich our understanding of North-East region, the people, culture and businesses. It will help to deepen our engagement with community to devise localised solutions. I once again compliment the team Union Dhara for their efforts in bringing out the issue and capturing the region with all its grandeur.

With best wishes,

Rajkiran Rai G.

क्षेत्र महाप्रबंधक, कोलकाता का संदेश...

यूनियन बैंक के स्वर्णिम 100 वर्षों की यात्रा पूर्ण करने हेतु सभी यूनियनाइट्स को हार्दिक बधाई एवं अभिनंदन.

समय चलायमान है, वह कभी रुकता नहीं और इसी यात्रा में हमने अपने ग्राहकों, शेयरधारकों तथा कर्मचारियों के साथ 100 वर्ष पूरे कर लिए हैं. हमारे लिए यह बात बेहद खुशी की है. हमें इस बात का गर्व है कि यूनियन बैंक के 100 वर्ष पूर्ण करने के उपरांत हमारे बैंक की गृहपत्रिका हमारे अंचलाधीन पूर्वोत्तर राज्यों के विशेषांक के रूप में प्रकाशित होने जा रही है. उच्च प्रबंधन एवं यूनियन धारा के सम्पादन मण्डल के प्रति हम विशेष आभार व्यक्त करते हैं कि उन्होंने उक्त कार्य हेतु हमारे अंचल के क्षेत्र को चुना है.

हमारे देश भारत का पूर्वोत्तर राज्य अपने आप में विशिष्ट है. भारत की अनेकता में एकता की संकल्पना पूर्वोत्तर राज्यों पर भी लागू होती है. पूर्वोत्तर राज्यों को 'सेवेन सिस्टर स्टेट्स' कहा जाता है अर्थात कहने को तो यह सात राज्य हैं लेकिन भौगोलिक बनावट में काफी समानताएं हैं. यह सम्पूर्ण क्षेत्र विविधताओं, सांस्कृतिक, जनजातीय, वन्यजीव, लोकसंगीत, लोकसंस्कृति, शौर्य गाथाओं से भरपूर है.

पूर्वोत्तर राज्यों की जब बात की जाती है तब हम सात राज्यों की बात करते हैं जिसमें असम, मणिपुर, त्रिपुरा, मेघालय, नागालैंड, मिजोरम और अरुणाचल प्रदेश है. हालांकि इसमें आंठवा राज्य 'सिक्किम' भी जोड़ा जाता है. 'असम' राज्य के उच्चारण मात्र से हमारे मानस पटल पर पहला नाम 'माँ कामाख्या' का आता है. माता के सभी शक्तिपीठों में से कामाख्या शक्तिपीठ को जागृत माना जाता है.

चर्चा हो पूर्वोत्तर राज्यों की और ब्रह्मपुत्र का उल्लेख न हो तो बात अधूरी रह जाती है. उत्तर पूर्व भारत के पास देश के कुल भू-भाग का मात्र 5% है लेकिन प्रकृति ने इस हिस्से को पूरे जल संसाधन का 30% हिस्सा दिया है. इसमें अहम भूमिका निभाता है तिब्बत के मानसरोवर पर्वत स्थित भागीरथी ग्लेशियर से उद्गमित ब्रह्मपुत्र. ब्रह्मपुत्र को तिब्बत में साम्पो कहते हैं. ब्रह्मपुत्र नद, हाँ इसकी व्यापकता के हिसाब से इसे नद कहा जाता है, क्योंकि इसकी लंबाई लगभग 2900 कि.मी. है, जिसमें से लगभग 900 कि.मी. हिस्सा भारत में है. इसकी सहायक नदियां है: मानस, तिस्ता, सुबनसरी, जालढ़का, दिबांग, लोहित, धनश्री, कोलोंग आदि. गुवाहाटी, डिब्रुगढ़, तेजपुर, धुबरी आदि कुछ प्रमुख शहर है जो ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर बसे हैं.

पूर्वोत्तर राज्यों में बैंक उतने व्यापक परिदृश्य में नहीं है लेकिन हर राज्य में हमारी उपस्थिति अवश्य है. हमारे बैंक का प्रदर्शन पूर्वोत्तर राज्यों में प्रभावशाली बनें ताकि हमारे बैंक का नाम इस क्षेत्र में भी बना रहें. हमने अपनी पहचान यहाँ भी बनायी हैं. किसी क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करने हेतु तथा हमारी व्यापकता बढ़ाने के लिए हमें अपने कार्यों के स्तर को अन्य प्रतिद्वंदियों से और बेहतर बनाना होगा तथा अधिकतम शाखाओं को खोलकर अपनी उपस्थिति को दर्ज करना होगा.

यूनियन धारा के जरिए इस अनूठे और प्रकृति के वरदान से समृद्ध राज्यों को देखना, महसूस करना एक अद्वितीय अनुभव होगा. यह अंक आपको इन राज्यों की सुंदरता तथा संभावनाओं से अवगत कराएगा इसका मुझे विश्वास है. इस विशेषांक में अपनी सहभागिता देने वाले सभी यूनियनाइट्स का बहुत आभार एवं शुभकामनाएँ.

–निहार रंजन सामल

क्षेत्र प्रमुख, गुवाहाटी की बात

भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, त्रिपुरा और सिक्किम-इन आठ राज्यों का समूह है. यह क्षेत्र भौगोलिक, पौराणिक, ऐतिहासिक एवं सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है. संस्कृति, भाषा, परंपरा, रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज, पर्व-त्योहार, वेश-भूषा आदि की दृष्टि से इस क्षेत्र को भारत की सांस्कृतिक प्रयोगशाला कहा जा सकता है. गृह पत्रिका 'यूनियन धारा' के माध्यम से प्रस्तुत करने की कोशिश एक अच्छी पहल है. इस पत्रिका के माध्यम से मैं क्षेत्रीय कार्यालय गुवाहाटी की ओर से सभी यूनियनाइट्स एवं पाठकों का अभिनंदन करते हुए बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ. शीर्ष प्रबंधन एवं यूनियन धारा के संपादक मण्डल के प्रति आभार व्यक्त करते हुए मुझे अति प्रसन्नता हो रही है कि आपके द्वारा पूर्वोत्तर भारत विशेषांक प्रकाशित करने के लिए सहर्ष स्वीकृति प्रदान की गई. मुझे विश्वास है कि यूनियन धारा का पूर्वोत्तर भारत विशेषांक अद्वितीय होगा तथा इस अंक में समाहित विभिन्न रचनाएँ आपको रोमांचित तो करेंगी ही साथ ही आपके ज्ञानवर्धन में भी सहायक होंगी.

क्षे.का. गुवाहाटी के अंतर्गत, पूर्वोत्तर भारत के सिक्किम राज्य को छोड़कर बाकी सभी राज्यों में स्थित शाखाएँ आती हैं. क्षे.का. गुवाहाटी के अंतर्गत कुल 84 शाखाएँ आती हैं जिसमें असम राज्य में 68, मेघालय में 5, त्रिपुरा में 7 तथा मणिपुर, मिजोरम, नागालैंड और अरुणाचल प्रदेश में क्रमशः 1-1 शाखाएँ स्थित हैं.

विविधता, पूर्वोत्तर क्षेत्र की विशिष्ट पहचान है. भाषाई, भौगोलिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और जैविक विविधता पूरे पूर्वोत्तर में विद्यमान है. वन, पहाड़, नदी और झील को खुद में समाहित किए यह क्षेत्र प्राकृतिक सुंदरता के लिए पूरे देश में जाना जाता है. पूर्वोत्तर क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति और प्राकृतिक सुंदरता सभी को एक सुखद अनुभूति प्रदान करती है जिसके लिए भारत ही नहीं विदेशों से भी भ्रमण करने सैलानी यहाँ आते हैं. विविधता और कठिनाइयों के बावजूद पूर्वोत्तर भारत में बैंकिंग, सुलभता के साथ उपलब्ध है.

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ.

–बरुन कुमार

संपादकीय
EDITORIAL

साथियो,

अतुल्य भारत का पूर्वोत्तर हिस्सा 'सात भगिनी' – अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, मणिपुर मिजोरम, नागालैंड और त्रिपुरा इन सात राज्यों का घर है, जिसमें आठवां राज्य 'सिक्किम' भी शामिल है. ऊंची पहाड़ियां, हिमाच्छादित पर्वतीय श्रृंखलाएं, झरने, पारदर्शी पानी के स्त्रोत और अनोखे वन्यजीवों को समाहित करने वाली यहां की प्राकृतिक सुंदरता बरबस ही आकृष्ट करने वाली है. पूर्वोत्तर के इन आठ राज्यों की अपनी संस्कृति, परंपराएं और पहचान है जो कि इन राज्यों को समृद्ध सांस्कृतिक और परंपराओं की विरासत प्रदान करती है. यहां की प्राकृतिक सुंदरता हर मौसम में पर्यटकों का मन मोह लेती है लेकिन इन दूरस्थ राज्यों में पहुंचना थोड़ा कठिन और तकलीफदेह भी है. क्योंकि ये राज्य पहाड़ियों से घिरे हुए हैं. इन राज्यों के लिए कनेक्टिविटी की भी समस्या है. समृद्ध वनस्पति और जीव तथा अप्रतिम प्राकृतिक सुंदरता के बावजूद पर्यटक यहां उतनी बड़ी संख्या में नहीं आते जितनी बड़ी संख्या में उन्हें आना चाहिए. अब यह क्षेत्र मुख्य धारा में काफी तेजी से शामिल हो रहा है. शिक्षा एवं कनेक्टिविटी में सुधार की वजह से अब यहां की स्थिति में काफी सुधार आया है.

पूर्वोत्तर के लोग, अधिकतर देशी जनजातियां अपनी संस्कृति और परंपरा के प्रति बहुत गर्व का भाव रखते हैं. वे अपनी प्रकृति से बेहद प्यार करते हैं और अपने वृद्ध लोगों का सदैव सम्मान करते हैं.

मैं, अपने संपादकीय बोर्ड तथा सभी योगदानकर्ताओं के प्रति आभार व्यक्त करना चाहूंगी. विशेषरूप से श्री विक्रांत कुमार, संवाददाता, क्षे. का. गुवाहाटी का इसमें उल्लेखनीय योगदान रहा है.

इस अद्भुत भूमि की अपनी सुंदरता और गरिमा है जो आपको निश्चित रूप से एक नया नजरिया देगी. यह भूमि आपको बाहें फैलाकर आमंत्रित करती हैं, इसलिए अपना बैग पैक करें और इस पूर्वोत्तर क्षेत्र की सुंदरता का आनंद उठाइए.

पढ़ने और घूमने के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ.

आपकी,

डॉ. सुलभा कोरे

Friends,

The North-eastern part of the incredible India is home to the famous 'Seven Sisters'-Arunachal Pradesh, Assam, Meghalaya, Manipur, Mizoram, Nagaland and Tripura. The 8th state is Sikkim. This is the land of gripping scenic beauty consisting of high hills, snow clad mountain ranges, waterfalls, transparent water sources and exotic wild life. These 8 states of North-East have their own culture, traditions and ethnicity, which always give these states their legacy of rich cultural heritage and traditions. Their natural beauty attracts tourists during any season but reaching to these remote states is a bit difficult as these states are surrounded by the hilly terrain. Connectivity to these states is a problem. Despite its rich flora and fauna and abundant natural beauty, it doesn't attract the number of tourists as it should have. Now this area is getting into the main stream very fast. Education and improvements in the connectivity are the differentiating factors.

People of North-East, which are mostly native tribes, take great pride in their culture and traditions. They love their nature and pay respect to their elders tremendously.

I am thankful to my Editorial Board and all contributors. Mr. Vikrant Kumar, Correspondent, R.O., Guwahati is especially lauded for his active support and contribution.

This miraculous land is having its own beauty and grandeur which will definitely give you a new perspective. This land invites you with open arms. So pack your bags and enjoy this beautiful North-East region.

Happy reading and touring.

Yours truly,

Dr. Sulabha Kore

असमिया भाषा

भारत बहुभाषी एवं बहु संस्कृति का देश है. यहाँ पर समय-समय पर विविध संस्कृतियों के लोग भिन्न-भिन्न जगहों से आएं एवं यहीं के होकर रह गए. जिसका परिणाम यह निकला कि यह भिन्नता एवं विविधता का देश बन गया. यह विविधता हमें भाषा के आधार पर भी देखने को मिलती है. भारत में संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाएँ वर्णित हैं और लगभग 2000 बोलियाँ-उपबोलियाँ बोली जाती हैं. भारतीय भाषाओं के विकास का एकमात्र आदिम स्रोत संस्कृत भाषा रही है. संस्कृत भाषा से पालि, पालि से प्राकृत, प्राकृत से अपभ्रंश तथा अपभ्रंश भाषा से आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास हुआ है. आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं की शृंखला में पूर्वी सीमा पर अवस्थित असम की भाषा को असमी, असमिया अथवा आसामी कहा जाता है. असमिया असम प्रांत की आधिकारिक भाषा तथा असम में बोली जाने वाली प्रमुख भाषा है. इसको बोलने वालों की संख्या डेढ़ करोड़ से अधिक है.

कहा जाता है कि पहली सहस्राब्दी के समय असम को प्रागज्योतिष-कामरूप के नाम से जाना जाता था और दूसरी सहस्राब्दी के शुरू में ही इसे छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित कर दिया गया जबकि बाद में 13वीं शताब्दी के बाद अगले 600 वर्षों के लिए क्षेत्र को अहोम और कोचेस साम्राज्यों के नेतृत्व में असम साम्राज्य (संयुक्त संप्रभु राज्य) के रूप में स्थापित किया गया. कुछ विद्वानों का मानना है कि 'असम' शब्द संस्कृत के 'असोमा' शब्द से बना है, जिसका अर्थ है अनुपम अथवा अद्वितीय, लेकिन आज ज़्यादातर विद्वानों का मानना है कि यह शब्द मूलरूप से 'अहोम' से बना है. ब्रिटिश शासन में इसके विलय से पूर्व लगभग छह सौ वर्षों तक इस भूमि पर अहोम राजाओं ने शासन किया. आस्ट्रिक, मंगोलियन, द्रविड़ और आर्य जैसी विभिन्न जातियां प्राचीन काल से इस प्रदेश की पहाड़ियों और घाटियों में समय-समय पर आकर बसीं और यहां की मिश्रित संस्कृति में उन्होंने अपना योगदान दिया. इस तरह असम में संस्कृति और सभ्यता की समृद्ध परंपरा रही है. 'कामरूप' राज्य का सबसे प्राचीन उल्लेख इलाहाबाद में समुद्रगुप्त के शिलालेख में मिलता है. इसमें कामरूप का उल्लेख ऐसे सीमावर्ती देश के रूप में मिलता है, जो गुप्त साम्राज्य की अधीनता स्वीकार करता था और जिसके साथ उसके संबंध मैत्रीपूर्ण थे. चीन के विद्वान यात्री ह्वेनसांग लगभग 743 ई. में राजा कुमार भास्करवर्मन के निमंत्रण पर कामरूप में आये. उन्होंने कामरूप का उल्लेख कामोलुपा के रूप में किया. 11वीं शताब्दी के अरब इतिहासकार अलबरूनी की पुस्तक में भी कामरूप का उल्लेख मिलता है. इस प्रकार महाकाव्य काल से लेकर 12वीं शताब्दी तक समूचे आर्यावर्त में पूर्वी सीमांत देश को प्रागज्योतिष और कामरूप के नाम से जाना जाता था. यहां के राजा अपने आप को 'प्रागज्योतिष नरेश' कहा करते थे.

असम पूर्वोत्तर भारत का प्रहरी और पूर्वोत्तर राज्यों का प्रवेशद्वार है. यह भूटान और बांग्लादेश से लगी भारत की अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं के समीप है. असम के उत्तर में भूटान और अरूणाचल प्रदेश, पूर्व में मणिपुर तथा नागालैंड और दक्षिण में मेघालय, मिजोरम और त्रिपुरा है. भाषाई परिवार की दृष्टि से इसका संबंध आर्य भाषा परिवार से है और बंगला, मैथिली, उड़िया और नेपाली से इसका निकट का संबंध है. डॉ. गिर्यसन के वर्गीकरण की दृष्टि से यह बाहरी उपशाखा के पूर्वी समुदाय की भाषा है पर सुनीतिकुमार चटर्जी के वर्गीकरण में प्राच्य समुदाय में इसका स्थान है. उड़िया तथा बंगला की भांति असमी की भी उत्पत्ति प्राकृत तथा अपभ्रंश से ही हुई है.

यद्यपि असमिया भाषा की उत्पत्ति 17वीं शताब्दी से मानी जाती है किंतु साहित्यिक अभिरुचियों का प्रदर्शन तेरहवीं शताब्दी में रुद्र कंदलि के द्रोण पर्व (महाभारत) तथा माधव कंदलि के रामायण से प्रारंभ हुआ. वैष्णवी आंदोलन ने प्रांतीय साहित्य को बल दिया. शंकर देव (1449-1568) ने अपनी लंबी जीवन-यात्रा में इस आंदोलन को स्वरचित काव्य, नाट्य व गीतों से जीवित रखा.

सीमा की दृष्टि से असमिया क्षेत्र के पश्चिम में बंगाल है. अन्य दिशाओं में कई विभिन्न परिवारों की भाषाएँ बोली जाती हैं. इनमें से तिब्बती, बर्मी तथा खासी प्रमुख हैं. इन सीमावर्ती भाषाओं का गहरा प्रभाव असमिया की मूल प्रकृति में देखा जा सकता है. अपने प्रदेश में भी असमिया एकमात्र बोली नहीं है. यह प्रमुखतः मैदानों की भाषा है. बहुत दिनों तक असमिया को बंगला की एक उपबोली सिद्ध करने का उपक्रम होता रहा है. असमिया की तुलना में बंगला भाषा और साहित्य के बहुमुखी प्रसार को देखकर ही लोग इस प्रकार की धारणा बनाते रहे हैं परंतु भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से बंगला और असमिया का समानांतर विकास आसानी से देखा जा सकता है.

क्षेत्रीय विस्तार की दृष्टि से असमिया के कई उपरूप मिलते हैं. इनमें से दो मुख्य हैं-पूर्वी रूप और पश्चिमी रूप. साहित्यिक प्रयोग की दृष्टि से पूर्वी रूप को ही मानक माना जाता है. पूर्वी की अपेक्षा पश्चिमी रूप में बोलीगत विभिन्नताएँ अधिक हैं. असमिया के इन दो मुख्य रूपों में ध्वनि, व्याकरण तथा शब्दसमूह इन तीनों ही दृष्टियों से अंतर मिलते हैं. असमिया के शब्दसमूह में संस्कृत तत्सम, तद्भव तथा देशज के अतिरिक्त विदेशी भाषाओं के शब्द भी मिलते हैं. अनार्य भाषा परिवारों से गृहीत शब्दों की संख्या भी कम नहीं है. भाषा में सामान्यत: तद्भव शब्दों की प्रधानता है. हिंदी उर्दू के माध्यम से फारसी, अरबी तथा पुर्तगाली और कुछ अन्य यूरोपीय भाषाओं के भी शब्द आ गए हैं.

भारतीय आर्यभाषाओं की शृंखला में पूर्वी सीमा पर स्थित होने के कारण असमिया कई अनार्य भाषा परिवारों से घिरी हुई है. इस स्तर पर सीमावर्ती भाषा होने के कारण उसके शब्दसमूह में अनार्य भाषाओं के कई स्रोतों से लिए हुए शब्द मिलते हैं. इन स्रोतों में से तीन अपेक्षाकृत अधिक मुख्य हैं :

1. ऑस्ट्रो-एशियाटिक : (अ) खासी (आ) कोलारी (इ) मलायन 2. तिब्बती-बर्मी-बोडो 3. थाई-अहोम

शब्दसमूह की इस मिश्रित स्थिति के प्रसंग में यह स्पष्ट कर देना उचित होगा कि खासी, बोडो तथा थाई तत्व तो असमिया में उधार लिए गए हैं पर मलायन और कोलारी तत्वों का मिश्रण इन भाषाओं के मूलाधार के पारस्परिक मिश्रण के फलस्वरूप है. अनार्य भाषाओं के प्रभाव को असम के अनेक स्थानों पर देखा जा सकता है. ऑस्ट्रिक, बोडो तथा अहोम के बहुत से नाम ग्रामों, नगरों तथा नदियों के नामकरण की पृष्ठभूमि में मिलते हैं. अहोम के नाम प्रमुखत: नदियों को दिए गए नामों में हैं.

असमिया लिपि मूलत: ब्राह्मी का ही एक विकसित रूप है. लिपि का प्राचीनतम उपलब्ध रूप भास्करवर्मन का 610 ई. का ताम्रपत्र है परंतु उसके बाद से आधुनिक रूप तक लिपि में 'नागरी' के माध्यम से कई प्रकार के परिवर्तन हुए हैं. असमिया भाषा का व्यवस्थित रूप 13वीं तथा 14वीं शताब्दी से मिलने पर भी उसका पूर्वरूप बौद्ध सिद्धों के 'चर्यापद' में देखा जा सकता है. 'चर्यापद' का समय विद्वानों ने ई. सन् 600 से 1000 के बीच स्थिर किया है. इन दोहों के लेखक सिद्धों में से कुछ का तो कामरूप प्रदेश से घनिष्ट संबंध था. 'चर्यापद' के समय से 12वीं शताब्दी तक असमी भाषा में कई प्रकार के मौखिक साहित्य का सृजन हुआ था.

असमिया भाषा का पूर्ववर्ती, अपभ्रंश मिश्रित बोली से भिन्न रूप प्राय: 18वीं शताब्दी से स्पष्ट होता है. भाषागत विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए असमिया के विकास के तीन काल माने जा सकते हैं :-

प्रारंभिक असमिया

14वीं शताब्दी से 16वीं शताब्दी के अंत तक - इस काल को फिर दो युगों में विभक्त किया जा सकता है: (अ) वैष्णव-पूर्व युग तथा (आ) वैष्णव.

इस युग के सभी लेखकों में भाषा का अपना स्वाभाविक रूप निखर आया है. यद्यपि कुछ प्राचीन प्रभावों से वह सर्वथा मुक्त नहीं हो सकी है. व्याकरण की दृष्टि से भाषा में पर्याप्त एकरूपता नहीं मिलती परंतु असमिया के प्रथम महत्वूपर्ण लेखक शंकरदेव की भाषा में ये त्रुटियाँ नहीं मिलती. वैष्णव-पूर्व-युग की भाषा की अव्यवस्था यहाँ समाप्त हो जाती है. शंकरदेव की रचनाओं में ब्रजबुलि प्रयोगों का बाहुल्य है.

मध्य असमिया

17वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी के प्रारंभ तक- इस युग में अहोम राजाओं के दरबार की गद्यभाषा का रूप प्रधान है. इन गद्यकर्ताओं को बुरंजी कहा गया है. बुरंजी साहित्य में इतिहास लेखन की प्रारंभिक स्थिति के दर्शन होते हैं. प्रवृत्ति की दृष्टि से यह पूर्ववर्ती धार्मिक साहित्य से भिन्न है. बुरंजियों की भाषा आधुनिक रूप के अधिक निकट है.

आधुनिक असमिया

19वीं शताब्दी के प्रारंभ से-1819 ई. में अमरीकी बाप्तिस्त पादरियों द्वारा प्रकाशित असमिया गद्य में बाइबिल के अनुवाद से आधुनिक असमिया का काल प्रारंभ होता है. मिशन का केंद्र पूर्वी असम में होने के कारण उसकी भाषा में पूर्वी असम की बोली को ही आधार माना गया. 1846 ई. में मिशन द्वारा एक मासिक पत्र 'अरुणोदय' प्रकाशित किया गया. 1848 में असमिया का प्रथम व्याकरण छपा और 1867 में प्रथम असमिया अंग्रेजी शब्दकोश.

असमिया के शिष्ट और लिखित साहित्य का इतिहास पाँच कालों में विभक्त किया जाता है :- (1) वैष्णव पूर्व काल : 1200-1449 ई., (2) वैष्णव काल : 1449-1650 ई., (3) गद्य, बुरंजी काल : 1650-1926 ई., (4) आधुनिक काल : 1026-1947 ई., (5) स्वाधीनोत्तर काल : 1947 ई.

असमिया साहित्य की 16वीं सदी से 19वीं सदी तक की काव्य धारा को छः भागों में बाँट दिया गया हैं.

महाकाव्यों व पुराणों के अनुवाद, काव्य या पुराणों की कहानियाँ, गीत, निरपेक्ष व उपयोगितावादी काव्य, जीवनियों पर आधारित काव्य, धार्मिक कथा काव्य या संग्रह

असमिया की पारंपरिक कविता उच्चवर्ग तक ही सीमित थी. भट्टदेव ने असमिया गद्य साहित्य को सुगठित रूप प्रदान किया. दामोदरदेव ने प्रमुख जीवनियाँ लिखीं. पुरुषोत्तम ठाकुर ने व्याकरण पर काम किया. अठारहवीं शती के तीन दशक तक साहित्य में विशेष परिवर्तन दिखाई नहीं दिए. उसके बाद चालीस वर्षों तक असमिया साहित्य पर बांग्ला का वर्चस्व बना रहा. असमिया को जीवन प्रदान करने में चन्द्र कुमार अग्रवाल, लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा व हेमचन्द्र गोस्वामी का महत्वपूर्ण योगदान रहा. असमिया में छायावादी आंदोलन छेड़ने वाली मासिक पत्रिका 'जोनाकी' का प्रारंभ इन्हीं लोगों ने किया था. उन्नीसवीं शताब्दी के उपन्यासकार पद्मनाभ गौहन बरुवा और रजनीकान्त बरदलै ने ऐतिहासिक उपन्यास लिखे. सामाजिक उपन्यास के क्षेत्र में देवाचन्द्र तालुकदार व बीना बरुवा का नाम प्रमुखता से आता है. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य को मृत्यंजय उपन्यास के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया. इस भाषा में क्षेत्रीय व जीवनी रूप में भी बहुत से उपन्यास लिखे गए हैं. 40वें व 50वें दशक की कविताएँ व गद्य मार्क्सवादी विचारधारा से भी प्रभावित दिखाई देती है.

गुवाहाटी विश्वविद्यालय में असमी भाषा के साहित्य पर स्नातकोत्तर पढ़ाई होती है. यहाँ पर असमी के साथ-साथ विभिन्न भाषाओं पर भी अनुसंधान कार्य किए जाते हैं.

जब बात करते हैं असमी भाषा की तो हम भूपेन हज़ारिका को कैसे भूल सकते हैं. भूपेन हजारिका ने बंगला एवं असमी भाषा में बहुत गीत गाए हैं, जिनके तहत उन्हें बहुत ख्याति प्राप्त हुई है. वे असमी के लेखक, पत्रकार भी रह चुके हैं. पूर्वोत्तर राज्यों को एकता के सूत्र में बांधने का महान कार्य असमी भाषा कर रही है.

श्वेता सिंह
क्षे.का., कोलकाता

Victims of the bullies

The bullies will tear you apart.
They will come and
rip right through your heart.
The bullies will eat you alive
They will make sure you don't survive
The bullies will break your esteem
They will torture you until you scream
The bullies will blow out your light
They will drag you into any fight
The bullies will laugh, kick, punch or kill
They are the sadist and
your pain is their thrill
The bullies will show you their
sickening soul
They will push you into the
darkest hole
Whatever may happen they
remain the same
So why not beat them in
their own game.
No matter how many such
bullies you meet
Don't give in, don't accept defeat
The bullies are nothing better
than their sin
If you believe in yourself you
will surely win

Swati Sudha
FGMO, Bhopal

पंछी की आस

ऊंचे आसमान की समझ है जिनको,
पेड़ों पर आशियाँ बनाते हैं,
अपनी मीठी चहचहाट से
सुबह को संगीतमय बनाते हैं,
एक – एक तिनके को जोड़कर
घोसला वे हुए, जतनों के लिए,
जतनों का तो पता नहीं, पक्षी विलुप्त हो
रहे, उत्थान का पता नहीं,
पेड़ों का जबसे कटनी हुई,
दूषित हो गयी जलवायु,
कम हो रही जिसकी वजह से,
मनुष्य की औसतन आयु,
हे मनुष्य, अगर आज भी न जागा,
तो बहुत पछताएगा,
जहां न होगी पंछी की चहचहाट,
आसमां भी पानी नहीं बरसाएगा,
पानी को तरसेगा मिट्टी का कतरा – कतरा,
फिर तू फसल कहाँ से उगायेगा,
हे पंछी, तू चिंता न कर,
अब होश हमें आया है.
एक के बदले दस पेड़ लगाने का
जिम्मा हमने उठाया है.

स्पर्श सक्सेना
क्षे.का., इंदौर

ख्वाहिशें

कुछ मासूम ख्वाहिशें,
इस कदर उलझ गई
बारिश की बूंदों की तरह
फर्श पर बिखर गई।

पाने की चाहत में जिन्हें
हम उम्र भर तरसते रहें
टूट कर आसमान से वो
मोतियों से बरसते रहे।

हथेली और उँगलियाँ
भीगते सारी रात रहे
वापस जब तेरे दर से आए
मौला मेरे खाली हाथ रहे।

विश्वास आनंद
क्षे.का., सूरत

यूनियन बैंक के 100 बरस

100 वर्ष पूरे कर सीना ताने खड़ा है,
देखो, मेरे यूनियन बैंक का नाम बड़ा है.

बापू के हाथों से जिसकी नींव सजी है,
हजारो यूनियनाईट्स को आधार दिया है,
शहर को शीतल वृक्ष का अनुदान दिया है,
मुंबई से ऑस्ट्रेलिया तक ये फलदार खडा है.

व्यापारी के लिए जहां सलाहकार बना है,
विद्यार्थी के जीवन का आकार बना है,
नारी शक्ति का सबसे प्रिय उपहार बना है,
हलधारी का पहला-पहला प्यार बना है.

जनजीवन का यह शृंगार बना है,
मानव प्रगति पर ऐसा योगदान कर
परम और उदार बना है,
घने पेड़ सा लहलहाता छायादार बना है,
धीरे-धीरे बढ़ता ऐसा दिव्य महान बना है.

खुशियों की बरसात
कईयों के लिए वरदान बना है,
भारतवर्ष का सपूत 1919 से अडिग खड़ा है,
देखो, मेरे यूनियन बैंक का नाम बड़ा है.

सफर है 100 साल का

चुनौतियों को पार करता, निरंतर हुंकार भरता.
निरंतर चलता, सफर है 100 साल का.

नमन है सादर बापू का,
उनके कर-कमलों के जादू का.
किया उद्घाटन मुख्यालय का,
स्मरण है उनसे वादों का.

देश में एक पैगाम गया,
बैंकिंग जगत में नया नाम गया.
पीछे मुडकर कभी न देखा,
नहीं शिकवा नहीं मलाल का.
सफर है 100 साल का.

रचा अर्थव्यवस्था का इतिहास,
यूनियन बैंक जब बन गया खास.
आज पांचवां सबसे बड़ा बैंक.
जुनून है इसके कमाल का, सफर है 100 साल का.

कई बैंकों को साथ मिलाया.
जन-जन में यह आश जगाया.
अच्छे लोग, अच्छा बैंक,
इस नारे को सच कर दिखाया.

ग्राहक सेवा सर्वोपरि, समर्पित सेवा बहुत जरुरी.
गांव-गांव और शहर-शहर, डंका बजे कमाल का.
सफर है 100 साल का.

सी.बी.एस पूर्ण कर राह दिखाया.
केंद्रीकृत सेवा का पाठ पढ़ाया.
पारदर्शी सेवा गजब की दृष्टि,
देश-विदेश में मान बढ़ाया

गोल्डन पिकॉक का सम्मान पाया.
राजभाषा में सम्मान दिलाया.
ग्राम ज्ञान केंद्र का किया आगाज
ग्रामीण सेवा दिया बेमिसाल का,
सफर है 100 साल का.

मैं यूनियन बैंक हूँ

कड़ी स्पर्धा के दौर में, मेंटेन रखता अपना रैक हूँ
मैं यूनियन बैंक हूँ, मैं यूनियन बैंक हूँ...

राष्ट्रपिता ने मुझे बनाया,
मेहनती कर्मियों ने मुझे सजाया,
पूरे भारत में नाम कमाया,
मैं कोमल गुलाब का सेंट हूँ...
मैं यूनियन बैंक हूँ...

देश की आर्थिक धुरी कहलाता,
गरीब को कारोबार दिलाता,
देश को बेरोजगारी से आजाद कराने में,
मैं बिजी सौ परसेंट हूँ... मैं यूनियन बैंक हूँ...

ग्राहकों को सम्मान हूँ देता,
उनके सारे दु:ख हर लेता
नए नए उत्पाद हूँ देता,
ग्राहक सुविधाओं से भरा,
मैं एक बडा टैंक हूँ...
मैं यूनियन बैंक हूँ...

हिन्दी ने मुझे खूब बढ़ाया,
गांवों के जन-जन तक पहुंचाया
पूरे देश में मेरा परचम लहराया,
इसलिए मैं हिन्दी का एहसानमंद हूँ...
मैं यूनियन बैंक हूँ ....मैं यूनियन बैंक हूँ...

उपासना सिरसैया
क्षे.का., भोपाल

डॉ. विजयकुमार पाण्डेय
क्षे.का., पटना

संजीवकुमार शास्त्री
क्षे.का., लुधियाना

पूर्वोत्तर, एक नया भारत

पूर्वोत्तर भारत से आशय हमारे पूर्वी क्षेत्र से है. आज़ादी से पूर्व यह क्षेत्र मुख्य रूप से असम एवं बंगाल क्षेत्र में विभाजित था. विभाजन के पश्चात तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान (वर्तमान बांग्लादेश) के उत्तर पूर्वी क्षेत्र में असम एवं कुछ अन्य क्षेत्र से अलग होकर धीरे-धीरे सात राज्यों का गठन हुआ. यह मूलतः आठ राज्यों से मिलकर बना है, जिनमें अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, नागालैंड, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम एवं सिक्किम शामिल है. सिक्किम मूल रूप से भारत का हिस्सा नहीं था, लेकिन वर्ष 1975 में सिक्किम की इच्छानुसार इसे भारत में शामिल कर लिया गया. सिक्किम के अतिरिक्त बाकी अन्य सात राज्यों को 'सात बहनों' के नाम से भी जाना जाता है. ये राज्य अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर बांग्लादेश, भूटान, चीन, म्यांमार तथा तिब्बत देशों से जुड़े हुए हैं. यहाँ के मुख्य शहर गुवाहाटी, अगरतला, शिलांग, आइज़ोल तथा इम्फ़ाल हैं. मुख्य रूप से यहाँ असमी, बंगाली, बोड़ो तथा मणिपुरी भाषा बोली जाती है. यहाँ की जलवायु मुख्यतः ऊष्णकटिबंधीय है. यहाँ वर्षा अधिक होती है, ग्रीष्म ऋतु गर्म तथा उमस भरी होती है तथा ठंड कम पड़ती है. यहाँ के प्रमुख समुदाय असमिया, मिसिंग, बोड़ो, दिमासा, गारो, नेपाली, कार्बी, ख़ासी, कुकी, मणिपुरी, मिज़ो, नागा, रभा, राजबोंगशी, तिवा, त्रिपुरी तथा बंगाली हैं.

पूर्वोत्तर भारत सांस्कृतिक क्षेत्र में बहुत सम्पन्न है. यहाँ की सांस्कृतिक विलक्षणता देश की मुख्य धारा से पृथक, अनूठी तथा वृहद है और वर्षों से अक्षुण्ण हैं. प्रकृति ने यहाँ बेहद समृद्ध रंग बिखेरा हुआ है. अकेले इस क्षेत्र में 51 प्रकार के वन और असंख्य प्रकार की पादप प्रजातियाँ हैं. नदियों, पहाड़ों, झरनों से भरा यह प्रदेश प्रागैतिहासिक काल से लेकर आज तक की नवीनतम संस्कृतियों को अपने में समेटे हुए है.

पूर्वोत्तर में लगभग 400 समुदायों के लोग रहते हैं. इस क्षेत्र में लगभग 220 भाषाएँ बोली जाती हैं. संस्कृति, भाषा, परंपरा, रहन-सहन, पर्व-त्यौहार आदि की दृष्टि से यह क्षेत्र इतना विविधतापूर्ण है कि इसे भारत की सांस्कृतिक प्रयोगशाला कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा.

सर्वप्रथम चलते हैं, असम की ओर. असम की मुख्य भाषा असमिया है. इसके अतिरिक्त यहाँ हिन्दी तथा बांग्ला भाषा भी बोली जाती है. असमी लोग हिन्दू धर्म के सभी त्योहार मनाते हैं लेकिन यहाँ का सर्वाधिक लोकप्रिय पर्व बिहू है, जो कि वर्ष में तीन बार मनाया जाता है. यह मूलतः कृषि पर्व है. महिलाओं के लिए मेखला चादर तथा पुरुषों के लिए धोती-कुर्ता तथा गमछा असम के सांस्कृतिक पहनावे का प्रतीक है. असम अपने कला कौशल, संगीत, नृत्य आदि में भी बहुत समृद्ध है. रेशमी व सूती वस्त्र, धातुओं तथा बांस और बेंत की वस्तुओं के निर्माण में असम अत्यंत कुशल है. चित्रकला तो यहाँ की बहुत पुरानी परम्परा है.

त्रिपुरा की जनजाति और गैर-जनजाति लोग तथा उनकी लोक संस्कृति राज्य की रीढ़ है. इसकी झलक यहाँ के गैर-जनजातीय लोगों के गीत-संगीत तथा नृत्य में परिलक्षित होती है. यहाँ होज-गिरी नृत्य, मनासा मंगल या कीर्तन आदि प्रसिद्ध नृत्य संगीत हैं. यहाँ की मुख्य भाषा बंगाली कोकबोरोक है तथा मुख्य त्योहार दुर्गापूजा है. इसके अलावा यहाँ खर्ची पूजा, दिवाली, ढोल जात्रा, अशोकाष्टमी, बुद्ध जयंती, ईद, क्रिसमस भी मनाएँ जाते हैं. त्रिपुरा का जिक्र रामायण, महाभारत तथा सम्राट अशोक के अभिलेख में भी मिलता है. उनाकोटी में चट्टानों पर उत्कीर्ण असंख्य मूर्तियाँ ! यहाँ की अत्यंत रोचक बात यह है कि भगवान शिव की कम से कम एक करोड़ मूर्तियाँ यहां हैं. ये मूर्तियाँ कैसे बनी, किसने बनायी, यह एक पहेली है.

अरुणाचल प्रदेश की जनजातियों का एक बड़ा वर्ग बौद्ध धर्म में आस्था रखता है. इस इलाके में भाषा, संस्कृति तथा नस्लों की जितनी विविधता है, उतनी पूरे एशिया में अन्यत्र कहीं नहीं है. यहाँ के अधिकांश निवासी तिब्बत (बर्मा) मूल के हैं और उनकी भाषा भी उसी मूल की है. भगवान बुद्ध का जन्मदिन तथा पुण्यतिथि ये लोग उल्लासपूर्वक मनाते हैं. लेकिन यहाँ की मुख्य भाषा हिन्दी तथा असमिया है. यहाँ करीब 50 के ऊपर भाषाएँ प्रचलन में हैं. हर जनजाति की अपनी अलग शैली है. नृत्य सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग है. लोसर, मेपिन तथा सोलुंग यहाँ के प्रमुख जनजातीय पर्व हैं. अधिकांश त्योहारों पर पशुओं की बलि चढ़ाने की यहाँ प्रथा है. यह प्रदेश पहली बार सर्वाधिक चर्चा में तब आया, जब 1962 में चीन ने हमला किया. उस समय यह इलाका नेफ़ा के नाम से जाना जाता था. भारत सरकार ने 1955 में इसका गठन किया था.

नागालैंड में जनजातीय संगठन में कोन्याक के निरंकुश अंग (सरदार) और सेमा व चांग के अनुवांशिक मुखिया से लेकर अंगामी, आओ, ल्होरा तथा रेंगमा की लोकतांत्रिक संरचनाओं जैसी विभिन्नता पाई जाती है. मोरुंग (सामुदायिक भवन) गाँव का प्रमुख

संस्थान होता है. जहां खोपड़ियाँ तथा अन्य युद्ध के विजय चिन्ह टांगे जाते थे. इनके स्तम्भों पर अब भी बाघ, धनेश मानव तथा अन्य आकृतियों की नक्काशी की जाती है. नागा समाज में महिलाओं को अपेक्षाकृत उच्च स्थान प्राप्त है.

नागा जीवन की एक केन्द्रीय विशेषता पुण्य का भोज है, जिसमें कई रस्मों के बाद मिथुन (गयाल) की बलि दी जाती है. राज्य के कुछ महत्वपूर्ण त्योहार हैं, सेकरेनयी, मोआत्सु, तोक्कू एमोंगा तथा तुलनी.

मिजोरम की संस्कृति का मूल तत्व हैं नृत्य तथा संगीत! यहाँ के त्योहारों में ईसाई धर्म के पर्व और स्थानीय कृषि त्योहार जैसे चपचारकूट, पाल कूट और मिमकूट हैं. मिज़ो तथा अँग्रेजी यहाँ की मुख्य भाषा है. मिज़ो भाषा की कोई लिपि न होने के कारण इनके पूर्वजों का कोई लिखित इतिहास नहीं मिलता. यहाँ साल भर कोई न कोई त्योहार मनाया जाता रहता है. मिज़ो जीवन शैली एक विशेष धर्म है जिसमे करुणा, दया, निस्वार्थ सेवा, उदारता तथा अपने पूरे समाज के लिए समभाव का व्यवहार है. मिज़ो दूसरों के हित में सामाजिक बलिदान को सर्वोत्तम सामाजिक मूल्य मानते हैं. यहाँ लैंगिक भेदभाव नहीं है. पूरा गाँव एक बड़े परिवार की तरह व्यवहार करता है. गीत, संगीत, नृत्य में इनकी काफी रुचि है. यहाँ के प्रमुख नृत्य शुमार चेराव, चोंगलाईजोन और खुलाललाम हैं. यह देश का अकेला राज्य है, जहां कोई बेघर नहीं है. यहाँ की साक्षरता दर केरल के बाद सबसे ऊपर है.

मेघालय राज्य की मुख्य जनजातियां ख़ासी, गारो तथा जयंतिया है. प्रत्येक जनजाति की अपनी संस्कृति, अपनी परम्पराएँ पहनावा तथा भाषाएँ हैं. भैंस के सींगों, बांसुरी और मृदंगों से निकली स्वर लहरियों के साथ नृत्य और मदिरापन यहां के सामाजिक तथा धार्मिक अनुष्ठानों का अभिन्न अंग है. यहाँ का प्रमुख त्योहार पबालंग–नोंगक्रेम हैं जो पाँच दिनों तक मनाया जाता है. यहाँ की अधिकांश जनजातियाँ मातृसत्तात्मक हैं. यहाँ परिवार की छोटी बेटी संपत्ति की उत्तराधिकारिणी होती है और परिवार के बड़े, बूढ़े तथा बच्चों के पालन की ज़िम्मेदारी उसकी ही होती है.

सिक्किम राज्य के नागरिक भारत के सभी प्रमुख हिन्दू त्योहार मनाते है. बौद्ध धर्म के ल्होसार, लुगोंस, सागा, दावा, ल्हाबाब, ड्यूचेन, दुपका टेशी और भूमचू त्योहार यहाँ मनाए जाते हैं. इस राज्य में मुख्य रूप से भोटिया, लेपचा और नेपाली समुदायों के लोग हैं. पारंपरिक कथाओं के अनुसार बौद्ध सन्त गुरु रिपोंछे 8वीं शताब्दी में यहाँ पहुँचे. उस समय यहाँ कोई राजा नहीं था. उन्होंने यहां बौद्ध धर्म की दीक्षा दी. सिक्किम के इतिहास का ज्ञात राजवंश 1642 में स्थापित हुआ. यह गोवा के बाद सबसे छोटा राज्य है, आबादी में भी यह अन्य राज्यों से पीछे है. पारंपरिक नृत्य गुंपा यहाँ का सर्वाधिक लोकप्रिय नृत्य है.

अंततः बात करते हैं, मणिपुर राज्य की ! इस राज्य ने शास्त्रीय नृत्य की एक शैली 'मणिपुरी' को जन्म दिया है. नृत्य नाटिकाएँ यहाँ के धार्मिक जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है. रास, संकीर्तन नृत्य और थाँग–ता (मृदंग वादन) भी इनके सांस्कृतिक जीवन के महत्वपूर्ण अंग है. मणिपुरी अच्छे योद्धा होते है, ये कुश्ती, तलवारबाजी तथा युद्ध कलाओं का अभ्यास करते हैं. ये लोग पोलो भी खेलते हैं. इस राज्य की जनसंख्या का करीब 59% घाटी में तथा 41% पहाड़ी क्षेत्रों में है. पहाड़ी इलाकों में नागा, कुकी, पाइतो का कब्जा है, तो मैदान में मेइति का! इस प्रदेश की मुख्य भाषा मेइति लान है. इसी भाषा को मणिपुरी भी नाम दिया गया है. यह समृद्ध संस्कृति वाला राज्य है. यहाँ की हिन्दू जनसंख्या, वैष्णव धर्म से सर्वाधिक प्रभावित है.

पूर्वोत्तर के प्रत्येक राज्य में सांस्कृतिक विविधता है. अपने जीवन में आज भी पश्चिम का परहेज रखते हुए भारत का यह हिस्सा अपने मूल सांस्कृतिक इतिहास को आज भी समृद्ध बनाए हुए है जो कि सम्पूर्ण भारत के लिए गौरव एवं हर्ष का विषय है. इस क्षेत्र में ऊर्जा, सड़क, रेल, नदी मार्गों एवं हवाई अड्डों का उचित विकास नहीं हुआ है. बड़ी संख्या में नदियों एवं पहाड़ी क्षेत्र के कारण संरचना निर्माण में अधिक समय लगता है बल्कि अधिक खर्चीला भी है. इस क्षेत्र के किसानों को उपयुक्त बाजार उपलब्ध नहीं हो पाने के कारण यहाँ कृषक गतिविधियाँ भी सीमित रूप से ही विकसित हो सकी हैं. यहाँ की भाषा, बोलियाँ तथा सांस्कृतिक विश्वास अलग हैं. तथा यहां के समुदाय अपनी संस्कृति के प्रति तीव्र लगाव रखते हैं, जिससे भी विभिन्न प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं.

इनके पश्चिम क्षेत्र में पाकिस्तान की उपस्थिति भी कई बार भारतीय हितों में बाधा बनती है. यह क्षेत्र स्वतंत्रता प्राप्ति के समय से ही उग्रवाद एवं अलगाववाद से ग्रसित रहा है. विभिन्न सरकारी प्रयासों के चलते इस क्षेत्र में शांति स्थापित हो सकी है. मणिपुर के कुछ क्षेत्र अब भी उग्रवादी गतिविधियों से ग्रस्त हैं. पूर्वोत्तर में कानून व्यवस्था सुधारने के पश्चात इस क्षेत्र में अवसंरचनात्मक सुधार पर बल दिया जा रहा है. अवसंरचनात्मक निर्माण के बाद यह क्षेत्र भी विकास की दौड़ में शामिल हो सकेगा. पेट्रोलियम एवं खनिज संसाधनों की उपलब्धता के साथ–साथ इस क्षेत्र का पर्यावरण, पर्यटन के लिए अनुकूल माहौल उपलब्ध करता है.

यहां नियोजन के माध्यम से लोगों को सशक्त करना, शासन और विकास में लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करना आवश्यक है.

पूर्वोत्तर क्षेत्र में मौजूद संसाधनों पर आधारित विकास को बढ़ावा देना चाहिए. यह क्षेत्र नदी तंत्र से घिरा हुआ है तथा पहाड़ी होने के कारण जल विद्युत की अत्यधिक क्षमता रखता है. इसके अतिरिक्त पर्यटन, कृषि से जुड़े प्रसंस्करण उद्योग, कीटपालन तथा इस क्षेत्र में उपलब्ध संसाधनों पर आधारित अवसंरचना में निवेश आदि पर भी बल देना आवश्यक है.

उपर्युक्त कार्यों के लिए निवेश की पूर्ति सरकारी बजट के माध्यम से तथा निजी निवेश को आकर्षित करके की जा सकती है. विकास को धीरे–धीरे आगे बढ़ाने पर एक दिन पूर्वोतर भी अर्थव्यवस्था की मुख्य धारा के साथ बहने लगेगा और तब इस नए भारत की चमक और भी नयी और अनूठी होगी.

नीरजा अशोक कोष्टी
क्षे.का., जबलपुर

पूर्वोत्तर की नदियां

भारत का उत्तर-पूर्व भाग विभिन्न प्राकृतिक सम्पदाओं से भरा हुआ है. इन प्राकृतिक सम्पदाओं में एक प्रमुख सम्पदा वहाँ की नदियां है. वैसे तो उत्तर पूर्व भारत के पास देश के कुल भू-भाग का मात्र 5% है लेकिन प्रकृति ने पूरे जल संसाधन का 30% हिस्सा इस भाग को दिया है. उत्तर पूर्व भारत में प्रचुर मात्रा में नदियां है, जो इसे भारत का एक अद्वितीय और खूबसूरत भाग बनाती है. इन नदियों को हम मुख्यतः दो नदी तंत्रों में विभाजित कर सकते हैं, ब्रह्मपुत्र नदी तंत्र और बराक नदी तंत्र.

नदी तंत्र को हम जल संभार या द्रोणी भी कहते हैं. यह वह भौगोलिक क्षेत्र होता है, जहां वर्षा अथवा पिघलती बर्फ का पानी नदियों, नहरों और नालों से बहकर एक ही स्थान पर एकत्रित हो जाता है, उस स्थान से या तो एक ही बड़ी नदी में पानी संभार क्षेत्र से निकास करके आगे बह जाता है या फिर किसी सागर, महासागर, सरोवर या दलदली इलाकों में जाकर मिल जाता है.

इन दोनों नदी तंत्र के चलते उत्तर-पूर्व भारत में बाढ़ की समस्या रहती है लेकिन ये नदियाँ जिस-जिस क्षेत्र से होकर गुजरती है, वह हिस्सा कृषि के लिए बहुत ही उपयोगी और उपजाऊ होता है.

ब्रह्मपुत्र तंत्र

जैसा कि नाम से ही पता चल जाता है कि इस नदी तंत्र की प्रमुख नदी ब्रह्मपुत्र है. इसका उद्गम स्थल तिब्बत के मानसरोवर पर्वत स्थित भागीरथी ग्लेशियर है. चीन में इसको ह्वांगहो कहते है. यह नदी तिब्बत में हिमालय पर्वत श्रृंखला के समानांतर पश्चिम से पूर्व दिशा की ओर बहते हुए नामचा बरुवा जोकि अरुणाचल प्रदेश के उत्तर में तिब्बत में स्थित है, वहां से यू टर्न लेती है और पूर्व दिशा से दक्षिण दिशा की ओर बहते हुए भारत में प्रवेश करती है. मुख्यतः भारत के दो राज्य अरुणाचल प्रदेश और असम होते हुए, असम में धुबरी के नजदीक बांग्लादेश में प्रवेश करती है. फिर गंगा नदी के साथ मिलकर बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है. ब्रह्मपुत्र नदी की लंबाई लगभग 2900 कि.मी. है. जिसका लगभग 900 कि.मी. हिस्सा भारत में है. विश्व का सबसे बड़ा नदी द्वीप 'माजुली' ब्रह्मपुत्र नदी में ही स्थित है.

गुवाहाटी, डिब्रुगढ़, तेजपुर, धुबरी आदि कुछ प्रमुख शहर है, जो ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर बसे हैं.

ब्रह्मपुत्र की सहायक नदियां है : मानस, तीस्ता, सुबनसरी, जालढका, दिबांग, लोहित, धनश्री, कोलोग आदि.

दिबांग : इस नदी का उद्गम स्थल केया दर्रा जोकि भारत चीन सीमा के नजदीक अरुणाचल प्रदेश के दिबांग घाटी में आता है. इस नदी की कुल लंबाई 195 कि.मी. है. इस नदी पर दिबांग बहुउद्देशीय परियोजना जिसमें इसके पूरे होने पर 3000 मैगावाट की बिजली उत्पादन होगा. इससे पीने और सिंचाई के लिए पानी और सबसे अधिक इस नदी के बहाव क्षेत्र में बाढ़ की समस्या का निदान होगा. एमरा, ट्री, ईथुन, मथुन, सिसर आदि इसकी सहायक नदियां है.

लोहित : जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है, इस नदी के नाम का अर्थ है लोहे की तरह! इसका ऐसा नाम इसलिए पड़ा क्योंकि इस नदी के पानी की गति बहुत ही जोरदार और ऊर्जायुक्त है. इस नदी का उद्गम स्थल तिब्बत (चीन) की कंगरी गारपो श्रृंखला है. जहाँ यह जायू के नाम से जानी जाती है. यह नदी चीन से हिमालय पर्वत के दर्राओं से बहते हुए अरुणाचल प्रदेश में प्रवेश करती है, जहाँ यह मिशमी घाटी होते हुए असम के ब्रह्मपुत्र घाटी में आकर ब्रह्मपुत्र नदी में मिल जाती है. यह नदी ब्रह्मपुत्र नदी में मिलने से पहले लगभग 200 कि.मी. तक लोहित बेसिन में बहती है, जहाँ की मिट्टी का रंग लाल है जिसके कारण इस नदी के पानी का रंग खून की तरह लाल होता है. इस कारण इस नदी को खून की नदी भी कहा जाता है. यह नदी अरुणाचल प्रदेश की प्रमुख नदी है.

मानस : मानस का उद्गम स्थल अरुणाचल प्रदेश के कामेंग जिले की हिमालय पर्वत श्रृंखला है. यह अरुणाचल प्रदेश होते हुए भूटान में प्रवेश करती है. यह नदी भूटान की सबसे प्रमुख नदी है. भूटान की अर्थवयवस्था और आबादी का एक बड़ा हिस्सा इस नदी पर निर्भर करता है, इसलिए इस नदी को भूटान की जीवन रेखा भी माना जाता है.

तिस्ता : इस नदी का उद्गम स्थल पाउहुनरी है जोकि पूर्वी हिमालय पर्वत की श्रृंखला है. यह जगह सिक्किम राज्य में भारत-चीन सीमा के नजदीक है. यह सिक्किम की एक प्रमुख नदी है. यह सिक्किम होते हुए पश्चिम बंगाल में प्रवेश करती है. कुछ दूरी तक यह नदी सिक्किम और पश्चिम बंगाल राज्य की सीमा भी बनाती है और भारत में पश्चिम बंगाल होते हुए बांगलादेश के रंगपुर जिले के फुलचारी पर ब्रह्मपुत्र नदी में मिल जाती है. इस नदी के जल के बंटवारे को लेकर भारत और बांग्लादेश में विवाद है.

बराक नदी तंत्र

इस नदी तंत्र की प्रमुख नदी बराक है, जिसका उद्गम स्थल लियाई कुलेन, मणिपुर है. इस नदी की कुल लंबाई लगभग 900 कि.मी. है जिसका लगभग 524 कि.मी. हिस्सा भारत में है, जो मुख्यतः मणिपुर, नागालैंड, मिजोरम और असम में है. यह नदी लगभग 31 कि.मी. तक भारत बांग्लादेश की सीमा बनाती है. शेष 345 कि.मी. का हिस्सा बांग्लादेश में है. इसकी प्रमुख सहायक नदियां - सोनाई, जिरी, लोंगाई, मधुरा, तलवंग आदि. बराक नदी की धारा बांग्लादेश में आकर दो धाराओं में बंट जाती है जो फिर सुरमा नदी और कुशीयारा नदी के नाम से जानी जाती है.

ऊमीयम झील : यह झील मेघालय की राजधानी शिलोंग के नजदीक स्थित है. यह एक मानव निर्मित झील है, जिसका निर्माण सन 1960 ई. के आसपास ऊमीयम नदी को बाँधकर किया गया था. इस झील का सतही क्षेत्रफल लगभग 220 कि.मी. है.

लोकटाक झील : उत्तर पूर्व भारत की मीठे जल की यह सबसे बड़ी झील है. यह झील मणिपुर राज्य में स्थित है, मणिपुर की राजधानी इम्फ़ाल शहर इस झील के तट पर बसा है. इस झील का क्षेत्रफल लगभग 290 वर्ग कि.मी. है. इसकी सतह पर मिट्टी और वनस्पति से बने अनेक छोटे-बड़े द्वीप हैं जो तैरते रहते हैं, इसमें सबसे बड़ा तैरता द्वीप 'केयबुल लामजाओ' है जिसका क्षेत्रफल लगभग 40 वर्ग कि.मी. है, हिरण की विलुप्त होती हुई प्रजाति संगई हिरण सिर्फ इसी द्वीप पर है जोकि मणिपुर का राज्य पशु भी है, जिसके कारण भारत सरकार ने इस द्वीप को संरक्षित क्षेत्र घोषित कर दिया है, जो विश्व का एकमात्र तैरता हुआ राज्यस्तरीय उद्यान है. यह झील मणिपुर राज्य के लिए आर्थिक रूप से बहुत महत्व रखती है, इस झील के पानी से जल विद्युत उत्पादन, पीने का पानी, सिंचाई और इसमें से मीठे जल की विभिन्न मछलियां मिलती है.

पूर्वोत्तर भारत की ये नदियाँ भारत की उन्नति एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. हम उक्त संसाधनों हेतु प्रकृति के समक्ष नतमस्तक हैं.

अमित कुमार झा
क्षे.म.प्र.का., कोलकाता

वर्तमान में पूर्वोत्तर भारत का विकास

असम के डिब्रूगढ़ को अरुणाचल प्रदेश के पासीघाट से जोड़ने वाले देश की सबसे लंबी सड़क और रेल पुल का उद्घाटन पिछले वर्ष किया गया है. यह देश का पहला पूरी तरह से स्टील से निर्मित पुल है. यह पुल असम के डिब्रूगढ़ शहर के समीप ब्रह्मपुत्र नद पर बनाया गया है जो भारत का सबसे लंबा (सड़क-रेल पुल) तथा एशिया का दूसरा सबसे लंबा रेल-सड़क पुल है. इसकी लंबाई 4.94 किलोमीटर है. इस पुल में सबसे ऊपर तीन लेन वाली सड़क है, जबकि उसके ठीक नीचे दोहरी रेलवे लाइन है. यह पुल ब्रह्मपुत्र के जलस्तर से 32 मीटर की ऊँचाई पर है. बोगीबील सड़क-रेल पुल का निर्माण 2002 में शुरू हुआ था. इस पुल को स्वीडन और डेनमार्क को जोड़ने वाले पुल की तर्ज़ पर बनाया गया है. इस पुल की आधारशिला 1997 में तत्कालीन प्रधानमंत्री ने रखी थी. लेकिन इसका निर्माण अप्रैल 2002 में शुरू हो पाया. 1962 तक ब्रह्मपुत्र भारत की एकमात्र ऐसी नदी थी जिसकी पूरी लंबाई पर एक भी रेलवे या किसी तरह का पुल नहीं बना था. 2017 में प्रधानमंत्री ने ढोला सादिया यानी भूपेन हजारिका सेतु का उद्घाटन किया जो उत्तरी असम और पूर्वी अरुणाचल प्रदेश के बीच पहला स्थायी सड़क कनेक्शन है. यह लोहित नदी को पार करता है जो ब्रह्मपुत्र नद की एक मुख्य उपनदी है.

अब तक अरुणाचल के लिए रेल और सड़क परिवहन, असम के तीन पुलों के माध्यम से होता आ रहा है. जिसमें बोंगाई ज़िले में जोगिगोपा, गुवाहाटी के पास सराईघाट और शोणितपुर नागाँव के बीच कोलिया भोमोरा सेतु है.

इसके अलावा दूसरा नौका मार्ग था, जिसे सिर्फ दिन में ही चलाया जा सकता था. बारिश के मौसम में ब्रह्मपुत्र नद का बहाव तेज़ होने के कारण नाव का रास्ता भी बंद हो जाता था. बोगीबील पुल के बन जाने से रास्ता बंद होने की समस्या नहीं होगी क्योंकि यह पुल ब्रह्मपुत्र नद के जल स्तर से करीब 32 मीटर ऊँचा है.

भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम, नगालैंड, सिक्किम और त्रिपुरा राज्य आते हैं. इस समस्त क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल 2,62,179 वर्ग किलोमीटर है. भारत के कुछ राज्य जैसे राजस्थान, मध्य प्रदेश या महाराष्ट्र से तुलना करें तो क्षेत्रफल के आधार पर इनमें से प्रत्येक राज्य पूर्वोत्तर के इस संपूर्ण क्षेत्र के मुकाबले अधिक बड़ा है.

पूर्वोत्तर की सीमा पाँच देशों से मिलती है. ये देश हैं - बांग्लादेश, भूटान, चीन, नेपाल और म्यांमार. पूर्वोत्तर की केवल 30-35 प्रतिशत भूमि ही समतल है. दशकों से खराब बुनियादी ढाँचे और सीमित कनेक्टिविटी ने इन राज्यों के सामाजिक-आर्थिक विकास में बाधा के रूप में काम किया है. पूर्वोत्तर का क्षेत्र देश की राजधानी दिल्ली से लगभग 2000 कि.मी. दूरी पर स्थित है और ऐसा माना जाता है कि इंटरनेट और सोशल मीडिया के दौर में भी सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का लाभ वहाँ देरी से पहुँच पाता है.

भारत की 'अष्टलक्ष्मी' के रूप में पहचाने जाने वाले इन राज्यों को दक्षिण-पूर्व एशिया के प्रवेश द्वार के रूप में मान्यता दी गई है.

बोगीबील सड़क-रेल पुल न सिर्फ पूर्वोत्तर के लिये जीवन रेखा साबित होगा बल्कि देश की सुरक्षा को भी मज़बूती प्रदान करेगा. इसके तैयार होने में 17 साल का समय लगा है. इस पुल को सामरिक दृष्टि से बेहद अहम माना जा रहा है. अरुणाचल प्रदेश से सटे बॉर्डर पर चीन की चुनौती से निपटने में इससे बड़ी मदद मिलेगी.

इसके अलावा नागरिक आबादी के लिए भी यह पुल काफी उपयोगी साबित होगा. इससे पूर्वी असम से अरुणाचल प्रदेश के बीच सफर करने में लगने वाला समय घटकर सिर्फ 4 घंटे का रह जाएगा. दिल्ली से डिब्रूगढ़ की यात्रा में भी 3 से 4 घंटे की कमी आएगी.

उम्मीद जताई जा रही है कि बोगीबील पुल सीमावर्ती इलाकों में राष्ट्रीय सुरक्षा को मज़बूत करने के अलावा क्षेत्र में आर्थिक विकास के एक नए युग की शुरुआत करेगा. इससे चीन की सीमा पर तैनात सशस्त्र बलों के लिए काफी सहूलियत होगी.

यह पुल इतना मज़बूत है कि आपात काल में इससे सेना के बड़े टैंक भी गुज़र सकेंगे.

यह अरुणाचल और असम के बीच के सभी हिस्सों के लिये ऑल वेदर कनेक्टिविटी प्रदान करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा.

यह पुल असम के दो ज़िलों डिब्रूगढ़ और धेमाजी को जोड़ेगा जो पहले नौका मार्ग से ही जुड़े थे.

यह चीन से लगने वाली सीमा तक पहुँचने का समय 10 घंटे कम कर देगा.

केंद्र सरकार ने पिछले चार वर्षों में पूर्वोत्तर क्षेत्र में बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं की विस्तृत शृंखला पर विशेष ध्यान दिया है.

इस क्षेत्र में रेल, सड़क, वायु और अंतर्देशीय जलमार्ग कनेक्टिविटी में सुधार पर ज़ोर दिया गया है.

भारत सरकार की 'एक्ट ईस्ट नीति' **(Act East Policy)** पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को मज़बूत करने पर केंद्रित है और सड़क, रेल, वायु, टेलिकॉम, विद्युत और जलमार्ग से संबंधित विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से इस कनेक्टिविटी को बढ़ाने का कार्य किया जा रहा है.

भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में बुनियादी ढाँचे के विकास के लिये प्रमुख सरकारी पहलों को निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत समझा जा सकता है.

1.एयरपोर्ट

उत्तर-पूर्वी परिषद - (The North-Eastern Council-NEC) पूर्वोत्तर के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिये एक नोडल एजेंसी है. NEC के प्रमुख सदस्यों में इन आठ राज्यों के राज्यपाल और मुख्यमंत्री शामिल हैं. 12 ऑपरेशनल हवाई अड्डों में बुनियादी ढाँचे के उन्नयन के लिये वित्तपोषण कर रहा है. सिक्किम में हाल ही में पाक्योंग एयरपोर्ट का उद्घाटन प्रधानमंत्री जी द्वारा किया गया. गंगटोक से लगभग 30 किलोमीटर की दूरी पर स्थित (200 एकड़ से अधिक के क्षेत्रफल में निर्मित) यह हवाई अड्डा समुद्र तल से 4,500 फीट की ऊँचाई पर एक पहाड़ी के ऊपर स्थित है. यह देश के पाँच सबसे ऊँचे हवाई अड्डों में से एक है. इसके निर्माण में 650 करोड़ रुपए की लागत आयी है. तेजू हवाई अड्डे का निर्माण कार्य पूरा होने वाला है और इसे चालू वित्त वर्ष में संचालित किये जाने की संभावना है. इससे लोअर दिबांग वैली, अंजाव, नामसाई और दिबांग वैली जैसे पड़ोसी ज़िलों से कनेक्टिविटी में सुधार होने की उम्मीद है. उम्रोई (शिलाँग) हवाई अड्डे में NEC द्वारा रनवे विस्तार कार्यों को शामिल किया जाएगा, ताकि बड़े हवाई जहाज़ों को ज़मीन पर उतारा जा सके. इसी तरह गुवाहाटी में LGBI एयरपोर्ट पर विमानशाला (हरपसरी) आवंटित करने के काम किया जा रहा है.

2. सड़क परियोजनाएँ

NEC ने 10,500 किलोमीटर लंबी सड़कों के निर्माण पर अपना ध्यान केंद्रित किया है, जिसमें अंतर-राज्य और आर्थिक महत्त्व की सड़कें शामिल होंगी. नॉर्थ ईस्ट रोड सेक्टर डेवलपमेंट स्कीम (North-East Road Sector Development Scheme) नामक एक नई योजना शुरू की गई है जो सड़कों और पुलों के लिए रणनीतिक परियोजनाओं को संचालित करेगी.

इन परियोजनाओं में दोइमुख-हरमुती, तुरा -मनकाचर और वोखा-मेरापानी-गोलाघाट शामिल हैं, जिसकी अनुमानित लागत 213.97 करोड़ रुपए है. इसका निर्माण राष्ट्रीय राजमार्ग और बुनियादी ढाँचा विकास निगम (NHIDCL) के नेतृत्व में होगा. NHIDCL द्वारा इस तरह की कुल 14 परियोजनाएँ शुरू की जाएगी.

देश का एक बड़ा राज्य होने के बावजूद अरुणाचल प्रदेश में सड़क घनत्व सबसे कम है. केंद्रीय सड़क और परिवहन मंत्रालय, ट्रांस अरुणाचल राजमार्ग परियोजना (Trans Arunachal Highway Project) को तेज़ करने की योजना बना रहा है.

मंत्रालय सड़क और राजमार्गों के लिये विशेष त्वरित सड़क विकास कार्यक्रम (Rapid Road Development Programme) चलाएगा, जिससे 2,319 किलोमीटर की दूरी तय की जा सकेगी.

अरुणाचल फ्रंटियर हाईवे और ईस्ट वेस्ट कॉरिडोर (Arunachal Frontier Highway and East West Corridor) के लिए निर्माण योजना भी प्रस्तावित की गई है.

3. रेल परियोजनाएँ

पूर्वोत्तर राज्यों के लिए 20 प्रमुख रेलवे परियोजनाओं के माध्यम से एक रेलवे लिंक प्रदान करने की योजना पर कार्य किया जा रहा है, जिसमें 13 नई लाइनें, 2 गेज रूपांतरण और लगभग 2,624 किलोमीटर की लंबाई के साथ पाँच दोहरीकरण शामिल हैं.

बैराबी और सरांग को जोड़ने वाली एक ब्रॉड गेज रेलवे लाइन का निर्माण प्रगति पर है जो 2020 तक पूर्वोत्तर राज्यों की राजधानियों को जोड़ेगी. पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे क्षेत्र के एक हिस्से में 51 किलोमीटर लंबी रेल लिंक अगले साल तक चालू होने की उम्मीद है.

परियोजना में नौ किलोमीटर के साथ 23 सुरंगों का निर्माण भी होगा, साथ ही 36 प्रमुख पुल और 147 छोटे पुल भी होंगे.

रेलवे लाइन में तीन स्टेशन शामिल होंगे-होर्टोकी, कवनपुई और मुलखंग, जो आधुनिक सुविधाओं जैसे एस्केलेटर, फुट ओवर-ब्रिज आदि से सुसज्जित होंगे. ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे एक एक्सप्रेस हाईवे परियोजना, जिसकी लागत 40,000 करोड़ रुपए है और जो 1,300 किलोमीटर तक फैली हुई है, से असम में कनेक्टिविटी संबंधित मुद्दों को हल होने की उम्मीद है.

बेहतर सड़क, रेल और हवाई संपर्क से पूर्वोत्तर भारत को प्रगति की ओर एक बड़ी छलांग लगाने में मदद मिलेगी.

4. संचार अवसंरचना

प्रधानमंत्री ने पूर्वोत्तर में कनेक्टिविटी, कम्युनिकेशन तथा कॉमर्स (three-C) पर अधिक बल देने की बात कही है.

डाकघरों का नेटवर्क, टेलीफोन एक्सचेंज और टेलीफोन कनेक्शन संचार के लिए प्रमुख बुनियादी ढाँचे हैं. टेलीफोन आधारित संचार में काफी तेज़ गति से प्रसार हो रहा है. सरकार ने पूर्वोत्तर भारत के आठ राज्यों में दूरसंचार कनेक्टिविटी में सुधार के लिए 15,000 करोड़ रुपए के निवेश की घोषणा की है. भारत का सीमांत राज्य, अरुणाचल प्रदेश जो चीन के साथ सीमा साझा करता है, में 2817 से अधिक मोबाइल टावर स्थापित करने की योजना है. 'भारत नेट रणनीति' के तहत पूर्वोत्तर क्षेत्र के 4240 ग्राम पंचायतों को दिसंबर 2018 तक सैटेलाइट कनेक्टिविटी द्वारा ब्रॉडबैंड से जोड़ने का लक्ष्य रखा गया था.

5. पूर्वोत्तर में औद्योगिक विकास

पूर्वोत्तर क्षेत्र के आठ राज्यों में प्राकृतिक संसाधन, औद्योगीकरण के स्तर तथा ढाँचागत सुविधाओं के संबंध में काफी भिन्नता है.

चार रिफाइनरीज और दो पेट्रोकेमिकल परिसरों को छोड़कर इस क्षेत्र में बड़े उद्योग नदारद हैं.

असम में औद्योगिक क्षेत्र मुख्य रूप से चाय, पेट्रोलियम (कच्चे तेल), प्राकृतिक गैस आदि विकसित हुआ है तथा पूर्वोत्तर के अन्य क्षेत्रों में खनन, लकड़ी चीरने का कारखाना तथा इस्पात निर्माण इकाइयाँ देखने को मिलती है. इस क्षेत्र की पूरी क्षमता का दोहन होना बाकी है. औद्योगिक रूप से NER (North Eastern Region) देश में सबसे पिछड़ा क्षेत्र बना हुआ है और असम को छोड़कर इस क्षेत्र के राज्यों में औद्योगिक विकास बहुत कम है. इस क्षेत्र में भी औद्योगिक विकास की कमी में योगदान करने वाले कई कारक हैं, जैसे खराब बुनियादी ढाँचा, अपर्याप्त बिजली की आपूर्ति, हिंसा तथा जबरन वसूली, उत्पादन की उच्च लागत, स्थानीय लोगों में उद्यमशीलता का अभाव, सार्वजनिक क्षेत्र के निवेश का निम्न स्तर आदि. हाल के वर्षों में भारत सरकार की 'पूर्व की ओर देखो' नीति ने पूर्वोत्तर को और अधिक महत्त्वपूर्ण और रणनीतिक बना दिया है. इस क्षेत्र को चुनौतियों का सामना करने और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में विशाल बाज़ार के माध्यम से खुले अवसरों को भुनाने के लिये पर्याप्त सुविधाएँ प्रदान करनी होंगी.

6. पूर्वोत्तर में व्यापार

स्वतंत्रता के बाद की अवधि में व्यापार में काफी समस्याएँ आईं क्योंकि संप्रभु राष्ट्रों की सीमाओं को फिर से परिभाषित किया गया.

यही कारण है कि देश के अन्य राज्यों की अपेक्षा अधिक पिछड़े पूर्वोत्तर क्षेत्र में विकास की राह को सुनिश्चित करने के लिए और अधिक प्रयास किये जाने की आवश्यकता है. एक्ट ईस्ट पालिसी पूर्वोत्तर क्षेत्र की स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दे सकती है बशर्ते हम सीमा पार एक मज़बूत भूमि-आधारित व्यापार विकसित करें. उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में व्यापार को बढ़ावा देने के लिए बुनियादी ढाँचे में निवेश और व्यापार सुविधा उपायों पर ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है. मल्टी -मॉडल कनेक्टिविटी परियोजनाओं का एक ब्लू प्रिंट पहले ही तैयार किया जा चुका है और इनमें से कई परियोजनाएँ जैसे-कलादान मल्टीमॉडल हाईवे निष्पादन के अंतिम चरण में है.

हाल ही में चटगाँव के पास अगरतला से अखौरा तक ब्रॉड गेज कनेक्टिविटी के निर्माण के लिए कार्य शुरू किया गया है. यह अगरतला और कोलकाता के बीच की दूरी को काफी हद तक कम कर देगा और चटगाँव बंदरगाह तक एक कुशल पहुँच प्रदान करेगा.

भारतमाला परियोजना के तहत अंतर-क्षेत्रीय कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिये उत्तर-पूर्वी आर्थिक गलियारे को प्रस्तावित किया गया है. ब्रह्मपुत्र पर सात जलमार्ग टर्मिनलों के माध्यम से मल्टी-मॉडल फ्रेइट मूवमेंट प्रस्तावित है. केंद्र ने पहले ही लॉजिस्टिक को बुनियादी ढाँचे के निवेश के रूप में अधिसूचित किया है. लैंड पोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया (Land Port Authority of India) ने सभी भूमि सीमा शुल्क स्टेशनों को अपने कब्जे में लेने और उन्हें वेयरहाउसिंग सुविधाओं के साथ एकीकृत चेक-पोस्ट के साथ अपग्रेड करने की इच्छा जताई है. विदेश व्यापार क्षमताओं के निर्माण के लिए एक विशेष पहुँच और क्षमता निर्माण कार्यक्रम की आवश्यकता होगी.

व्यापारिक प्रतिनिधि मंडल और क्रेता-विक्रेता के बीच नियमित बैठकें, उत्तर-पूर्व के पड़ोसी देशों, म्यांमार और बांग्लादेश के व्यवसायियों के बीच वार्ताएँ भी व्यापार को बढ़ावा देने में सहायक साबित होंगी.

पिछले कुछ दशकों में पूर्वोत्तर के संपूर्ण क्षेत्र में सड़क, रेल, हवाई संपर्क और दूरसंचार के क्षेत्र में उल्लेखनीय सुधार हुआ है. पिछले दो दशकों में यहाँ कई नए विश्वविद्यालय, मेडिकल कॉलेज और इंजीनियरिंग कॉलेज स्थापित हुए हैं. यहाँ एक आईआईटी और आईआईएम भी है. पूर्वोत्तर में 197 सड़क निर्माण की तथा रेलवे की 20 परियोजनाएँ निर्माणाधीन हैं, जिनके ज़रिये पूर्वोत्तर के सभी राज्यों की राजधानियों को रेल मार्ग से जोड़ने की योजना है. अभी तक तीन राज्यों की राजधानियाँ ही रेल लाइन से जुड़ पाई हैं. बिजली की दो बड़ी परियोजनाओं पर भी काम चल रहा है. साथ ही एक व्यापक दूरसंचार योजना भी लागू की गई है. राष्ट्र की मुख्यधारा से कटे रहने वाले पूर्वोत्तर के लोगों का शेष भारत से संपर्क और लगाव निश्चित रूप से बढ़ा है. ये योजनाएँ अगर तय समय पर अपने मुकाम तक पहुँच पाईं तो इससे पूर्वोत्तर की तस्वीर तो बदलेगी ही, भारत की एकता-अखंडता से जुड़ी एक बड़ी चिंता भी समाप्त हो जाएगी.

विक्रांत कुमार
क्षे.का., गुवाहाटी

जतिंगा - एक रोचक यात्रा

दोस्तों से मैंने बहुत सुना था कि असम में एक जगह ऐसी है जहां पर पंछी खुद आकर आत्महत्या कर लेते है. मुझे यह जानने की बहुत इच्छा थी कि आखिर उस जगह पर ऐसा क्या है कि वहां पर पंछी स्वयं आते है और फिर आत्महत्या कर लेते हैं या कहें कि मर जाते हैं. उत्सुकता वश मैंने उस जगह के बारे में और वहाँ जाने के रास्ते के बारे में पता किया. पूरा पता कर मैंने वहाँ एक दिन जाने का प्लान बना लिया. मैं और मेरे दोस्त बाइक लेकर सुबह जतिंगा जाने के लिए निकल पड़े. जतिंगा असम के उत्तरी कछार पहाड़ी में स्थित एक सुंदर घाटी है. जतिंगा क्षेत्र, विशेष रूप से नारंगी के बागों के लिए प्रसिद्ध है. असम में जहां मेरी पोस्टिंग है, वहाँ से यह स्थान लगभग 167 किलोमीटर दूरी पर है. जहां पर असम में मेरी पोस्टिंग है वहाँ से निकलते ही 8 किलोमीटर के बाद बाहरी क्षेत्र अर्थात वन क्षेत्र शुरू हो जाता है और वहाँ चारों तरफ का नजारा देखने लायक होता है. यहाँ पूरी पहाडी के पीछे से रास्ता बना हुआ है. प्राकृतिक नजारे का आनंद लेते हुए मैं लामडिंग नामक स्थान पर पहुंचता हूं जो एक पहाड़ की ऊंची चोटी पर स्थित है. यहाँ का नजारा देखते ही बनता है. पक्का रास्ता समाप्त होते ही कच्चा रास्ता शुरू हो जाता है. वहाँ कच्चे रास्ते और घुमावदार पगडंडियों को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि हम भारत या पृथ्वी पर नहीं है बल्कि जन्नत में पहुंच गए हैं. हाफ लॉन्ग से 10 किलोमीटर पहले जतिंगा पड़ता है. जतिंगा पहुँचने पर हम लोगों ने उस जगह के बारे में पूछ ताछ की. वहाँ दो-तीन लोगों से पूछने के बाद पता चला कि हमें इसी रास्ते से आगे जाना है. कच्चे रास्ते से होते हुए हम लोग उस तालाब के पास पहुँच गए जहां प्रायः यह घटना होती है. यहाँ के लोगों की जो जनजातीय भाषा है वह असम की असमिया भाषा से मिलती-जुलती है. मोबाइल ऐप की मदद से हम लोग तालाब के पास जब पहुंचे तो ऐसा प्रतीत हुआ जैसे जन्नत के आसपास पहुंच चुके हैं. वहां का दृश्य देख मन भर गया लेकिन सबके मन में यह जिज्ञासा थी कि यहाँ ऐसा क्या है कि पंछियों के यहाँ आते ही उनकी मृत्यु हो जाती हैं. हम लोगों ने रात में उसी जगह के आसपास रुकने का निर्णय लिया. रात में उस जगह रुकने के बाद सुबह 4:00 बजे के आस-पास हम लोग उसी तालाब के पास गए, जहां पर यह घटना होती है. यह देखकर हमें आश्चर्य हुआ कि जिस जगह पर रात को एक भी पंछी मरा नहीं था, वहाँ सुबह-सुबह ढ़ेर सारे पंछी मरकर गिरे हुए हैं. आसपास के लोगों ने बताया कि यह घटना हर साल की है. वर्षों से यहाँ पंछी आकर मर जाते हैं. वैज्ञानिकों द्वारा इसके कारणों की खोज की गई लेकिन इसका वास्तविक कारण अभी तक पता नहीं चला. वहाँ का दृश्य देखकर हमें आश्चर्य हुआ कि दुनिया में ऐसी भी कोई घटना हैं, जिसका स्पष्ट कारण अभी तक किसी को पता नहीं है. यहाँ पर सबसे आश्चर्य की बात यह है कि यहाँ कोई अकेला पंछी आत्महत्या नहीं करता बल्कि यहाँ पंछी सामूहिक रूप से आत्महत्या कर लेते है.

ध्यान देनेवाली बात यह है कि इस आत्महत्या में किसी एक प्रजाति का पंछी शामिल नहीं होता, बल्कि यहाँ उपलब्ध लगभग सभी प्रकार के प्रवासी पक्षियों द्वारा ऐसा किया जाता है. फिर से हम लोग होटल में जाकर आस पास घूमने के लिए निकल गए और आसपास के लोगों से इस घटना के बारे में पूछने की कोशिश की. वहां के लोगों ने बताया कि इस घटना को देखने एवं इसके कारणों की खोज करने के लिए यहाँ बहुत दूर से लोग आते है, फिर भी यहाँ इस घटना का स्पष्ट कारण अभी तक पता नहीं चल पाया है. जतिंगा के पक्षी आत्महत्या को लेकर अब तक कई खोज हुई हैं और इसके पीछे कई तर्क भी दिए गए हैं, परंतु सच कहा जाए तो अब तक कोई ऐसा तर्क नहीं आया है, जिसे सुनकर सब पूरी तरह से सहमत और संतुष्ट हो जाएँ. कई पक्षी विज्ञानियों का मानना है कि इस दुर्लभ घटना की वजह चुंबकीय शक्ति है. जब नम और कोहरे भरे मौसम में हवाएँ तेजी से बहने लगती है तो रात के अंधेरे में पक्षी रोशनी के आस-पास उड़ने लगते हैं. यह ऐसा समय होता है जब वे मदहोशी में होते हैं और तेजी से उड़ने के दौरान वे आसपास के पेड़ों और दीवारों से टकराकर मर जाते हैं. स्थानीय निवासी इसे भूत प्रेत की बाधा से भी जोड़कर देखते हैं. लेकिन कुछ ठोस कारण अब तक लोगों को पता नहीं हैं.

हम लोगों ने उसी दिन वहां से वापस लौटने का निर्णय लिया और अपनी बाइक से अपने घर की ओर वापस आ गए. आज तक हमारे मन में उस घटना के बारे एक ही सवाल बना रहता है कि आखिर पंछियों के लिए यहाँ आकर मरने की वजह क्या है?

विवेक कुमार
लस्कर भालु कुमारी शाखा

पूर्वोत्तर भारत का खानपान

पूर्वोत्तर भारत खाद्य संस्कृति में बहुत समृद्ध है लेकिन यह देश के बाकी हिस्सों से अपने स्वाद और जायके में बहुत अलग है. प्रत्येक राज्य में लगभग समान खाना खाने का व्यवहार होता है. आम तौर पर इस क्षेत्र के निवासियों में गैर-शाकाहारी और मसालों का शौक है. बांस के शूट और बत्तख से तैयार व्यंजन इस क्षेत्र में प्रचलित हैं. पूर्वोत्तर भारत के कुछ हिस्सों में जानवरों को अच्छा आहार माना जाता है. नागालैंड में अधिकांश स्थानीय जनजातियां कुत्तों का शिकार करते हैं एवं उनका मांस खाते हैं. त्रिपुरा और असम में मछली पसंदीदा डिश हैं जबकि असम में विभिन्न प्रकार के चावलों की खपत होती है. असम लक्सास्टॉक, कोत पिठा, बांस शूट फ्राई, मछली फ्राइड चावल, ग्रील्ड चिंराट जैसे व्यंजन, पूर्वोत्तर भारत के सबसे प्रसिद्ध व्यंजन हैं. मोमो पूर्वोत्तर के राज्यों असम, मेघालय, नागालैंड, मणिपुर इत्यादि में काफी लोकप्रिय है. पूर्वोत्तर भारत में स्ट्रीट फूड खाद्य संस्कृति है जो अपनी विरासत के रूप में जीवंत है. पूर्वोत्तर भारत में घूमते हुए आप किसी भी गली नुक्कड़ से सस्ते दामों में स्ट्रीट फूड को चख सकते हैं जो कि खाने में बेहद लजीज होता है. नार्थ ईस्ट स्ट्रीट फूड सिर्फ मोमो और नूडल्स तक ही सीमित नहीं है बल्कि आप यहां विविधतापूर्ण व्यंजनों का स्वाद ले सकते हैं. पूर्वोत्तर भारत के विभिन्न राज्यों के प्रमुख व्यंजनों के बारे में जानकारी निम्नलिखित है-

असम का खानपान: असमिया भोजन मुख्य रूप से चावल और मछली पर आधारित है. मिठाई के अलावा दाँत वाले लोगों के लिए पिठस (केक) में एक विस्तृत श्रृंखला है. असम का मुख्य भोजन चावल है और पूरे दिन विभिन्न रूपों में खाया जाता है. असमिया दूध, दही या मोटी क्रीम (चोंचला), चिरा (चुरा), मुरी, कोमल चोल जैसी अनाज की एक विशाल विविधता है. इसके अलावा विभिन्न प्रकार के पिठा हैं जो चावल पाउडर से तैयार किए जाते हैं. प्रामाणिक असमिया व्यंजन बहुत नरम और बहुत स्वादिष्ट है. बहुत कम तेल का प्रयोग किया जाता है और व्यावहारिक तौर पर कोई मसाले का प्रयोग नहीं होता है. सभी असमिया लोग गैर-शाकाहारी हैं. चिकन रूढ़िवादी परिवारों में निषिद्ध है और कुछ हैं जो मांस नहीं खा सकते हैं लेकिन जो मछली और बत्तख के अंडे नहीं खाते हैं, उन्हें ढूंढना मुश्किल है. खाना पकाने के लिए सरसों का तेल प्रयोग किया जाता है और कभी-कभी मक्खन या घी का भी उपयोग किया जाता है. असम का प्रमुख स्ट्रीट फूड लक्सा, मूल रूप से मलेशियन मसालेदार नूडल सूप है, जोकि नारियल के दूध, इमली, स्वादिष्ट मछली की पेस्ट और मसालों के मिश्रण को मिलाकर बनाया जाता है. जिसमें चावल से बनाई गयी सेंवई को भापदार कटोरे में डूबो दिया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप लक्सा बनता है.

मेघालय का खानपान: मेघालय तीन मंगोलियाई जनजातियों का घर है एवं यहाँ एक अनूठा खानपान है, जो पूर्वोत्तर भारत के अन्य सेवन सिस्टर स्टेट्स से भिन्न है. लोगों का मुख्य भोजन मसालेदार मांस और मछली के साथ चावल है. वे बकरियां, सुअर, मुर्गी, बत्तख और गायों को पालते हैं और उनके मांस को खाते हैं. ये खासी और जयंतिया के लोकप्रिय व्यंजन हैं; जदोह, की कुपु, तुंग-रायमबाई और मसालेदार बांस के अंकुर का अचार ! बाँस की कोंपल के व्यंजन गारो लोगों का प्रिय व्यंजन होता है. गारो ज्यादातर गैर-पालतू जानवरों को खाते हैं, हालांकि उनके रोजमर्रा के स्टेपल सरल खाद्य पदार्थ हैं, जैसे कि कापा के साथ चावल, जिसे एक विशेष घटक के साथ पकाया जाता है, जिसे पुरम्भी मसाला कहा जाता है.

अरुणाचल प्रदेश का खानपान: पारंपरिक उत्तर-पूर्व व्यंजन, चीनी भोजन और स्थानीय भोजन यहां उपलब्ध हैं. यहां पोपेले आम तौर पर गैर-शाकाहारी आहार लेते हैं. उनके अधिकांश व्यंजनों में प्रसिद्ध गैर-शाकाहारी भोजन, अपोंग (चावल या बाजरा से बना स्थानीय पेय) है. थेंथूक एक सूप है जोकि थुक्पा (तिब्बती नूडल सूप) से मिलता जुलता है. लेकिन थेंथूक को मांस, ताज़ी सब्जियां और नूडल्स मिलाकर बनाया जाता है. इस डिश को परंपरागत रूप से अरुणाचल प्रदेश की सर्दियों के दौरान गर्म रहने के लिए तैयार किया जाता है. यह स्वादिष्ट, आरामदायक पकवान आपकी आत्मा को भी तृप्त कर देगा.

मणिपुरी खानपान: पारंपरिक मणिपुरी के भोजन को केले के पत्तों पर परोसा जाता है. चावल के लिए प्यार यहां हर घर में देखा जा सकता है. कुछ चावल, मांस के साथ

लेते हैं और कुछ अन्य मुख्य व्यंजन के साथ ! मछली को सभी पसंद करते हैं. वास्तव में काबोक एक पारंपरिक विशेषता, चावल, तली हुई सब्जियों के साथ हैं. ईरोम्बा मछली, सब्जियों और बांस की शूट का एक उदार संयोजन किण्वित किया जाता है. मणिपुर का प्रसिद्ध जड़ी बूटी मसालेदार चने का स्नैक-केल्ली चना को आम तौर पर कमल के पत्ते पर परोसा जाता है. इस स्ट्रीट फूड का नाम इस चना को बेचने वाली महिला 'केली' के नाम पर पड़ा है, जो इस लजीज चने को एक पेड़ के नीचे बैठकर बेचा करती थी.

मिजोरम का खानपान: मिजोरम के लोग मूलतः गैर-शाकाहारी होते हैं. इनका भोजन मसालेदार नहीं होता और इसे इस तरह पकाया जाता है कि पोषक मूल्य वास्तव में रखा जाता है. स्थानीय रूप से निर्मित शराब एक महान आदिवासी पसंद है. जू (चाय) एक लोकप्रिय पेय है. यहां पुरुष और महिलाएं, दोनों धूम्रपान के शौकीन हैं.

सिक्किमी खानपान: विशिष्ट खाद्य व्यंजनों के साथ सिक्किम की अपनी अनूठी आहार संस्कृति है. आप सिक्किम में विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ प्राप्त कर सकते हैं लेकिन तिब्बती ठप्पका और मोमो यहां बहुत लोकप्रिय हैं. स्थानीय बाजरा से बना एक बीयर है जो एक बांस के मग में दिया जाता है. आप इसे सिक्किम के व्यंजनों की सेवा करने वाले छोटे रेस्तरां में भी पा सकते हैं. सिक्किमी मूलतः चावल खाने वाले होते हैं. मादक पेय दोनों पुरुषों और महिलाओं के बीच लोकप्रिय हैं. विभिन्न पारंपरिक किण्वित खाद्य पदार्थ और पेय बहुत आम हैं. भूटियां में बीफ़ खाना आम बात है. उनके व्यंजनों के साथ कुछ पारंपरिक व्यंजन हैं-मोमो, ज्ञान ठुक या ठुकपा, निरुंगो, चुरपी, गुंड्रक, फागशपा, सेल रोटी.

त्रिपुरा का खानपान: भोजन मुख्यतः मांस का उपयोग करते हुए तैयार होते हैं. पारंपरिक त्रिपुरा भोजन को म्यूई बोरोक कहा जाता है. त्रिपुरी भोजन में एक महत्वपूर्ण घटक है, जिसे बरमा कहा जाता है जो कि सूखी मछली की किण्वित होती है. यह खाना स्वस्थ माना जाता है क्योंकि यह तेल के बिना तैयार किया जाता है. त्रिपुरी के भोजन जैसे बांगुई चावल और मछली स्टॉक, बांस की मारियां, किण्वित मछली, स्थानीय जड़ी बूटियाँ और मांस के रोस्ट्स, राज्य के भीतर और बाहर बेहद लोकप्रिय हैं. त्रिपुरा की सांस्कृतिक विविधता आदिवासी और गैर-आदिवासी लोगों के भोजन की आदतों में परिलक्षित होती है. शहरी केंद्रों के रेस्तरां में भव्य मसालेदार भोजन या दो या तीन किस्मों के चीनी व्यंजनों को छोड़कर, त्रिपुरा के गैर-आदिवासी, बंगाली चावल, मछली, चिकन, मटन और पोर्क खाते हैं. हालांकि मुस्लिमों का एक छोटा सा हिस्सा बीफ़ का उपभोग करता है, जो राज्य में आसानी से उपलब्ध नहीं है. हालांकि, गैर-आदिवासी, राज्य के भीतर काफी मात्रा में उपलब्ध मछलियों की मसालेदार करी बनाते हैं. मछली का सबसे लोकप्रिय और स्वादिष्ट व्यंजन उबला हुआ 'हिल्सा' है, जिसे सरसों के बीज और हरी मिर्च के साथ बनाया जाता है. त्रिपुरा राज्य का परंपरागत व्यंजन, 'म्यूई बोरोक' है. त्रिपुरियाई लोगों, बर्मा के पारंपरिक भोजन प्लेट में आपको हमेशा एक घटक मिल जाएगा, 'बरमा'. सूखे और मछली की किण्वित होती है जो निश्चित रूप से त्रिपुरा का पसंदीदा है. पकवान किसी भी तेल के बिना पकाया जाता है और इसलिए इसे बेहद स्वस्थ माना जाता है.

नागालैंड का खानपान: नागालैंड का खानपान ज्यादातर जनजातीय परंपरा पर आधारित है. नागालैंड की संस्कृति और खानपान पूरे भारत से बिल्कुल अलग है. यहां के नागा लोग ज्यादातर मांसाहारी होते हैं. ये लोग कुत्ते का मांस, भैंस का मांस, सूअर का मांस, मटन, चिकन, मछली, सांप आदि के मांस के शौकिन होते है. नागा लोग कुत्ते के मांस को बड़े चाव से खाते हैं. नागा फूड में बैम्बू शूट खासतौर पर लोकप्रिय है. मगर शाकाहारियों के लिए यहां कम विकल्प नहीं है. नागालैंड में आप दुनिया की सबसे तीखी मिर्ची 'भूत झोलकिया' या राजा मिर्ची भी ट्राई कर सकते हैं, पर जरा संभल कर. दरअसल, छोटी सी दिखने वाली यह मिर्ची बड़े-बड़ों के आँखों से पानी निकाल सकती है. इसके तीखेपन का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि इसे बेचने वाला इसे बिना ग्लव्स के छूता तक नहीं है.

खानपान की दृष्टि से पूर्वोत्तर क्षेत्र विशिष्ट है. चावल यहां के लोगों का मुख्य भोजन है. अरुणाचल प्रदेश की बोकार, रामों, आशिंग और कई उपजातियाँ अपने भोजन में मक्के और बाजरे का उपयोग भी करती हैं क्योंकि उस क्षेत्र में चावल का पर्याप्त उत्पादन नहीं होता है. इनका प्रिय भोजन सूखी मछली का चुरा, भूने मक्के का चुरा, भूने हुए चावल का चुरा, चावल की रोटी आदि है. असमिया लोग चावल के साथ-साथ पत्ते, कंद-मूल, सूअर, मुर्गी का मांस, मछली आदि खाते है. रेशम का कीड़ा इन लोगों का विशिष्ट आहार है. असम के कार्बी लोग दूध नहीं पीते है. यहां तक कि अधिकतर लोग चाय भी बिना दूध वाली ही पीते है. यहाँ के लोगों द्वारा चावल से बनी मदिरा का नियमित सेवन होता है. मदिरा के बिना किसी सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आयोजन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है. मेघालय के लोगों का भी चावल प्रमुख भोजन है. यहाँ सभी लोग मांसाहारी होते हैं. ये लोग बकरी, सूअर, बत्तख, बिल्ली, सांप, छिपकली आदि लगभग सभी तरह के पशु-पक्षी खाते हैं. परंतु कुत्ते का मांस नहीं खाते. खानपान की दृष्टि से पूर्वोत्तर भारत इतना वैविध्यपूर्ण है कि इसे 'व्यंजन प्रयोगशाला' कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा.

संतोष कुमार राम
क्षे.का., रायपुर

Meghalaya - The Abode of Clouds

Meghalaya, a hilly state of North East India, is the wettest part of the country where the rolling green mountains drive under dramatic clouds. The spectacular view of green rainforests, roaring high waterfalls, white fluffy clouds, hide and seek play between the sunlight and rains, living root bridges, adventurous long natural caves, crystal clear rivers, clean villages, blue natural swimming pools, tent camping on sandy river beaches, floral diversity and the friendly people of Meghalaya make it the most attractive tourist destination of India. Not only that, it also offers adventure activities like cliff jumping, caving, trekking and rappelling for the backpackers.

The state is comprises of 3 important mountain ranges viz. Khasi, Jaintia and Garo which symbolize the culture of various ethnic inhabitant groups. English is the official language of the state. Unlike many Indian states, Meghalaya has historically followed a matrilineal system where the lineage and inheritance are traced through women-the youngest daughter inherits all wealth and also takes care of her parents. Majority of the population practices Christianity here. Sundays are a dud across the state for tourists as most of Christians assemble at church. Hence, shops, cab stands, etc. are shut down on Sunday, a complete holiday. Shillong is the capital city of Meghalaya and is widely known as the rock capital of India. Places like Cherrapunjee & Mawsynrum of the state are claimed to be the wettest places on the earth. During the British regime, the Britishers named the state as 'Scotland of the East' owing to its stunning landscape.

I love to visit Meghalaya over and again and wish you too to visit and explore the magnificent tourist places of the state. A travel package of 4 -5 days is enough to experience the amazing natural scenic beauty. The best time to travel here is June-August i.e. during early monsoon when the area welcomes you with greenery, sporty clouds, rains & waterfalls.

Shillong is the hub for all surrounding attractive tourist places of Meghalaya and is around 90 kms away from Guwahati Railway Station and 120 kms away from Guwahati airport which is connected through very good motorable road, reaching you there in around 2-3 hours.

Shillong is a bustling city with a wide range of accommodation options from lavish hotels to small home stays. Staying in Shillong can be a costly affair where good hotels charge above ₹ 2500/- per night although a few cheap places or home stays can be found. Always book hotels in advance to avoid the rush in peak seasons. Police Bazar is the busiest point here with a busy marketplace having most of the hotels, budget shopping stalls, street food centre, and fine cafes that offer charming music. The city may give you a little trouble of traffic congestion during the office hours. One should plan to spend atleast a day or two in the city for getting acquainted with the people and way of life before one begins his road journey onwards to other parts of Meghalaya. The city has a lot of British influence on its architecture which gives it a charm of a lovely old world. The spots of tourists' attraction in and around the city are Ward's Lake, Shillong Golf Course, Laitlum Canyons, Elephant Falls, Smit, Don Bosco Museum of Indigenous Cultures, archery at Siat Khnam, Mawphlang sacred forests, Lady Hydari Park and Shillong Peak. Another spot Umiam Lake, around 15 kms away from the city, can be visited on your way to Shillong from Guwahati. You can hire local taxi from Police Bazar for your destinations in or around Shillong.

Cherrapunjee, also known as Sohra, is located around 60 km from

Shillong. Though tourists can visit Cherrapunjee & other nearby spots and come back to Shillong in a day, but an overnight stay is recommended. The Resorts, Hotels, cottages & Home Stays ranging from ₹ 2000/- per night are the staying options in open meadow surrounded by mountains to enjoy the mesmerizing climate at Sohra. Naturally, the place is amazing during the monsoon. The best thing to do in Cherrapunjee is waterfall & natural cave hopping. The Nohkalikai Falls, Seven Sister Falls, Dainthlein Falls, Garden of Caves, Arwah Caves and Mawsmai Caves are quick stops and can be completed in a day. The Nohkalikai Waterfall is the fourth highest waterfall in the world and India's tallest plunge waterfall. Amazing stalactites and stalagmite formations are found in the caves.

The most fascinating activity and attractions around Cherrapunjee is the trek to the 'Double Decker Root Bridge' of Nongriat village. The journey to see the bridge is an 'inevitable' experience here, if you're up for a bit of a trek. Please be prepared mentally prior visiting this place as it can be very strenuous and it is not advisable for unfit persons or person with knee trouble specifically as it involves a steep descent of 3600 steps. Start early in the morning and get a taxi to Tyrna village which is approx. 25 kms away from Cherrapunjee. Tyrna village is the place from where the downward trek to Nongriat village begins. The trek to Nongriat is straightforward and very well marked. At the entrance point of trek, there are guides and porters cum guides who can be hired. The downward trek to Nongriat is pretty easy to complete as the steep steps mostly descend and most of the trail is well made. It may take 3-4 hrs time. On the way to Nongriat village, single root bridges, iron rope bridges and magnificent beauty of nature will help to boost the traveller's energy. Go into Nongriat knowing that it is a tiny, remote village deep inside a valley at Cherrapunjee. It is advisable to stay overnight at Nongriat to allow the knees to rest and enjoy nature's bounties. A very few homestays (2 or 3) are available which are very basic and far from luxury, yet full of warmth and friendly faces. One can typically just show up and expect to find a free room, but pre-booking is advisable as a lot of foreign backpackers camp here for days. Walk to the spectacular Rainbow waterfall and stumble around to find natural pools of water. I highly recommend to spend a lot of time for bathing in stunning sapphire blue pools underneath the waterfalls. One must chill at the natural pool under the double-decker bridge, get a free fish spa and hike to the Rainbow Fall in the afternoon, spend the night around a bonfire, mingle with other guests and sleep in early. Returning back to Tyrna the next day is very strenuous and the steps are high and steep and most travellers find their legs trembling half way up. Allow atleast 4-5 hours of walk back to Tyrna village from Nongriat and further back to Cherapunjee.

Next destination is Mawlynnong Village, which is 'Asia's cleanest village' and Dawki, which is the last village on the Indian side of the Bangladesh border of Tamabil. The route to Dawki bifurcates around 25 kms on the Cherrapunjee-Shillong highway. Mawlynnong is a quaint and quiet village with tree houses, a marketplace and scores of bamboo dustbins lining the road. Cleanliness isn't a chore here, it's an age old tradition and a way of life! There are so many homestays available, which may be chosen for rest, recoupe and spending a night. Another top highlight here is the single living root bridge which is a 15-30 minute walk from the car drop-off point and a good alternative for those who don't have the time/energy for the Nongriat trek.

A couple of hours further on from Mawlynnong, is the Indo-Bangladesh border town of Dawki. If you have seen rustic boats floating in crystal clear water in photographs of Meghalaya on the internet, the most chances are that they are taken on the Umngot River of Dawki. During Dec-Feb, one can see straight through to the very bottom of the river bed with one's naked eye! It makes sense to go to a small hamlet by the name of Shnongpdeng to experience the beauty of the pristine waters of Umngot River. Shnongpdeng is 7 kms away from Dawki and is accessible by a rough road.

Now, Its time to return back to Shillong or directly to Guwahati. Here, I recommend one to take the route via Jowai town and starting time from Dwaki should not be later than 1.00 pm. Jowai route comprises of green velvety covered Canyons & panorama of natural sceneries. There is another waterfall known as Krangsuri on route to Shillong/Guwahati through Jowai. This falls is supposed to be more beautiful and much less crowded than the popular Umbrella Falls. Natural pool for bathing is another attraction with this waterfall. This point may take minimum 1 hr as the view point is some walking steps away from car parking place.

Finally, one needs to get a hotel for a night stay at Shillong or Guwahati and prepare to catch the train / flight from Guwahati the next day with lots of sweet memories for a lifetime.

Samir Kumar Maiti
R.O. Guwahati

पूर्वोत्तर राज्यों का परिधान

भारत में पारंपरिक वेशभूषा, प्राकृतिक जलवायु के आधार पर की जाती है. भारत के हर क्षेत्र की अपनी-अपनी भाषा, जीवन-शैली और भोजन है और यह विविधता अपने पारंपरिक परिधान में भी परिलक्षित होती है. भारतीय पारंपरिक पोशाक में भारतीय कढ़ाई, प्रिंट, हस्तकला और अलंकरण की व्यापक विविधता की झलक भारत के हर क्षेत्र में पायी जाती है और उसकी अपनी विशेषता होती है जिसमें पूर्वोत्तर राज्य भी शामिल है. पूर्वोत्तर राज्यों की पारंपरिक वेशभूषा के असंख्य प्रकार है. आइये, यहाँ के खूबसूरत परिधानों से आपका परिचय कराते हैं.

नागालैंड : नागालैंड भारत के पर्वतीय क्षेत्र का राज्य है, जिसके कारण यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता विश्वविख्यात है. नागालैंड का इतिहास एवं इसकी आदिवासी संस्कृति और सुंदरता, खान-पान, मौसम, पहनावा पर्यटकों को बरबस ही अपनी ओर आकृष्ट करता है. नागालैंड में 16 जनजातियों के लोग पाये जाते हैं. इन जनजातियों की वेशभूषा, भाषा एवं खानपान भी अलग-अलग है. अंगामी समुदाय के पुरुष कुर्ता पहनते हैं जो सफ़ेद और काले रंग के कपड़े से बना होता है. वहीं महिलाओं के कपड़े सादे नीले रंग के होते हैं, जिसमें अलग-अलग चौड़ाई के काले सीमांत बैंड होते हैं लेकिन वे अक्सर पुरुषों के वस्त्र पहने हुए दिखाई देती हैं. अंगामी महिलाओं की साधारण पोशाक में पेटीकोट होता है जिसे 'नेखरो' कहते हैं. फ़ोम नागा समुदाय के पुरुष मुख्य रूप से ननपोंग अशक, फ़ोम फेनेट इत्यादि पोशाक पहनते हैं. अमीर लोग 'फेम हेनयू' (लाल शॉल) नामक वस्त्र पहनते हैं. म़हिलाएं फ़ोम शुगनांग नामक स्कर्ट पहनती है. अमीर फ़ोम की पत्नियाँ और बेटियाँ 'शका' नामक सफ़ेद स्कर्ट पहनती है. प्राचीन काल में इनके वस्त्र पशुओं की खाल, पंख और पेड़ पौधों के पत्तों आदि से मिलाकर बने होते थे. जिससे वे अपने गुप्तांगों को ढंकते थे. सिर पर पक्षियों के पंख का ताज आदि लगाए होते थे और बाकी शरीर नंगा होता था. समय के साथ-साथ इनकी वेशभूषा और रहन सहन भी बदलते गए. नागा स्त्री-पुरुष हृष्ट-पुष्ट शरीर वाले होते हैं और रंग बिरंगी पोशाकों के साथ आभूषण पहनते हैं. नागाओं के आभूषण जैसे गले का हार और कंगन से इन्हें आसानी से पहचाना जा सकता है.

मिजोरम : मिजोरम का पहनावा बहुत ही खूबसूरत और पारंपरिक होता है. यहाँ अलग अलग त्योहारों पर अलग-अलग पोशाकें पहनी जाती है. महिलाओं की पारंपरिक पोशाक, रमणीय काली और सफेद छायांकित पोशाक होती है जिसे 'पूआन' के नाम से जाना जाता है. नृत्य करते समय महिलाएं कव्रेची ब्लाउज को पौंची के साथ पहनती है जो काफी पारंपरिक होता है. लूसी जनजाति की महिलाएं सूती स्कर्ट पहनती है. पुरुषों की पोशाकें भी लाल और सफ़ेद रंगों की साधारण होती हैं. गर्मी से बचने के लिए पुरुष माथे पर पगड़ी पहनते हैं.

अरुणाचल प्रदेश : अरुणाचल प्रदेश के लोगों की पारंपरिक वेशभूषा एक अलग संस्कृति को प्रदर्शित करती हैं. महिलाएं अपनी सामान्य दिनचर्या में लुंगी को कमर में लपेटती है और एक झबलानुमा वस्त्र को कमर के ऊपरी भाग में पहनती हैं. पुरुषों की पारंपरिक पोशाकें घुटनों से ऊपर होती है और शरीर के ऊपरी भाग के लिए एक 'फटका' पहनते हैं. कमर में एक अतिरिक्त 'फटका' बांधकर अपने अधो वस्त्र को खिसकने से बचाते हैं. वस्त्रों के साथ-साथ विशेष उत्सवों पर महिलाएं पक्षियों के पंखों के साथ अपने सिर पर मुकुट धारण करती हैं. नईशि जनजाति का पारंपरिक परिधान ब्योपा (पारंपरिक टोपी) होता है.

मणिपुर : मणिपुर के लोग बहुत ही आकर्षक परिधान पहनते हैं. पुरुषों का मुख्य पोशाक सफ़ेद रंग की धोती-कुर्ता और सफ़ेद पगड़ी होती है जबकि महिलाएं एक विशेष प्रकार की शॉल की तरह की पोशाक पहनती है, जिसे 'इंनाफी' के नाम से जाना जाता है. इसके अलावा फेनक और स्कर्ट भी महिलाओं की पोशाक में शामिल होती है.

असम : असम की वेशभूषा इस राज्य की सभ्यता, संस्कृति को प्रदर्शित करती है. यहाँ पुरुषों की वेशभूषा निम्नानुसार होती है.

गमछा : गमछा असमिया पुरुषों के लिए 'दिल की धड़कन' है. यह केवल एक कपड़ा नहीं बल्कि असम के लोगों के लिए एक जातिगत सम्मान व स्वाभिमान होता है. असम में किसी भी अच्छे कार्य के लिए इसी आभूषण (गमछा) से सम्मानित किया जाता है. बीहू पर्व के शुभ अवसर पर लोग इसका इस्तेमाल अपने शरीर एवं माथे पर पहनकर सम्मानित महसूस करते हैं. भगवान की प्रार्थना करते समय और बड़ों का सम्मान करते समय भी गमछे का प्रयोग किया जाता है.

धोती और कुर्ता : सफ़ेद रंग की धोती और कुर्ता असम के पुरुषों का पारंपरिक एवं मुख्य वस्त्र है. आज भी प्रमुख अवसरों पर जैसे विवाह, धार्मिक कार्य, पूजा इत्यादि के शुभ अवसर पर आसामी लोग धोती और कुर्ता पहनते हैं.

असमी महिलाओं की वेषभूषा निम्नानुसार है :-

मेखला : असमिया महिलाओं की मेखला कमर से लेकर पाँव तक पहनी जाती है. मेखला को विभिन्न रंग और डिज़ाइन द्वारा बनाया जाता है. रेशम से बनाई गयी मेखलाओं को काफी मूल्यवान और दुर्लभ माना जाता है.

चादर : असम की महिलाएं चादर को कंधे से कमर तक पहनती है. शरीर के ऊपरी हिस्से में ब्लाउज़ पहना जाता है. यह वस्त्र भारत के दूसरे हिस्सों में भी काफी लोकप्रिय है, जिसे साड़ी के साथ पहना जाता है.

त्रिपुरा : त्रिपुरा के पुरुषों का पारंपरिक पोशाक 'रिकूटू गमचा' होता है जिसे कुबई नामक स्व-बुनी हुई शर्ट द्वारा रखा जाता है. गर्मी में काम जारी रखने के लिए लोग माथे पर पगड़ी पहनते हैं. वर्तमान में पश्चिमी देशों का प्रभाव त्रिपुरा के युवाओं पर होने से वे पारंपरिक पोशाक से दूर होते जा रहे हैं. त्रिपुरी महिलाएं कपड़े के एक बड़े आकार के टुकड़े में खुद को लपेटती है. यह कपड़ा कमर के चारों ओर लपेटा जाता है ओर घुटनों तक पहुंचता है जिसे 'रीनई' कहा जाता है. ऊपरी पोशाक 'रीसा' कहलाता है. लुशाई जनजाति के महिलाएं स्कर्ट या पेटीकोट के रूप में गहरे नीले रंग का सूती कपड़ा पहनती है. त्रिपुरी महिलाएं आम तौर पर सिक्के के साथ चाँदी से बनी चैन, चूड़ी, कान और नाक के छल्ले तथा पीतल के बने आभूषण भी पहनते हैं.

मेघालय : मेघालय ख़ासी, जयंतिया और गारो की भूमि है. यह प्राकृतिक सुंदरता का खूबसूरत भू-भाग है.

ख़ासी समुदाय : इस समुदाय के लोगों की पहचान उनके सिलाईरहित निचले परिधान (धोती), जैकेट और पगड़ी से की जा सकती है. महिलाओं की एक पारंपरिक पोशाक कंधे पर पिन किया हुआ एक दो टुकड़े वाला वस्त्र जिसे 'जेनसेम' कहा जाता है और एक शॉल (तपमोह) होता है. वृद्ध महिलाएं ऊनी कपड़े (जेंकअप) धारण करती हैं. महिलाएं सोने और चाँदी के आभूषण भी पहनती हैं.

जयंतिया समुदाय : इस समुदाय की महिलाएं 'जेनसेम' पहनती है. इसमें दो सिलाईरहित भागों को कंधे पर बंधा जाता है. इसके भीतर ब्लाउज़ और पेटीकोट पहना जाता है. जेनसेम के ऊपर 'टेप-मोह खोलीह' या 'जैन-टेपमोह' पहना जाता है जो चमकीले रंग के चेकों वाला बड़ा ऊनी शॉल होता है. समय के साथ जेनसेम और जेंकअप की लंबाई कम होती जा रही है और वर्तमान में ये वस्त्र घुटने के ऊपर तक पहुँच गए हैं. कपास की थैली या 'प्ले-किन्ग' में वे सुपारी, पान के पत्ते, चाकू, घर की चाभी, नगद इत्यादि रखते हैं. पुरुष का मुख्य परिधान 'ज्योन्फांग' या बांह रहित कोट है जिसे औपचारिक नृत्य के दौरान ही पहना जाता है. रेशम की पगड़ी भी पहनी जाती है. वे शर्ट और पतलून भी पहनते हैं.

गारो समुदाय : गावों में महिलाएं अभी भी कमर के चारों ओर 'इकिंग' नामक एक छोटा कपड़ा बांधती है और पुरुष धोती धारण करते हैं. गारो जनजातीय महिलाएं आज भी अपने कमर के चारों ओर 'डकमन्डा' नामक कपड़े का एक लंबा सिलाईरहित टुकड़ा बांधती है. ड़कमन्डा हाथ से बुना हुआ होता है.

उपरोक्त के अलावा खिनायम, वार ख़ासी, भोई ख़ासी, ख़ासी मुसलमान, राभा हाजोंग आदि जनजातियों का पहनावा भी अलग अलग होता है एवं वस्त्रों के द्वारा उन्हें पहचाना जा सकता हैं.

सिक्किम : सिक्किम का प्रमुख समुदाय लेप्चा, भूटिया और नेपाली है. इन तीनों समुदायों की अलग अलग वेशभूषा है, जो कि सिक्किम राज्य की सामाजिक व सांस्कृतिक विविधता को दर्शाती है. सिक्किम की वेशभूषा बहुत ही पारंपरिक होती है. ऐसी वेशभूषा यहाँ आनेवाले पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र रहती है.

लेप्चा समुदाय : इस समुदाय के पुरूषों की पारंपरिक वेशभूषा 'थोकोरो-दम' होता है, जिसमें एक सफ़ेद पाजामा-'येन्हेत्से', एक लेप्चा शर्ट और शंबों टोपी होती है. महिलाओं की पोशाक 'डमवम' या 'डुमीडम' होती है. इन महिलाओं द्वारा प्रदर्शित शानदार गहने, प्रवेश, बालियाँ, लायक (हार), नामचोक, कंगन इनके वस्त्रों की खूबसूरती को और भी आकर्षक बनाती है.

भूटिया समुदाय : भूटिया समुदाय के पुरूषों का पारंपरिक वेशभूषा खो है जिसे बाखू भी कहा जाता है. भूटिया समुदाय की महिलाएं सामान्य वेशभूषा में खो या बाखू, हंजू, कुशेन, जैकेट, अलग तरह की टोपी, शंबों व शबचू पहनती है. पेंगडेन, धारीदार एप्रन इत्यादि विवाहित भूटिया महिलाओं के वेशभूषा का प्रतीक होता है. भूटिया महिलाओं का मुख्य आभूषण येंचो, बाली, खाओ, हार,फीरू, मोती, सोने की चूड़ियाँ, जोको, अंगूठी इत्यादि है. यहाँ की महिलाएं सोने के बने आभूषण को बहुत ही पसंद करती है.

नेपाली समुदाय : नेपाली समुदाय के पुरुषों की मुख्य वेशभूषा, चूड़ीदार पाजामा, एक शर्ट (दाऊरा) और शुरवल शामिल है. नेपाली महिलाओं की पारंपरिक वेशभूषा बहुत ही शानदार होती है. महिलाओं की प्रमुख वेशभूषा फरियाद, साड़ी, लंबे ढीले ब्लाउज़ होता है. लंबे ढीले ब्लाउज़ को चारों तरफ से बांधा जाता है जिसे 'चौबन्ध चोलो' कहा जाता है. ब्लाउज़ की एक और किस्म 'थारो चोलो' है जिसमें शरीर के ऊपरी हिस्से को शानदार प्रिंट के साथ कपड़े के टुकड़े से ढंका जाता है जिसे 'हम्बरी' कहा जाता है.

रणजीत कुमार
स्टा.प्र.कें., भुवनेश्वर

INCREDIBLE TRIPURA :

GLIMPSES OF TRADITION AND HERITAGE

Tripura, one of the seven sisters of North Eastern region, a small, hilly state having unparalleled natural beauty and resources, endowed with store house of natural gas and boundless woodland accompanied with so many attractions of tourist spots, temples, sanctuary and so on, that catches the curious eyes of all tourists visiting this scenic mountainous state. The world poet Kaviguru Rabindranath Tagore had visited this state more than twice and charmed by the tradition and culture here, he had composed literature - his creativity knew no bound.

Tripura is a holy state of 'Mata Tripureshwari', one of the 51 pithas of the Goddess Sati Durga. The history of the origin of Tripura has more legends and folklore than any historical record. Formerly, the territorial area of Tripura was extended upto the Bay of Bengal on the south side. It was initially called 'TUIPRA' because of its proximity to the sea. In the course of time, 'TUIPRA' was changed into 'TRIPRA' and finally into 'TRIPURA'. The royal dynasty had ruled here for generations together and finally this princely state was merged with the Union of India in 1949. Subsequently, Tripura became a Union Territory on 1st July, 1963 and finally attained the status of full state of India on 21st January, 1972.

The area of the state is 10491 sq. km. with eight districts having population of more than 41 lacs.

Tripura Sundari Temple :-

This temple occupies a place of great importance among all the Hindu religious shrines as one of the 51 peethas of SATI DURGA. Maharaja Dhanya Manikya constructed the temple in 1501 AD on a small hillock which was convex shaped, almost like a tortoise. A large lake 'Kalyan Sagar', situated on the east side of the temple, is a home to different types of fishes and tortoises.

This temple, popularly known as Matabari, is situated in Udaipur sub-division, 56 Km. from state capital Agartala.

Kamalasagar Kali Temple :-

It is a popular Shakti shrine and the deity installed inside the temple is Goddess Durga, but as the base platform has an image of Shiva. The ten handed Durga fighting the buffalo demon Mahisasur is whorshipped as the goddess Kali. The temple is located at Kasba, a village very close to the international border of Bangladesh.

Neermahal :-

Neermahal is a former royal palace built in 1930 A.D. by the King Bir Kiram Kishore Manikya Bahadur of the erstwhile kingdom of Tripura. The palace is a picturesque Royal Mansion located 53 km. south of Agartala. This Palace, constructed as a summer residence of the King, is situated in the midst of Rudrasagar Lake and is the largest of its kind in India and the only one in Eastern India. In 1921, The British company 'Martin and Burus' was accredited to construct the palace for the Maharaja. The palace is a testimony to Maharaja's great taste and his fascinating idea of blending Hindu and Muslim traditions and cultures.

Sepahijala Wildlife Sanctuary :-

Sepahijala wildlife is truly the biodiverse heaven of Tripura with

an area of 18.53km. It has no less than 456 plant species, many kinds of bamboo and a variety of grasses and medicinal plants. The moist, deciduous forest is the habitat of different species of primates like Rhesus Macaque, Pigtailed Macaque, capped langur, spectacled monkey, slow loris and several other wild animals like leopard, clouded leopard, jungle fowl, deer, wild pig, etc. It is one of the most sought after leopard national parks in India and a great attraction of the tourists visiting India.

Unakoti :-

Unakoti is located in Kailasahar sub-division, 178 kms from Agartala. It is an important site of archaeological wonder of our country. It is the Shiva Pilgrimage attraction that dates back to 7th-9th centuries A.D. This site consists of several huge vertical rock-cut carvings on all hill sides. Unakoti means one less than a Crore. All these carvings are located in a beautifully landscaped forest area with green vegetation all around which contributs to the beauty of these carvings. Among the rock-cut carvings, the central Shiva head and gigantic figures deserve special mention. It is the biggest Bas-relief in India.

Ujjayanta Palace :-

The Ujjayanta Palace is the former royal palace of the kingdom of Tripura, situated in the heart of the state capital Agartala. The construction work of Ujjayanta palace began in 1899 and was completed in 1901. The Palace stands on the banks of two lakes - Radhasagar and Krishnasagar and is surrounded by gardens inspired by the Mughal style, the cost of which was ₹ One million in those days. The Palace, built during the reign of Maharaja Radha Kishore Manikya, housed the State Legislative Assembly till July 2011. It is now the State Museum and an unparalleled attraction to all tourists visiting the state. The Ujjayanta Palace served as a home to many past rulers of Tripura since it was built in 1901. The two storied high building has three domes, each measuring 86 feet height, having outstanding beauty of significant halls like the public halls, the Throne room, durbar hall, library, the Chinese room and reception hall.

Besides all the above mentioned tourist spots of the state, there are more attractive tourist spots scattered throughout the state. Some of these are : Chuturdash Devata Temple, Government Museum, Heritage Park, Pilak, Devatamura, Bhubaneswari Temple, There are Trishna Wildlife Sanctuary, Tepania Eco Park, Baramura Eco Park, Kalapania Nature Park, Chabimura Rock Carvings, Buddhist Stupa, Mahamuni Pagoda and many more temples and historical spots that haunt the curious eyes of all tourists visiting our tiny, hilly, green and beautiful tourist land : Tripura.

It is a matter of great glory and prestige that our state Tripura is one of the model states of India where international tourist hub is being held in the state capital Agartala which is connected to the rest of India by air, railways, roads and also to the very close neighbouring country Bangladesh.

Mukut Lal Chattopadhyay
Agartala Br., Tripura

Future of Handicrafts in Tripura

Handicraft is skilled activity in which something is made in a traditional way with the hands rather than being produced by machines in a factory, or an object made by such an activity.

Tripura has a history of producing hand crafted articles in a traditional way since long. Some such articles produced in modern days are idols made from bamboo shoot; chairs and tables from cane; baskets, toys, decorative items from bamboo, etc. The primary raw materials used for making these articles and toys are bamboo, cane, timber wood, etc. which are abundently available here as natural vegetation. The vegetation of this state consists of two types of forests viz. Moist Deciduous Mixed forest and Sal-predominant forest. The interspersion of bamboo and cane forests with deciduous and evergreen flora is the peculiarity of Tripura's vegetation. China and India along with several other Asian countries are currently the dominant players in handicrafts. Then also why Tripura can't move faster in the handicrafts market, is a moot question.

Raw Materials availability

Bamboo : Totally 19 different species of bamboo that are found in this state are:

i. Barak (Bambusa balcooa), ii. Bari (Bambusa polymorpha), iii. Mritinga (Bambusa tulda), iv. Muli (Melocanna baccifera), v. Kai (Bambusa nutans), vi. Paora (Bambusa teres), vii. Rupai (Dendrocalamus longispathus), viii. Dolu (Neohuzeaua dullooa), ix. Makal (Bambusa pallida), x. Pecha (Dendrocalamus hamiltonii), xi. Kailyai (Oxytenanthera nigrociliata), xii. Kanak kaich (Bambusa offinis), xiii. Lanthi bans (Dendrocalamus strictus), xiv. Tetua (Bambusa spp.), xv. Ish (Bambusa spp.), xvi. Jai (Bambusa spp.), xvii. Bombash (Bambusa spp.), xviii. Sairil/Wadu bamboo (Melocalamus compactiflorus), and xix. Bosai (bambusa spp.).

The productivity of bamboo at present is only 0.70 MT per hectare/year. Research studies in various forest divisions show that the productivity of bamboo can be increased to 5MT per hectare/year in natural conditions of Tripura.

Cane

Even though a total of six cane species are reported in Tripura, no estimtes on the existing growing stock are available. These species are i) C. Viminalis, ii) C. Floribundus, iii) C. Tenuis, iv) C. Leptospadix, v) C. Guruba & vi) C. Berectus.

Timber Wood

A. Tree species having high timber value are -

1. Pterocarpus marsupium (Andaman Padack) 2. Artocarpus chaplasa (Chamol) 3. Diospiros Ebonum (Ebony) 4. Gmelina arborea (Gamar) 5. Dipterocarpus turbinatus (Garjan) 6. Albizia procera (Koroi) 7. Swietenia mahogany (Mahogony) 8. Dalbergia latifolia (Rose wood) 9. Pterocarpus santalinus (Red sanders) 10. Michelia Montana (Sundi) 11. Shorea robusta (Sal) and 12. Tectona grandis (Teak).

B. Plants endangered and threatened with extinction-

1. Duabanga – *grandiflora Ramdala* (Tree), 2. *Adina sessifolia* Haludehaki (Tree), 3. *Michelia montana* Champa sundi (Tree), 4. *Magnolia pterocarpa* – Duli champa (Tree), 5. *Lochio spermum* – Halde simul (Tree),6. *Canarium Stricum* – Dhup (Tree), 7. *Aquiloria melacensnis* – Agar (Tree), 8. *Pterocarpus santalinus* – Rakta chandan (Tree), 9. Santalum album – Chandan (Tree), 10. *Rauvolfia serpentina* – Sarpgandha (herb), 11. *Dischidia raflosiana* – Lantana kalasi (Climbar), 12. *Drosera burmanni* – Surja sisir (herb), 13. *Elaocarpus prunifolia* – Ban jalpai (Tree), 14. *Mangifera sylavitica* – Laxmi am (tree), 15. *Entada phaseolides* – Gila (woody climber), 16. *Angiopteris evecta* (Fern), 17. *Cyathea gigantea* (Tree), 18. *Holmiathostachys zeylanica* (Fern), 19. *Podocarpus aerlifolius* (Tree), 20. *Xantolis assamica* (Tree)

C. Fuel Wood Species -

1. Ailanthus excelsa – Indian tree of Heaven, 2. Cassia nodosa –Pink shower Cassia (with Pink coloured flowers), 3. Cassia siamea –Minuri, Chakhunda, Sam desiya, Cassia (Flower yellow with brown shades), 4. Lucaena leucocephala – Subabul, 5. Acacia auriculiformis – Akashmami, 6. Melia azadirach – Ghoraneem/ Maha Neem, 7. Peltoforum spp – Radha chura, 8. Acacia mangium – Mangium tree

Handlooms and Handicrafts :-

The Handlooms and handicrafts of Tripura reflect the inborn art of

workmanship and uniqueness of the people. Tripura has a large tribal population having a tradition of a variety of crafts. Handloom is the prime craft of Tripura. Intricately designed handlooms and silk, cane and bamboo works are the main backbone of art and craft industries. The peculiar feature of Tripura handloom is vertical and horizontal stripes with distributed embroidery in multiple colours. The art of weaving textiles has always played an important role in the economic development of rural areas of Tripura. In the olden days, every household in Tripura used to have a handloom and it is believed that families never bought clothes from outside but wove their own garments at home. Risa and Riha are the traditional handwoven fabrics of the state and are distinguished by their bright colours and intricate tribal designs. Here every tribal girl is expected to know the art of weaving. In fact, this art of weaving is an integral part of their lives.

You can buy great handloom products from Purbasha, a Government of Tripura undertaking Sales Emporium and other private emporia. A large variety of furniture, toys, objects of daily utility such as lamp shades, baskets, calendars, ivory work and tribal jewellery, make your shopping a delightful experience.

Cane & Bamboo Handicrafts

Cane and Bamboo crafts are also the main crafts of Tripura. Indigenous groups produce a wide variety of handicraft products using bamboo and cane. Some of the well known products include table mats, floor mats, room dividers, shades, decorated wall panels, attractive cane furniture and various gift items. These products are also exported to various countries as they are in great demand. Interior decoration products made out of Cane and Bamboo include ceilings, panelling, plaques, pots and containers, gossamer, thin bamboo mattress, etc. Lamp Shades made out of fine strips of cane and bamboo, furniture made of cane, baskets knitted out of cane and bamboo strips are some of the well-known crafts here, which are always in demand.

The textile industry has two broad segments. One of this is unorganised sector and the other is organised sector. The unorganised sector includes handlooms, handicrafts, sericulture, wool and jute etc. And the organised sector includes spinning, weaving, processing, fashion, apparel & garments, technical textiles etc. The unorganised sector covers a wide range of hand crafted products with traditional skills in the rural areas. However, it faces a die hard competition from similar machine made products.

Women Entrepreneurship

Women entrepreneurship development is an essential part of human resource development. Entrepreneurship enhances the financial independence and self esteem of women. This empowers them socially and economically. The hidden entrepreneurial potential of women has been changing with the growth of economic status in the society. A study has been conducted to know the entrepreneurial behaviour of rural women of Tripura. Being one of the major bamboo growing states in India, bamboo crafts provide self employment to many rural women. A study has been conducted in Sepahijala and West Tripura districts in 2015-16. Total sample size for the study was 80. This study showed that 58.75% of rural women belong to medium entrepreneurial behaviour category followed by 25% low and 16.25% high entrepreneurial behaviour category. The study also indicated that investment on enterprise, annual income, credit orientation, extension participation, mass media participation and level of aspiration have positive and significant relationship with entrepreneurial behaviour. The entrepreneurs are solely dependent on the middlemen for marketing of their products. This ultimately reflects in the marketing orientation as it is evidenced negative significant relationship in the study. Therefore, to promote women entrepreneurship and to improve their socio-economic condition adequate institutional, financial support must be given by the Govt. for sustainable livelihood along with the development of infrastructure and marketing.

Conclusion:-

The Handloom and Handicraft industry is a traditional cottage industry. It provides avenues of employment opportunities to the people of Tripura. Being a labour intensive family occupation all the members of a family can participate. Majority of the Handicraft industry in the state are self employed artisans who carry on their profession in their own homes with the assistance of their family members. Rank of Tripura in the country is on the bottom line. Handicrafts industry of Tripura may be mentioned with special accounts for contributing to the economic structure and development of the state. Market researches, consumers' wishes, requests, and criterion are the dominant tasks for an artisan of handicraft. Because marketing enables greater flexibility and better organisation for more successful reaction to market demand.

In short, handlooms and handicrafts, cane & bamboo crafts, women entrepreneurship are the principal elements to move faster in the future. Lack of export, due to poor communication and high transportation cost, are the hurdles of this craft industry. More interest must be shown by the government in terms of support in research and development and to improve the export of these handicraft materials of Tripura.

Biswajit Dhar
G.B. Bazar Br., Tripura

दिल हुम हुम करे...

भारतरत्न डॉ. भूपेन हजारिका

90 के दशक का गीत 'दिल हुम हुम करे'. शायद ही कोई ऐसा हो जिसने न सुना हो. स्वर सम्राज्ञी लता मंगेशकर के अलावा एक आवाज़ और थी इस गीत में! इस गायक ने न केवल इस गीत को आवाज़ दी, अपितु इस गीत के गीतकार भी वे थे. लेखक, गायक, संगीतकार, शिक्षक, फिल्म निर्माता इत्यादि अनेक किरदार अपने वास्तविक जीवन में वे अदा कर चुके, ये थे बहुमुखी प्रतिभा के धनी भारत रत्न, डॉ. भूपेन हजारिका.

डॉ. भूपेन हजारिका भारत की सांस्कृतिक विरासत की एक दिग्गज छवि थे. वह अच्छे कवि, संगीतकार, गायक, अभिनेता, पत्रकार, लेखक और बहुत उच्चतम ख्याति के फिल्म-निर्माता थे तथा पूर्वोत्तर में असम के फिल्म उद्योग के अग्रणी व्यक्तित्त्व थे, उन्हें पूर्वोत्तर भारत की सांस्कृतिक दुनिया के बेताज बादशाह के रूप में देखा जाता है.

भूपेन हजारिका जी का जन्म 8 सितंबर, 1926 को असम के तिनसुकिया जिले की सदिया में नीलकांत और शांतिप्रिया हजारिका जी के घर में हुआ था. पिता मूल रूप से शिवसागर जिले में स्थित शहर नाजिरा से थे. दस बच्चों में से सबसे बड़े भूपेन को उनकी माँ ने बाल्यकाल में ही संगीत से अवगत कराया था. उनकी प्रथम गुरु उनकी माता ही रहीं. असम की लोरी और पारंपरिक संगीत से उनका प्रथम सानिध्य बचपन में ही हो गया था. उनके पिता बेहतर संभावनाओं की तलाश में वर्ष 1929 में गुवाहाटी के भरलुमुख क्षेत्र में चले गए, जहाँ भूपेन हजारिका जी ने अपना बचपन बिताया. वर्ष 1932 में उनके पिता आगे धुबरी और वर्ष 1935 में तेजपुर चले गए. प्रतिभा को केवल अवसर की तलाश होती है और जब हजारिका जी 10 वर्ष के थे, यह अवसर उनको मिला. उस वक़्त तेजपुर में एक कार्यक्रम में हजारिका जी ने श्रीमंत शंकरदेव और श्री माधवदेव द्वारा लिखित पारंपरिक शास्त्रीय असमिया भक्ति गीत 'बोर्गेट' गाया. उनकी प्रतिभा को ज्योतिप्रसाद अग्रवाल, प्रसिद्ध असमिया गीतकार, नाटककार और पहले असमिया फिल्म निर्माता, बिष्णु प्रसाद रभा, प्रसिद्ध असमिया कलाकार और क्रांतिकारी कवि ने सहज ही चिह्नित कर लिया. यह गीत हजारिका जी को उनकी माँ ने सिखाया था. इस गीत ने हजारिका जी का जीवन ही बदल दिया. वर्ष 1936 में भूपेन हजारिका कोलकाता गए, जहां उन्होंने सेलोना कंपनी के अरोड़ा स्टूडियो में अपना पहला गीत रिकॉर्ड किया. तेजपुर में असमिया संस्कृति के साथ उनका संबंध उनके कलात्मक विकास और साख की शुरुआत थी. इसके बाद हजारिका जी ने अग्रवाल की फिल्म 'इन्द्रमालती'(1939), 'काक्सोट कोलोसी लोई' और 'बिस्वो बिजॉय नौजवान' में मात्र 12 साल की उम्र में दो गीत गाए. उन्होंने 13 साल की उम्र में अपना पहला गीत 'अग्निजौर फिरींगोती मोई' लिखा था. इसी के साथ बाल हजारिका ने प्रसिद्ध संगीतकार लेखक बनने की ओर अपना प्रथम कदम मजबूती से बढ़ा दिया.

जीवन, शिक्षा एवं कार्यकाल : अब संगीत के इस विशाल वृक्ष की जड़ों को भी जान लिया जाए. संगीत के साथ-साथ बाल हजारिका, शिक्षा में भी उतनी ही रुचि रखते थे. उनकी प्रारम्भिक शिक्षा गुवाहाटी में हुई. हजारिका ने गुवाहाटी के सोनाराम हाईस्कूल, धुबरी गवर्नमेंट हाई स्कूल में पढ़ाई की और 1940 में तेजपुर हाई स्कूल से मैट्रिक की. उन्होंने 1942 में कॉटन कॉलेज से इंटरमीडिएट किया और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में बीए(1944) और एमए(1946) किया. कुछ समय के लिए उन्होंने आकाशवाणी, गुवाहाटी में काम किया. उन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय से छात्रवृत्ति प्राप्त की और 1949 में न्यूयॉर्क के लिए रवाना हुए. वहाँ उन्होंने अपनी थीसिस 'वयस्क शिक्षा में ऑडियो-दृश्य तकनीकी का उपयोग करने के लिए भारत की बुनियादी शिक्षा की तैयारी के लिए प्रस्ताव' पर पीएचडी (1952) अर्जित की. विदेश में बिताए इस समय ने उनके विचारों को बहुत प्रभावित किया और उनकी लेखनी में सामरिक विषयों के अलावा लोक कल्याण के विषय भी नज़र आने लगे. न्यूयॉर्क में भूपेन हजारिका की मित्रता नागरिक अधिकार कार्यकर्ता पॉल रोबेसन से हुई, जिन्होंने उन्हें अधिक प्रभावित किया. यह प्रभाव उनके गीत बिस्टर्नो पैरे में नज़र आया. इस गीत का बंगाली और हिंदी सहित कई विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है. विदेश में रहने के कारण उन पर अन्य विदेशी व्यक्तित्वों का भी प्रभाव पड़ा. उनकी लेखनी, गायन केवल असमिया तक सीमित न होकर कई अन्य भारतीय भाषाओं में भी प्रखर हुई. आध्यात्मिकता से उनका प्रथम संबंध इसी समय हुआ और 'वी आर इन द सेम बोट ब्रदर' गीत उनके सभी कार्यक्रमों का एक अभिन्न अंग बन गया. यह गीत हजारिका जी विभिन्न भाषाओं में गाया करते थे. कोलंबिया विश्वविद्यालय में उनकी मुलाकात प्रियवंदा पटेल से हुई, जिनसे उनकी शादी 1950 में हुई थी. तेज हजारिका, उनके एकमात्र बच्चे का जन्म 1952 में हुआ और वे 1953 में भारत लौट आए. हजारिका जी ने 1953 में संयुक्त राज्य अमेरिका से लौटने के तुरंत बाद

वामपंथी भारतीय पीपुल्स थिएटर एसोसिएशन के साथ घनिष्ठ संबंध बनाये और आईपीटीए के तीसरे अखिल असम सम्मेलन की स्वागत समिति के सचिव बने, जो 1955 में गुवाहाटी में आयोजित किया गया था.

कोलंबिया विश्वविद्यालय में डॉक्टरेट की पढ़ाई शुरू करने से पहले गुवाहाटी में आकाशवाणी स्टेशन पर कुछ समय के लिए उन्होंने काम किया. शिक्षा पूरी करने के तुरंत बाद, वे गुवाहाटी विश्वविद्यालय में एक शिक्षक बन गये. कुछ वर्षों बाद, उन्होंने नौकरी छोड़ दी और कोलकाता चले गये, जहां उन्होंने खुद को एक सफल संगीत निर्देशक और गायक के रूप में स्थापित किया. 'इरा बतर सूर' 1956 में, 'शकुंतला' 1960 में, 'प्रतिध्वनि' 1964 में, 'लाटि-घाटि' 1967 में, 'चिकमिक बिजुली' 1971 में, 'मन प्रजापति' 1978 में, 'सिराज' (1988) में उन्होंने संगीत निर्देशन और गायन भी किया. 1958 में उन्होंने अरुणाचल प्रदेश के लिए संगीत का निर्माण, निर्देशन और संगीत तैयार किया तथा वर्ष 1977 में उन्होंने आदिवासी लोक गीतों पर अरुणाचल प्रदेश सरकार के लिए एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म का निर्देशन किया, जिसका शीर्षक 'फॉर दी सन शाइन' था. वर्ष 1974 में उन्होंने अरुणाचल सरकार के लिए सहकारिता आंदोलन पर आधारित वृत्तचित्र का निर्माण और निर्देशन तथा वर्ष 1977 में कलकत्ता दूरदर्शन केंद्र के लिए आधे घंटे के वृत्तचित्र का निर्माण और निर्देशन किया जो उत्तर पूर्व भारत के लोक गीतों और नृत्यों पर आधारित थे.

वर्ष 1981 में असम में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पांच रील रंग के वृत्तचित्र का निर्माण और संगीत तैयार किया गया. वर्ष 1986 में कल्पना लाजमी द्वारा निर्देशित, जिसमें शबाना आज़मी, नसीरुद्दीन शाह, फ़ारूक शेख ने अभिनय किया था, हिंदी फीचर फिल्म 'एक पल' के लिए संगीत तैयार किया. कल्पना लाजमी द्वारा निर्देशित, 1988 में प्राइम टाइम नेशनल नेटवर्क के लिए असम की लघु कथाओं पर आधारित बेहद लोकप्रिय टेलीविजन धारावाहिक 'लोहित किनारे' के लिए संगीत भी उनके द्वारा तैयार किया गया. उन्होंने 1960, 1964 और 1967 में सर्वश्रेष्ठ कार्यकारी निर्माता, संगीतकार के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार जीता. सिनेमा और संगीत के माध्यम से आदिवासी कल्याण और जनजातीय संस्कृति के उत्थान में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए वर्ष 1977 में अरुणाचल प्रदेश सरकार द्वारा स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ. उन्होंने असमिया फिल्म के लिए 1977 में भारत में सर्वश्रेष्ठ संगीतकार के रूप में राष्ट्रीय पुरस्कार जीता. डॉ भूपेन हजारिका 1990 से लगातार 9 वर्षों तक भारत सरकार के केंद्रीय फिल्म सेंसर बोर्ड की अपीलीय संस्था में पूर्वी क्षेत्र के अध्यक्ष रहे. वे पूर्वी भारत के राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम की स्क्रिप्ट समिति में भी थे. वे राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम, भारत सरकार के निदेशक मंडल में राष्ट्रीय स्तर पर निदेशक रहे. वे श्रीमती जया बच्चन की अध्यक्षता में चिल्ड्रेन फिल्म सोसाइटी (छउधझ) की कार्यकारी परिषद के सदस्य थे, साथ ही वे गरीब कलाकार कल्याण कोष, भारत सरकार के न्यासी बोर्ड के सदस्य रहे. 1985 में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों की ज्यूरी के अध्यक्ष और 1958 से 1990 तक कई बार ज्यूरी के सदस्य थे. वह फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट, भारत सरकार, पुणे के लिए नीति निर्धारण के लिए गवर्निंग काउंसिल में भी रहे हैं.

उन्हें बंगाली संगीत में एक नई प्रवृत्ति सेटर के रूप में भी माना जाता था. हजारिका जी को देश के अग्रणी फिल्म निर्माताओं में स्थान दिया गया था. वे शायद एकमात्र ऐसे अग्रणी थे, जो पूरे भारत और विश्व सिनेमा के नक्शे पर असमिया सिनेमा को रखने के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार थे. भूपेन हजारिका ने बांग्लादेश की फिल्मों के लिए भी संगीत की रचना की, जिसे अंतर्राष्ट्रीय ख्याति मिली. संगीत के अलावा हजारिका जन कल्याण में भी उतने ही सक्रिय थे. उनकी उल्लेखनीय लोकप्रियता ने उन्हें 1967 से 1972 के बीच एक स्वतंत्र सदस्य के रूप में विधान सभा में लाया, जहाँ वे भारत में गुवाहाटी, असम में अपनी तरह के पहले राज्य के स्वामित्व वाले फिल्म स्टूडियो को स्थापित करने के लिए पूरी तरह जिम्मेदार थे.

उनके प्रसिद्ध गीतों में शामिल हैं (असम में):

बिस्तिरनो पारोरे, मोई इति जज्बा, गंगा मोर मां, बिमर्टो मुर निक्सती जेन, मनुहे मनुहोर बेबे, स्नेहे आमार, गुप्त गुपुते किमान खलीम, बुकू होम होम कोरे.

पुरस्कार और सम्मान : यदि भूपेन हजारिका जी को प्राप्त सम्मान और पुरस्कारों की सूची यहां दी जाए तो पत्रिका के पन्ने कम पड़ जाएगें. उन्हें अनेक राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, पद्मश्री, संगीत साहित्य अकादमी पुरस्कार, दादा साहेब फाल्के पुरस्कार, पद्म भूषण, संगीत नाटक अकादेमी फेलोशिप, असम राज्य का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार, पद्म विभूषण, कोलकाता का लाइफ टाइम अचिवमेंट अवार्ड, तेजपुर विश्वविद्यालय से मानद डिग्री, असम साहित्य सभा का 'विश्व रत्न' पुरस्कार, भारत के डाक टिकट तथा भारत गणराज्य का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार 'भारत रत्न'(मरणोपरांत) से उन्हें सम्मानित किया गया.

एक गायक के रूप में, हजारिका जी अपनी बुलंद आवाज और स्पष्ट शब्द उच्चारण के लिए जाने जाते थे. एक गीतकार के रूप में, वे काव्य रचनाओं और दृष्टांतों के लिए जाने जाते हैं जो रोमांस से लेकर सामाजिक और राजनीतिक टिप्पणी तक के विषयों को छूता था; एक संगीतकार के रूप में, बांग्लादेश में किए गए एक सर्वेक्षण में, उनके गीत, 'मानुश मानुशेर जोन्नो' (मानव मानवता के लिए है) को बांग्लादेश के राष्ट्रगान के बाद दूसरा सबसे पसंदीदा गीत चुना गया है. सांप्रदायिक सौहार्द, सार्वभौमिक न्याय और सहानुभूति के विषयों पर आधारित उनके गीत पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश के अलावा असम के लोगों के बीच काफी लोकप्रिय हैं. राष्ट्रीय स्तर पर असम और पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति और लोक संगीत को हिंदी सिनेमा से शुरू करने का श्रेय उनको ही जाता है.

भारत का यह बहुप्रतिभाशाली व्यक्तित्व 5 नवंबर 2011 को समय के आगोश में हमेशा के लिए सो गया लेकिन अपने पीछे हजारिका जी अनगिनत गीत छोड़ गए जो अनंत काल तक उनकी यादें जन मानस में जीवंत रखेंगे.

सुनील प्रकाश पाल
नोक्षेका. बेंगलूरु

Kamakhya Temple : The Icon of Guwahati

Assam, one of the seven sisters of the North Eastern states of India, is known for its abundance of wildlife, archaeological sites, tea plantations and its rich culture and heritage. The state is located to the south of the Eastern Himalayas along the Brahmaputra and Barak River Valleys and covers an area of approximately 78,000 sq. km. The state is famous for production of tea and Assam Silk and is also the first place in Asia where oil drilling was carried out. The economy of the state is largely dependent on the wildlife tourism, owing to the presence of Kaziranga National Park as well as Manas National Park which are UNESCO World Heritage sites.

Guwahati, previously known as Pragjyotispur, is considered as the gateway of North-east India. It is one of the largest metropolis of Assam and is known as the temple city because of the dominance of temples in and around the city. The city lies between the banks of Brahmaputra River and the foothills of Shillong Plateau.

Owing to the presence of sacred sites like Umananda, Ugratara Temple, Balaji Temple, etc. the city has become a potential destination for religious tourism. Temple architecture in Guwahati has lent a rich cultural and heritage identity to the city, while underlining the values, beliefs and the evolution of the city over the time. One of the significant attractions of the city is the Kamakhya Temple that sits atop the Nilachal Hills located by the southern bank of river Brahmaputra. The Kamakhya temple is one of the 51 Shakti Pithas in India. Although the actual time of construction of the temple is yet to be ascertained, the natives believe that the temple had been constructed around 4th - 5th century A.D. According to Archaeological Survey of India, there were more than 100 temples and shrines in the Nilachal hills but over the time, due to several reasons only 42 of them are left. The identity of Kamakhya Temple is not limited to merely a religious place but rather a site of archaeological importance which is famous for its tantric practices and the annual fair of Ambabuchi Mela. Within the Nilachal Hill, there are a number of temples dedicated to different forms of the Mother Goddess as the Dasamahavidya including Bhubaneswari, Bagalamukhi, Chinn-amasta, Tripura Sundari and Tara. Apart from these temples, there are numerous sculptures that had been built along the pedestrian route to the temple. Inside the Kamakhya Temple in the Garbagriha, there is a sculpture of the Goddess amidst a natural spring oozing from the stones underneath. Even today, several beautifully crafted sculptures adorn the walls of the temple. Under the supervision of the temple complex, there are several protected forests and ponds in the Nilachal hills which are known as 'Kundas' and believed to be sacred ponds. Subhagya Kunda, one of the largest ponds, is inside the main temple precinct. According to Government of India, Ministry of Tourism's survey report, Kamakhya Temple attracts a huge number of devotees every day. The Tourism Policy of Assam, 2017, suggested a brand new Nilachal in the next five years to further boost its tourism as the temple is a potential source of revenue generation for the state.

These temple precincts showcase the complex and intricate layers of evolution of traditional architectural forms in North-east India and play a crucial role in retaining the traditional values in the face of modernisation.

Priyabrat Chakraborty
R.O. Guwahati

CHABIMURA

There are many tourist spots in Tripura and the visitors here have a special natural fascination for 'Chabimura'. Chabimura is famous for rock carvings of gods, goddesses on mountain walls and small, big caves too. Besides Gomati River at Amarpur Subdivision under Gomati district, it is just 82 kms. away from the main city and capital Agartala. Chabimura shows the beauty of nature very closely. To see the actual beauty of Chabimura one has to take a boat, feel the breeze coming from Gomati to actually the beautiful rock carvings on Chabimura mountain walls and also some beautiful small natural fountains and caves.

These carvings date back to 15-16th centuries. Chirruping of birds, whistling wind through the trees, the sound of water from natural fountains, the waves and sound of river water when boatman row the boat, sometimes the call of wild animals in far off forests makes you feel as if one is talking to the nature from very close. The biggest idol of 'Maa Durga' in rock carvings is about 20 feet high, one can touch and take her blessings. There are many small caves in the mountain which can be seen from the boat but if one wants to experience those waterfalls and caves personally, one will have to climb the mountain and go to caves. There are many bats and snakes, but the local people say that these don't harm. Lots of tourists come here every year especially in winters to avoid the slippery walk in rainy season. It is a famous picnic spot too. If you are taking the journey of Chabimura, take some snacks and water with you because the boat journey will take 2-3 hours and you may feel hungry. Motor boats are also available.

How to go there: Boating can cost ₹ 400-1000. If you want to stay, arrangements are also there at Sagarika Paryatan Niwas in Fatik Sagar, Amarpur.

Roadmap direction from Agartala City: Almost 80kms away from the city, it will take 2 and half hours to reach Amarpur via Amarpur-Udaipur Road. From Agartala Airport or Agartala Railway Station take an auto to Nagerjala and then take a bus to Amarpur. Then reserve a small car or Maruti to Chabimura.

Nipa Das
Bishalgarh Branch

उज्जयंता पैलेस

त्रिपुरा के शाही कल्चर के साथ-साथ माणिक्य राजवंश की गाथा को बयां करता हुआ उज्जयंता पैलेस यहां के शानदार धरोहरों में शामिल है. सफेद संगमरमर से चमकता हुआ यह महल राजधानी अगरतला में स्थित है. महल का निर्माण भले ही काफी सालों पहले हुआ है लेकिन इसकी खूबसूरती आज भी वैसी ही बरकरार है. सन् 1901 में राजा राधाकिशोर माणिक्य द्वारा इस महल का निर्माण कराया गया था. इंडो-ग्रीक स्टाइल में बने इस महल के आसपास कई सारे छोटे-छोटे बाग-बगीचे और मंदिर भी हैं, जिनमें लक्ष्मी नारायण, उमा-माहेश्वरी, काली और जगन्नाथ मंदिर प्रमुख हैं. हालांकि अब इस महल का इस्तेमाल कुछ समय तक राज्य की विधानसभा की बैठकों के लिए किया जाता है लेकिन अब टूरिस्टों के लिए इसे म्यूज़ियम में तब्दील कर दिया गया है. जो नॉर्थ-ईस्ट इंडिया का सबसे बड़ा म्यूज़ियम है.

उज्जयंता महल की खूबसूरती – 800 एकड़ में फैले इस महल में सिंहासन रूम, दरबार हॉल, लाइब्रेरी और रिसेप्शन हॉल है. इस महल को एलेक्जेंडर मार्टिन ने डिज़ाइन किया था. महल में अलग-अलग जगहों का आर्किटेक्चर देखने को मिलता है. महल में तीन ऊंची गुंबदें हैं. सबसे ऊंचे गुंबद की ऊंचाई 86 फीट है. महल की खूबसूरती बढ़ाने का काम करते हैं, म्यूज़िकल फाउंटेन, जो मुख्य द्वार पर लगे हैं. कहा जाता है उस समय इसे बनवाने में लगभग 10 लाख रूपए खर्च हुए थे. महल का नामकरण रविन्द्रनाथ टैगोर ने किया था.

म्यूज़ियम की खासियत – म्यूज़ियम में 16 गैलरी हैं. हर एक गैलरी में पूर्वोत्तर की अलग-अलग झलकियां देखने को मिलती है. ऐतिहासिक, आर्किटेक्चर और पारंपरिक संस्कृति के अलावा त्रिपुरा के त्योहार, 14 खास पूजनीय भगवान, 20 बांस की जातियां और मुख्य जन-जातियों के बारे में भी यहां देखने, जानने को मिलता है.

कैसे पहुंचे : हवाईमार्ग - दिल्ली, गुवाहाटी, कोलकाता और मुंबई जैसे सभी बड़े शहरों से यहां तक के लिए फ्लाइट की सुविधा मौजूद है.

रेलमार्ग – अगरतला 5(किमी) कुमारघाट (160 किमी) और धर्मनगर(200 किमी) ये तीनों ही यहां तक पहुंचने के सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन हैं.

सड़कमार्ग – सिलचर, गुवाहाटी, शिलांग और धर्मनगर से यहां तक पहुंचने के लिए बसें उपलब्ध रहती हैं.

एस के रूबेल
बीरचन्द्र नगर शाखा, त्रिपुरा

MANIPURI OR MEITEI TRADITIONAL COSTUMES

Manipur, in the far north-eastern part of India, is famous for its art and culture. Here, many communities like Meiteis, Tribals, Muslims, etc. inhabit which have their own culture and costumes. Meitei, the main tribe of Manipur, carries its own unique characteristics in costumes. They carry ethnic fashion trend with much elan and is easy to wear.

Costume for women:-

1) Phanek :

It comprises of two pieces of cloth stitched in the middle and is either made on loom manually or by machines. There are different types of phanek and each panek is usually worn on the auspicious occasion. The different types of Phanek are:-

a) Pumngou Phanek :-

It is a plain one with single line or no border usually worn during religious ceremonies, shraddha, mouring time. It is made from cotton. It is called as Mayanglang (Mayang means non Manipuri and lang means loom)

b) Mayek Naibi Phanek :-

Mayek Naibi phanek is either made of cotton or silk. This phanek is worn only on auspicious ceremonies. It has two or three stripes of different colours and the border is embroidered with 'khoiakoibi mayek' design (khoi means bee hook and akhoibi means round). But now-a-days many designs and patterns are used viz. sambal mayek khoicharong etc. The design is first printed using wooden block curved with border. The typical Mayek Naibi Phanek is known as 'Phigee Phanek' made from silk and is compulsorily worn by the bride on the day of Mangani Chakouba (a lucheon made at the bride's place on the fifth day after marriage).

c) Muga or Silk Phanek :-

This type of phanek is also worn on occasions like marriages, religious ceremonies. Here, the border design is like the moirangphee or temple. The silk is usually from the 'Khurkhul' and the 'Leimaram' (the native towns in Manipur).

d) Chinphi or Tungkap Phanek :-

This is another type of Mayek Naibi Phanek where there is no border. This phanek is smaller as compared to the usual phanek and is offered to the female dieties of Meiteis to dress the female babies on the day of 'Swasti Puja Anscha Kumba' (ceremonies where the first solid feeding of the baby is done).

2) Innaphi :-

It is a shawl worn over the blouse by ladies. For daily use, it is simple. Those worn during marriage and other auspicious occasions are woven from silk and cotton manually. The famous Innaphi is known as 'Raniphi' as it is first designed by Chumthang Rani. The fabric used is semi-transparent. Different designs and patterns are embroidered on the cloth and are also available in different colours. According to the length and size, Innaphi is of two types.

a) Rani Mapum :-

In this type, two pieces of cloth are stitched together. The length and breadth are same and embroidered with heavy works and pair with Mayek Naibi Phanek.

b) Rani Manao :-

It is single and smaller than Rani Mapum in length and breadth. The embroidery is lightly designed and it pairs mostly with the muga or silk phanek.

Custume For Men

1) Pheijom and Pumyat :

Pheijom is a white, cotton dhoti worn on the occasions like marriage, shraddha (death ritual) along with the Pumyat. While wearing Pheijom, pleats are made in the front which act as a design. Earlier there was only a cotton fabric with a line at a border but due to fashion changes Pheijom and Pumyat are also available in silk fabric with designed border. They usually pair with a shawl called 'Lengyanphee'.

2) Khamen Chatpa :

This is usually worn by the poets, priests and awarded person. It is usually made from silk and has a circular design with large and small floral motifs and is believed to resemble the back of a serpent i.e. Pakhangba. It is called Khamen Chatpa because the design was first printed in brinjal colour (Khamen in Manipuri).

In Laiharaoba (festival of Sylvan dieties), Pennakhongba (the person who plays one musical instrument of Manipur) also wears this khamenchatpa dhoti with bangles, tal and resom furit.

With the change of time and modernization, now-a-days Meitei men and women wear the western outfits like pants, shirts, kurti. Still during special occasions and festivals, they dress up in their traditional attire.

Humanthem Benkin Devi
R.O. Guwahati

Flavours of Manipur

Chagempomba

Hawaijaar

Maroi thongba

Hawai thongba

Eromba

Kangsoi

Paknam

Kellichana

Singju

The climate of Manipur perfectly suits the cultivation of rice and is served as the staple food in Manipur. Green vegetables and fruits are also grown in own garden and farms.

Manipuris have rice with spicy food (morok metpa or singju). Food is made spicy with types of chillies viz. green, dried, king, etc. along with garam masala and other spices. Manipuri cuisine is quite simple.

Some popular daily dishes include Iromba, Kangsoi, Hawai thongba, Naga thongba, Morok metpa and Singju. Iromba is prepared by mashing boiled or steamed vegetables with roasted or fermented fish (ngari) and chillies. A family has Eromba at least four to five times a week.

Kangsoi is one of the easiest dishes to cook which is very tasty and nutritious. It is a vegetable stew. Normally local dried fish-'ngari' is added. Almost all the vegetables can be put in making kangsoi. After heavy indulgence of oily and fatty foods people prefer kangsoi. It is the most favourite dish of many health concious people. Morok means chilli and metpa means mashing. Chillies are mashed with some salt and roasted or boiled (steamed) ngari. According to one's wish, one can add onion or other herbs. Morok metpa is absent only when there is singju (Salad made with fresh green vegetables). If available, one can add lotus root, banana flower, green papaya, etc. It is flavoured with besan, ground perila seeds and ngari. Ngari is an essential ingredient of Manipuri cuisine.

Hawai (lentils) thongba (cooking) is made by first boiling the lentil and then cooking it with little oil. When one is short of time, he switches to healthy 'Hawai Thongba'.

Some other popular dishes are Ooti, Chagempomba, Paknam, Killi Chana, Sana Thongba, Maroi Thongba. Ooti has its own varieties. When made only with green leaves, it is Ooti Asangba (green). Other types are Mangal Ootti (Dried Peas), Ushoi Ooti (Bamboo Shoot), Torbot Ooti (Bottle Gourd), Sagol Hawai Ooti (Black Lintils), Chagem Ooti (green vegetables and rice). The mandatory ingredient of Ooti is baking soda. Children and old people relish Ooti. Chagempomba is a scrumptious dish. Hawaijar (fermented soyabean) is the main ingredient of Chagempomba. Other ingredients are mustard (finely chopped), local dried fish, rice, paokhon (dil) and other herbs.

Paknam is a savoury cake. It also has its varieties-Laphu Tharo(bananaflower) Paknam, Besan Paknam, Kanglayen Paknam (Splitgill Mushroom, Nganam (Fish). A paste is made with besan and other ingredients as per choice, then it is wrapped up in a turmeric leaf, and is cooked by baking or just steaming. Paknam is really yummy and popular snack.

Kelli chana - In this, spicy peas are served as a snack. It is a famous street food. Kelli chana goes perfectly with hot tea and coffee. Sana Thongba is Manipuri paneer curry. It is a traditional dish made with paneer and milk and is a prominent vegetarian dish served in every shop here. Its milk based gravy makes it different from other paneer recipes. Maroi Thongba is also a traditional vegetarian dish served in any vegetarian feast. Many people are very fond of Maroi Thongba.

Manipuri cuisine is simply organic and healthy. Dishes are cooked based on the seasonal products. The dishes taste very different from the entire Indian culture because of the use of the various aromatic herbs and roots that are unique in the region.

Rani
Imphal branch, Manipur

उगते सूरज का प्रदेश, अरुणाचल

यूं तो प्रकृति का हर रूप सुनहरा होता है. दिल-ओ-दिमाग को सुकून एवं शांति प्रदान करता है. हम सभी को पुनः ओज़ से भर देता है. पर आज हम जिस क्षेत्र की बात करने जा रहे हैं वो है पूर्वोत्तर की सात भगिनियों में से सबसे विशेष-अरुणाचल प्रदेश. शब्दशः बात करें तो 'अरुण' (उदित सूर्य) एवं 'अचल' (नहीं चलने वाला अर्थात पर्वत) दो शब्दों का मिलन है अरुणाचल, जिसका तात्पर्य हिन्दी में कहिए तो 'उगते सूर्य का पर्वत' या अंग्रेज़ी में कहें तो 'लैंड ऑफ द राइजिंग सन'. कुछ भी कह लीजिए यह प्रदेश अपनी विविधताओं में अनूठेपन को समेटे हुए आपका मन मोहित करने का कोई भी अवसर नहीं चुकता है. यह प्रदेश अपने नैसर्गिक सौन्दर्य, सदाबहार चोटियों, समृद्ध विरासत, भाषायी विविधताएँ एवं नयनाभिराम वन्य-जीवों के कारण देश भर में अपना विशिष्ट स्थान रखता है. चूंकि यह प्रदेश भारत के सबसे पूर्व में अवस्थित है अतः भगवान भास्कर देव की सबसे पहली किरण यहीं पड़ती है. इसी कारण इसे नाम दिया गया है - अरुणाचल !

आइए, इसके इतिहास एवं पर्यटन स्थलों के साथ जानते हैं इसके भौगोलिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विरासत के बारे में :-

भौगोलिक संरचना : भौगोलिक दृष्टि से यह पूर्वोत्तर सातों राज्यों में सबसे बड़ा राज्य है, जो पश्चिम में भूटान, पूर्व में म्यांमार, उत्तर एवं पूर्वोत्तर में चीन एवं दक्षिण में असम के मैदानों से घिरा है. 83,743 वर्ग किलोमीटर में फैले इस राज्य की अधिकतम आबादी अन्य पूर्वोत्तर राज्यों की तरह मूल रूप से तिब्बती-बर्मी मूल की हैं. इसका अधिकांश भाग हिमालय से ढंका है. हिमालय पर्वतमाला का विस्तार इसे चीन से अलग करते हुए जब नागालैंड की ओर मुड़ता है तो इसे भारत और म्यांमार (पूर्व में बर्मा) के बीच चांगलांग एवं तिरप जिले में एक प्राकृतिक सीमा बनाती है. ये पर्वत हिमालय पर्वत श्रृंखला के पूर्व के पर्वतों से अपेक्षाकृत कम लंबे हैं. कांग्तो, गोरीचन एवं कांगसांग चोटी इस क्षेत्र की हिमालय की ऊंची चोटियों में शुमार है.

इस प्रदेश का मौसम भिन्न-भिन्न स्थानों पर भिन्न होता है. ऊपरी हिमालय पर तिब्बत के समीपवर्ती क्षेत्र की जलवायु अल्पाइन या टुंड्रा प्रदेशों जैसी है, जबकि मध्य हिमालय के समीप इस प्रदेश में मौसम समशीतोष्ण हो जाता है. इस कारण यहां सेब, संतरा आदि की खेती होती है. प्रदेश के निचले क्षेत्र उप-उष्णकटिबंधीय हैं जिस कारण यहाँ ग्रीष्म ऋतु के साथ-साथ हल्की शरद ऋतु रहती है. यह भारी वर्षा वाला प्रदेश है. इस कारण यहाँ ओक, चीर, फर, और जुनिपर जैसे वृक्षों के साथ-साथ साल और सागौन जैसे मुख्य आर्थिक प्रकार के वृक्ष भी पाए जाते हैं.

यहाँ की प्रमुख नदियों में ब्रह्मपुत्र, दिबांग, लोहित एवं सुबनसिरी प्रमुख है. यूं तो भारतीय नदियां स्त्रीलिंग होती है किन्तु ब्रह्मपुत्र को उसकी विशालता की वजह से 'नद' कहा जाता है. ब्रह्मपुत्र नद तिब्बत से दिबांग भारत तिब्बत सीमा पर स्थित 'क्या दर्रे' के समीप निकलती है, लोहित ब्रह्मपुत्र की सहायक नदी है, जबकि सुबनसिरी ब्रह्मपुत्र की सबसे बड़ी उपनदी जो अरुणाचल में तीव्र प्रवाह के साथ बहते हुए असम के मैदानी भाग में चली जाती है.

इतिहास : यह प्रदेश भारतीय संघ का 24वां राज्य है. 1972 तक यह एक पूर्वोत्तर सीमांत एजेंसी के नाम से जाना जाता था. सन 20 जनवरी 1972 को इसे केंद्र शासित प्रदेश का दर्जा मिल गया. पहला आम चुनाव 1978 के फरवरी माह में करवाया गया. 20 फरवरी 1987 को इसे पूर्ण राज्य का दर्जा मिल गया. अरुणाचल प्रदेश में कुल 25 जिले हैं. प्रदेश की राजधानी ईटानगर है. यहां 14वीं सदी में निर्मित ईंटों का किला है, जिसकी वजह से इस जिले का नाम पड़ा है, ईटानगर !

इस प्रदेश का उल्लेख कल्कि पुराण एवं महाभारत में भी मिलता है. पुराणों में इसे प्रभु पर्वत कहा गया है. परशुराम ने इसी प्रदेश में अपने पापों का प्रायश्चित किया था, ऋषि व्यास ने इसी स्थान पर आराधना की थी. राजा भीष्मक ने यहां अपना राज्य बसाया था तथा भगवान कृष्ण ने रुक्मिणी से यहीं विवाह किया था.

अर्थव्यवस्था : अरुणाचल प्रदेश की अर्थव्यवस्था मूल रूप से कृषि प्रधान है. आम नागरिकों के जीवनयापन का मुख्य आधार 'झूम' खेती पर ही आधारित है. यद्यपि आजकल यहाँ अन्य नकदी फसलों यथा आलू, बागबानी वाली फसलें जैसे सेब, संतरे एवं अनन्नास आदि को प्रोत्साहित किया जा रहा है.

चूंकि प्रदेश का लगभग 61000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र घने जंगलों से भरा है अतः वन्य उत्पाद राज्य की अर्थव्यवस्था का दूसरा महत्वपूर्ण भाग है. आरा मिल एवं प्लायवुड को कानूनी रूप से बंद किए जाने के बाद चावल मिल, फल परीक्षण इकाइयाँ, हस्तशिल्प और हथकरघा यहां के मुख्य उद्योग है. स्थानीय लड़के-लड़कियों को विभिन्न कुटीर उद्योग एवं शिल्पों में प्रशिक्षित किया जा रहा है ताकि उन्हें जीविकोपार्जन में सक्षम बनाया जा सके. ये प्रशिक्षण - सह - शिल्प केंद्र स्थानिकों को उनके उत्पादों के लिए बाज़ार की तलाश में उन्हें सहायता प्रदान करते हैं. इसके अतिरिक्त खनिज सम्पदा के क्षेत्र में भी यहाँ डोलोमाइट, चुना-पत्थर, ग्रेफ़ाइट, माइका, लौह अयस्क, तांबा जैसे कई खनिज पदार्थ के भंडार है.

सामाजिक जीवन : अरुणाचल प्रदेश में कुल 26 प्रमुख जनजातियां और कई उपजातियां निवास करती हैं. अधिकतर समुदाय जातीय रूप से समान एवं एक मूल के होने के बावजूद

एक दूसरे से भौगोलिक रूप से अलग -अलग हैं. इनकी वेशभूषा, भाषा, रीति-रिवाज एवं रहन-सहन में विशिष्टताएं हैं.

अरुणाचल प्रदेश में मूल रूप से अंग्रेज़ी बोली जाती है. अंग्रेज़ी के अतिरिक्त यहां संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल हिन्दी (अरुणाचली हिन्दी), बंगाली, नेपाली एवं असमिया भाषाओं का प्रयोग बहुतायत होता है. अन्य प्रमुख प्रचलित भाषाएं हैं: अदि, मोनपा, ग्लो, न्यीशी, तंगष, वांचो, मिश्मी, नोक्टे आदि. यहां का राजकीय पशु मिथुन, राजकीय पक्षी ग्रेट इंडियन होर्नबिल, राजकीय फूल रेट्सा एवं राष्ट्रीय वृक्ष होलोंग है.

अरुणाचल प्रदेश को तीन सांस्कृतिक समूहों में विभाजित किया जा सकता है. यहां तीन धर्मों का पालन किया जाता है. कामेंग एवं तवांग जिले में मोंपा एवं शेर्दुक्पेन ने, जो उत्तरी तिब्बतियों से मिलते जुलते हैं, बौद्ध धर्म की लामा परंपरा को अपनाया है. मेम्बा और खाम्बा सांस्कृतिक रूप से इनके समान होते हैं, जो उत्तरी सीमा की पहाड़ों पर रहते हैं. दूसरा समूह तिरप जिले के समीप नोक्टे एवं वांचो का है, जिन्होनें लंबे समय तक दक्षिण में आसाम के लोगों के साथ संबंधों के कारण हिन्दू धर्म अपना लिया है. इन लोगों में शिकारों के सिर इकट्ठा करने की प्राचीन परंपरा है. तीसरा समूह आदि, आका, अपातानी, निशिंग आदि का है. ये कुल जनसंख्या का एक प्रमुख हिस्सा है. आज भी यह समूह अपनी पुरातन मान्यताओं और प्रकृति तथा डोनयी-पोलो(सूर्य व चंद्रमा) की पूजा पर विश्वास रखते हुए देशी संकल्पनाओं को जीवित रखे हुए हैं.

अपातानी एवं आदि लोग बेंत तथा बांस की आकर्षक वस्तुएं बनाते हैं. वांचो लोगों द्वारा लकड़ी एवं बांस पर नक्काशी की गई मूर्तियाँ इन्हें अपनी एक अलग पहचान देते हैं.

संस्कृति, वेशभूषा व पर्व त्योहार : अरुणाचल प्रदेश यूं तो प्रकृतिक परम्पराओं का केंद्र रहा है, जो आज भी उनके पर्व - त्योहारों एवं रीति - रिवाजों सहित उनके संस्कारों से साफ तौर पर परिलक्षित होता है. यहाँ का एक बड़ा समुदाय बौद्ध धर्म में आस्था रखता है. यहाँ हिन्दू धर्म की भी झलक कई स्थानों पर देखने को मिलती है.

यहाँ के निवासियों की वेशभूषा यद्यपि काफी सामान्य है, फिर भी यह एक अलग संस्कृति प्रदर्शित करती है. महिलाएं अपनी दिनचर्या में कमर तक एक लुंगी लपेट कर रहती है और एक झबलानुमा वस्त्र कमर के ऊपर पहनती हैं. यहाँ पुरुष सामान्यतः पैंट-शर्ट ही पहनते हैं, फिर भी कुछ समुदाय अथवा विचारधारा के लोग कमर से नीचे घुटने से ऊपर तक घोटी एवं कमर से ऊपरी भाग के लिए एक फटका धरण करते हैं. उत्सवों के समय अलंकार के तौर पर कुछ पक्षियों के पंख के साथ एक मुकुटनुमा आभूषण धारण करते हैं.

अरुणाचल प्रदेश में त्योहार या तो कृषि से संबंधित है, जिसमें अच्छी फसल हेतु प्रार्थना निहित होती है या फिर भगवान को धन्यवाद देने का एक रिवाज होता है. आदि लोगों के मोपिन व सोलुंग, मोन्पा और शेर्दुक्पेन लोगों का लोसार और हिल मेरी लोगों का बूरी-बोट यहाँ के प्रमुख त्योहारों में शुमार है. लोसार यहाँ का एक प्रचलित त्योहार है, इसे सामूहिक रूप से मनाया जाता है, परंतु इनका आयोजन बौद्ध धर्म के पंडितों (लामा) द्वारा पूरे रीति-रिवाज के साथ किया जाता है. सामूहिक रूप से इसके आयोजन के पीछे का कारण इस पर्व का संरक्षण है, ताकि उत्सव के रूप में यह परंपरा आने वाली पीढ़ियों तक अस्तित्व में रहे. अन्य पारंपरिक समारोहों में प्रमुख है:- मेपिन, ल्हाबसंगा, बोरटन, चेरटन, फांगले, रेह, तमदालू, ओजियले, संकेन इत्यादि.

दर्शनीय स्थल : ऐसे तो सम्पूर्ण अरुणाचल प्रकृतिक नज़ारों से पूरित पहाड़ी दृश्यों के लिए प्रसिद्ध है. यहाँ के आकर्षण के एक प्रमुख केंद्र है :-

ईटानगर का किला – यहाँ आने वाले पर्यटक ईटानगर का किला देखने अवश्य जाते हैं. 14-15 सदी में निर्मित इस किले के कई खूबसूरत दृश्य देखे जा सकते हैं.

पौराणिक गंगा झील – ईटानगर से 6 किलोमीटर दूर स्थित है यह गंगा झील !

झील के समीप जंगल भी है जो सुंदर पेड़-पौधे व वन्य-जीवों से भरा है. फल-फूलों के बगीचे भी यहाँ आकर्षण का केंद्र है.

बौद्ध मंदिर : प्रदेश के प्रमुख आकर्षण के केंद्र में यहां स्थित बौद्ध मंदिर है. यह एक रमणीय मंदिर है, जिसकी कलाकृति तिब्बती शैली की है. इस मंदिर की छत पीली है. इसके छत से पूरे ईटानगर के खूबसूरत दृश्य देखे जा सकते हैं. बौद्ध गुरु दलाई लामा भी इसकी यात्रा कर चुके हैं.

जवाहर लाल नेहरू संग्रहालय : उपरोक्त लिखित बौद्ध मंदिर परिसर में ही एक संग्रहालय का भी निर्माण किया गया है जिसका नाम है- जवाहर लाल नेहरू संग्रहालय. यह संग्रहालय एक आईना है, जहां पूरे अरुणाचल की छवि देखी जा सकती है.

पापुम पारे : ईटानगर से 20 किलोमीटर दूर अवस्थित पापुम पारे अरुणाचल प्रदेश का एक अत्यंत सुंदर स्थान है. चूंकि यह क्षेत्र हिमालय की तराई में अवस्थित है और यहाँ से वृहद हिमालय की अनेक चोटियों को देखा जा सकता है, इसलिए यह पर्यटकों के टूर-प्लान की एक प्रमुख इकाई अवश्य रहती है.

इसके अतिरिक्त दोन्यी-पोलो विद्या भवन, इन्दिरा गांधी उद्यान, विज्ञान भवन एवं अभियांत्रिकी संस्थान यहाँ के अन्य प्रमुख आकर्षण केंद्र है. ऐसा कहा जाता है कि जीवन में एक बार पूर्वोत्तर की सैर अवश्य करनी चाहिए और पूर्वोत्तर की सैर में अगर अरुणाचल नहीं देखा तो आपकी सैर अधूरी समझिए.

सावन सौरभ
कें.का., मुंबई

पूर्वोत्तर का वन्य जीवन

ईश्वर द्वारा निर्मित इस संसार में अनेक प्राणियों का वास है. जिनमें कुछ ऐसे प्राणी भी है जो कि अपने जीवनयापन हेतु पूर्ण रूप से प्रकृति पर निर्भर है. जी हाँ, हम बात कर रहे हैं, वन्य जीवों की जो पूर्ण रूप से प्रकृति के सानिध्य में ही जीते हैं. वन ही उनका घर होता है. वहीं वह अपने सम्पूर्ण जीवन का निर्वाह करते हैं. भारत जैसे विशाल देश में विविध प्रकार के वन्य जीव पाये जाते हैं. चूँकि भौगोलिक दृष्टि से यहाँ विविधता है और उत्तर-पूर्व राज्य अपने आप में ही अनूठे हैं. उत्तर-पूर्व राज्यों की बात करते है तो इसमें कुल सात राज्य आते हैं. जो इस प्रकार है:- अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम, नागालैंड एवं त्रिपुरा. इन क्षेत्रों में प्रकृति की सुंदरता अपनेआप में ही पूर्ण है. प्रत्येक वर्ष अनेक सैलानी अपने व्यस्ततम जीवन से कुछ पल चुरा कर इन क्षेत्रों में घूमने आते हैं. इस क्षेत्र में अनेक प्रकार के वन्य जीव पाये जाते हैं. उक्त वन्य जीवों के पालन पोषण हेतु सरकार ने विभिन्न अभयारण्य भी बनवाए हैं :-

नोंगखाइलेम वन्य जीवन अभयारण्य :- नोंगखाईलेम वन्य जीवन अभयारण्य मेघालय राज्य के रीभोई जिले में लाईलाड ग्राम के निकट स्थित है. यह पूर्वोत्तर भारत के सबसे सुन्दर एवं लोकप्रिय अभयारण्यों में से एक है. इसका विस्तार 29 कि.मी. के क्षेत्र में है और यहां का पर्यटक गंतव्यों में अत्यन्त प्रसिद्ध स्थान है. यहां के वन्य जीवन में विविध प्रकार के पशु एवं पक्षी हैं, जिनमें स्तनधारियों, एवियन, कृंतक, सरीसृप और कई अन्य प्रजातियां दिखाई देती हैं. वन्य जीवन के अलावा यहां का वन प्रदेश हरियाली एवं पादपों की ढ़ेरों प्रजातियों से भी परिपूर्ण है. क्षेत्र का सबसे नीचे भूभाग लाईलाड ग्राम के निकट हैं जो सागर सतह से मात्र 200 मी. पर स्थित हैं जबकि सबसे ऊंचा भाग पूर्वी एवं दक्षिणी हैं जिनकी अधिकतम ऊंचाई 950 मी. तक है. इस क्षेत्र को 1981 में अभयारण्य घोषित किया गया.

नोंगखाइलेम अभयारण्य में मेघालय के वनों के बहुत से मानव से अछूते भाग भी हैं. इनमें से बहुत से भागों में जोंक आदि का बाहुल्य है. यहां बसने वाली अनेक वन्य जीव प्रजातियों में से कुछ हैं - रॉयल बंगाल टाईगर, भारतीय सांड (बाइसन), हिमालयन काला भालू, क्लाउडेड लैपर्ड आदि. इनके अलावा पक्षियों की भी बहुत सी रंगीन

व शानदार प्रजातियां मिल जाती हैं जिनका निवास यहां के वनों की झाडियों व वृक्षों में है. इस तरह यह स्थान पक्षी सैलानियों के लिये भी वरदान है. इनमें से कई प्रजातियां जैसे भूरा हॉर्नबिल, मणिपुर बुश क्वैल, रूफ़स नेक्ड हॉर्नबिल आदि हैं. बहुत से विदेशी प्रवासी पक्षी भी दूर क्षेत्रों या देशों से इस अभयारण्य में आते हैं. कीड़े और मकड़ियों की भी प्रजातियां यहां पायी जाती हैं.

काजीरंगा नेशनल पार्क :– असम की शान के रूप में काजीरंगा नेशनल पार्क प्रसिद्ध है. जैसा कि सभी जानते हैं, काजीरंगा नेशनल पार्क एक सिंग वाले गेंडे का घर है और वर्ष 2006 में बाघ रिजर्व के रूप में भी घोषित किया गया है. यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल में शामिल काजीरंगा नेशनल पार्क असम के दो जिलों–गोलाघाट और नोगागांव के अंतर्गत आता है. काजीरंगा नेशनल पार्क सिर्फ एक सिंग के गेंडे या फिर बाघों के सरंक्षण के लिए ही नहीं जाना जाता बल्कि आप इस पार्क में पायी जाने वाली अन्य प्रजातियों में एशियाई हाथी, एशियाई जल भैंसे और स्वैप हिरण को भी देख सकते हैं.

इस खूबसूरत पार्क में देशी समेत प्रवासी पक्षियों को भी देखा जा सकता है. इस पार्क की खास बात यह है कि आप यहां हाथी सफारी का मजा भी ले सकते हैं जोकि महावत द्वारा प्रशिक्षित किये जाते हैं. हाथी की सवारी का मजा लेते हुए जानवरों को निहारना वाकई बेहद रोमांचक है.

होलोगापार गिब्बन वन्य जीव अभयारण्य :– भारत में एकमात्र वन्यजीव अभयारण्य है, जो पहाड़ी गिब्बन का घर है. यह छोटा वन्यजीव अभयारण्य हाथी, बाघ, तेंदुए, पैंगोलिन, सुअर–पूंछ वाले मैकक, असमिया मैकक, स्टंप पूंछ मैकक, रीसस मैकक और कैप्ड लैंगर्स का घर है. इसके अलावा यहां भारतीय पाइड हॉर्न बिल, ओस्प्रे, हिल मन्ना और कालीज फिजेंट जैसे अभयारण्य में कई प्रकार के प्रवासी और निवासी पक्षी शामिल है.

मानस नेशनल पार्क :– यह असम राज्य के सबसे प्रसिद्ध राष्ट्रीय उद्यानों में से एक है. यूनेस्को प्राकृतिक विश्व धरोहर स्थल, परियोजना टाइगर रिजर्व, बायोस्फीयर रिजर्व और हाथी रिजर्व के रूप में घोषित किया गया है. हिमालय की तलहटी में स्थित यह अभयारण्य भूटान के रॉयल मानस नेशनल पार्क के निकट है. यह पार्क कई प्रकार के लुप्तप्राय जानवरों जैसे कि हिसपिड हरे, असम रूफड टर्टल, पायग्मी होग और गोल्डन लंगुर का घर है. इसमें जंगली जल भैंस की पर्याप्त आबादी भी है. स्तनधारियों की 55 से अधिक प्रजातियां, पक्षियों की 380 प्रजातियां, 50 प्रकार के सरीसृप और पार्क में 3 प्रकार के उभयचर पाए जाते हैं. यहां आने वाले पर्यटक जंगल सफारी, प्राकृतिक ट्रैक का भी मजा ले सकते हैं. राष्ट्रीय उद्यान कोकराभार, चिरांग, बक्का, उदलगुड़ी और दररंग के कई जिले के अंतर्गत आता है.

नमेरी नेशनल पार्क :– तेजपुर से 35 कि.मी. दूर स्थित नमेरी नेशनल पार्क सोनितपुर जिले के अंतर्गत आता है. लोअर हिमालय की तलहटी में स्थित, राष्ट्रीय उद्यान वनस्पतियों और जीवों की कई प्रजातियों का घर है. इस पार्क में हाथियों के साथ–साथ तेंदुए, बिसन, काले भालू, जंगली सूअर, ढ़के हुए लैंगर्स भी पाये जाते हैं.

पक्षी प्रेमी इस पार्क में हॉर्नबिल, प्लूवर, लकड़ी के बतख, मधुमक्खी खाने वाले और बब्लर आदि को देख सकते हैं.

ओरंग नेशनल पार्क :– ओरंग नेशनल पार्क को मिनी काजीरंगा पार्क भी कहा जाता है. इस पार्क में एक सिंग वाले गेंडे भी पाए जाते हैं. सन् 1985 में इसे अभयारण्य घोषित किया गया था और 13 अप्रैल 1999 में इसे राष्ट्रीय उद्यान बना दिया गया. हर साल इस नेशनल पार्क में प्रवासी पक्षी पहुंचते हैं, जिनमें व्हाइट पेलिकन, एडजुटेंट स्टोर्क, शेल्डक, मल्लार्ड, किंग फिशर और वुडपेकर जैसे पक्षी शामिल हैं. जंगली जानवरों में तो यहां शाही बंगाल बाघ, तेंदुए, भारतीय पेंगोलिन, सिवेट्स, पायग्मी हॉग भी पाये जाते हैं.

चक्रशीला वन्यजीव अभयारण्य :– चक्रशीला वन्यजीव अभयारण्य भारत का दूसरा गोल्डन लंगूर का निवास स्थान है. यह पहले एक आरक्षित वन था लेकिन वर्ष 1994 में इसे वन्यजीव अभयारण्य घोषित किया गया था. इस पार्क में पर्यटक 14 विभिन्न प्रजातियों की सब्जियों, 60 प्रकार की मछली और उभयचर की 11 प्रजातियों के अलावा पक्षियों की 273 प्रजातियों को देख सकते हैं. वन्यजीव अभयारण्य में दो झीलें हैं जो इस पार्क की सुन्दरता को बढ़ाती हैं. इन झीलों को धीर बील और डिप्लाई बील कहा जाता है और यह अभयारण्य दोनों तरफ स्थित हैं.

पोबीटोरा वन्य जीव अभयारण्य :– पोबीटोरा वन्य जीव अभयारण्य गुवाहाटी से 50 कि.मी. दूर मारीगांव जिले में स्थित है. यह अभयारण्य मुख्य रूप से एक सींग वाले गेंडे के लिए जाना जाता है. 30.8 वर्ग कि.मी. में फैले इस अभयारण्य में 16 वर्ग कि.मी. में सिर्फ गेंडे रहते हैं. चूंकि यहां बड़ी संख्या में गेंडें हैं इसलिए वे अभयारण्य शोणितपुर से बाहर भी निकल आते हैं. गेंडें के अलावा इस वन्य जीव अभयारण्य की दूसरी विशेषता यहां हर साल आने वाले प्रवासी पक्षी हैं. यहां हर साल करीब 2000 प्रवासी पक्षी आते हैं. अभयारण में एशियाई भैंस, तेंदुआ, जंगली बिल्ली और जंगली भालू सहित कई अन्य जीव भी देखे जा सकते हैं.

अमचांग वन्यजीव अभयारण्य :– अमचांग वन्यजीव अभयारण्य असम में स्थित है. यहाँ आपको पशु–पक्षियों की दुर्लभ प्रजातियां देखने को मिलती हैं. यहां पर पाये जाने वाले वन्य जीवों में चीनी वज्रदेही, उड़न लोमड़ी, शर्मीली बिल्ली, असमिया मकाक, रीसस मकाक, कैप्ड लंगूर, हूलाक गिब्बन, जंगली बिल्ली, चीता बिल्ली, तेंदुए, हाथी, जंगली सुअर, सांभर, बार्किंग डीयर, गौर और साही आदि जैसे स्तनधारी शामिल हैं. यहां पायी जाने वाली पक्षी प्रजातियों में छोटा चमरघेंघ, ग्रेटर चमरघेंघ, सफेद पीठ वाले गिद्ध, गिद्ध, स्लेंडर बिल्ड गिद्ध, खलीज तीतर, ग्रीन इंपीरियल कबूतर और अन्य में लेसर पाइड हॉर्नबिल शामिल हैं. यहां आपको विभिन्न प्रजातियों के सरीसृप जैसे कि अजगर, मॉनिटर छिपकली तथा भारतीय कोबरा भी देखने का मौका मिलता है.

उपेन्द्रनाथ
क्षे.म.प्र.का., कोलकता

नागालैंड की बांस तथा बेंत संस्कृति

नागालैंड भारत की रंगीन संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है. नागालैंड के वन, बांस और बेंत के संबंध में समृद्ध हैं और नागा लोग स्वाभाविक रूप से टोकरियाँ बनाने में दक्ष हैं लेकिन यह शिल्प पुरुषों तक सीमित है. कटे हुये बांस से चटाई बनाना, जो घरों की दीवारें तथा फर्श बनाने के लिए लकड़ी के अतिरिक्त प्रमुख सामग्री है. धान को सुखाने के लिए बारीकी से बुनी गई चटाइयों का निर्माण भी बहुत महत्वपूर्ण है.

चटाइयों और टोकरियों के लिए प्रयोग किये जानेवाले बांस और बेंत को एकत्रित करने से शुरू होता है और आवश्यक आकारों की पट्टियाँ बनाना, टोकरी की बुनाई और अंत में परिष्कृत करने के बाद यह कार्य पूरा होता है. अब ये लोग विभिन्न प्रकार की आराम कुर्सियाँ, सोफ़ा, टेबल और शिशुओं के लिए पालने बनाते हैं. टोकरियों के अतिरिक्त बांस से चटाई, कवच तथा विभिन्न प्रकार की टोपियाँ भी बनाई जाती है. ये आकर्षक चुँगा अथवा पेय पीने के कप, लकड़ी पर नक्काशी के साथ बांस के मग भी बनाते हैं. ये कभी-कभी पेंट किए गए शैलीगत फूलों के पैटर्न अथवा आराम से बनाई गई मनुष्य आकृतियों के साथ डिजाइन किए जाते हैं. नागालैंड में बांस का पाइप लोकप्रिय है. सामान्य रूप से यह सही कहा गया है कि 'नागा लोग अपना जीवन बांस के एक पालने में शुरू करते हैं और बांस के कफन में समाप्त करते हैं.'

बेंत : प्रचुरता में होने के कारण बेंत का शिल्प कार्यों में अत्यधिक उपयोग किया जाता है. कठोर टोकरियों के लिए बेंत का प्रयोग किया जाता है. बहुरंगी नक्काशी वाली कटोरियां, मग तथा पात्रों का सुंदर बेंत शिल्प कार्य सभी जनजातियों द्वारा किया जाता है. अन्य क़िस्मों जैसे पट्टियों में सजावट के अंतर्गत विस्तृत डिजाइन होता है. बेंत के हेलमेट तथा टोपी के साथ नागा लोगों में एक बेंत की वर्षा रोधक टोपी भी बनाई जाती है. कुछ जनजातियों के पुरुष लाल रंग से रंगी बेंत की पट्टियों और पीले ऑर्किड के तने को कौड़ियों के साथ मिला कर बहुत आकर्षक नेक-बैंड, बाजूबंद और लेगिंग बुनते हैं. सुंदर बनावट के साथ बेंत की तारों से बुनी गई चटाई का सजावट में महत्व होता है. बेंत का फर्नीचर भी काफी लोकप्रिय है. हार और बाजूबंद भी बेंत से बनाए जाते हैं. बेंत के आभूषण जैसे हैड बैंड, कंगन, लेग-गार्ड आदि शिल्पकारी के अन्य मॉडल हैं. बेंत के फ्रेम में एक मोटे कपड़े से सिलाई करते हुए और शैल तथा मनकों से सजावट करते हुए एक विशिष्ट थैला भी देखा जाता है.

बांस की टोकरी : टोकरी के उद्गम तथा विकास की कहानी इस प्रकार है: चंगकिचांगलंगबा नाम का एक जादूगर था. जब वह जीवित था तब वह लोगों को बताया करता था कि उसकी मृत्यु के बाद छठे दिन जब उसकी कब्र खोलेंगे तो उन्हें वहाँ कुछ नया मिलेगा. उसकी मृत्यु के बाद छठे दिन जब उसकी कब्र खोली गई तो वहाँ बेंत से बनाए जाने वाले सामान के सभी डिजाइन्स तथा पैटर्न पाए गए. लोगों ने इन्हें कॉपी किया और इस पर काम करना शुरू कर दिया.

सामान्यत: टोकरियाँ दो प्रकार की होती हैं, एक को भंडारण के उद्देश्य से घर में रखा जाता है और दूसरी जिसे दैनिक उपयोग के लिए पीठ पर ले जाया जाता है. अंगामी बांस और बेंत की विभिन्न किस्में बनाने में दक्ष हैं. कुछ मिनट में बनाए गए अपरिष्कृत सरल डिजाइन से जटिल पैटर्न, चावल ले जाने अथवा बोतलों में शराब रखने के लिए सावधानी से तैयार की गई सभी स्वरूपों तथा आकार की टोकरियाँ बनाई जाती हैं. प्रत्येक व्यक्ति अपने घरेलू उपयोग के लिए टोकरी बनाता है. पूरे नागालैंड में स्थायी उपयोग के लिए टोकरियाँ सामान्यत: एक कुर्सी की बेंत की सीट से मिलती-जुलती चौकोर-विकर्ण पैटर्न अथवा खुले-काम के पैटर्न में विभिन्न आकारों में बुनी जाती हैं. टोकरी, शंकु के आकार की होती है, जबकि अंगामी टोकरी बेलनाकार होती है. शंक्वाकार सामान ले जाने की टोकरियाँ अखि तथा अखा आम हैं. प्रत्येक घर में विकर्णीय पैटर्न वाली सपाट-तले की विभिन्न बड़ी टोकरियाँ होती हैं जिनमें चावल की बियर रखी जाती है. चखेसंग और अंगामी नागा की सामान ले जाने की टोकरियाँ विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं. सिलाई करते समय चांग महिलाओं द्वारा धागों की बोल ले जाने के लिए प्रयुक्त टोकरियाँ भी सुंदर होती हैं. कोनयाक टोकरियों को चित्रों तथा बालों से सजाया जाता है.

टोकरी बुनने की तकनीक : जुलाई से अक्तूबर तक के महीनों में, नागा वनों से एक वर्ष पुराना बांस लाते हैं. चयनित बांस को जहां इंटरनोड लंबे होते हैं ऐसे स्थान पर दाव से काटा जाता है. बांस से शाखाएँ तथा पत्तियाँ हटाई जाती हैं, इसके बाद इसे अपेक्षित लंबाई में काटा जाता है. प्रत्येक टुकड़े को लगभग एक इंच चौड़ाई के बड़े टुकड़ों में काटा जाता है. तोड़ते समय उस उद्देश्य को भी ध्यान में रखा जाता है जिसके लिए टुकड़ों को लिया गया.

बडे टुकड़ों को दाव की सहायता से सुविधाजनक छोटे टुकड़ों में काटना और प्रत्येक टुकड़े को एक बाजू और शरीर के बीच रखकर खड़े बालों वाले स्थान से तोड़ा जाता है. पट्टी की मोटाई हाथ से नियंत्रित की जाती है. अंत में एक टुकड़े से तीन अथवा चार पतली पट्टियाँ बनाई जाती हैं.

अंतिम रूप से तैयार पट्टियाँ लगभग 2मिमी मोटाई तथा 1 सेमी चौड़ाई की होती हैं. इन पट्टियों को चाकू अथवा दाव की सहायता से चिकना बनाया जाता है. पट्टियाँ बुनाई के लिए तैयार हो जाती है.

अगला चरण है वस्तुओं की बुनाई! नागा लोगों में पाए जाने वाली टोकरी की बुनाई

के तीन आम पैटर्न हैं. छनाई पंखे बनाने के संबंध में कपड़ा एक धागे के ऊपर जाता है और उसके बाद साथ के दूसरे धागे के नीचे से जाता है और पुन: अगले धागे के ऊपर और उसके बाद चौथे धागे के नीचे से जाता है. इसे दोहराया जाता है.

घरेलू उत्पाद :–

बांस की थाली : बांस की एक सस्ती, हल्की थाली प्रत्येक घर में देखी जाती है. जोड़ों से मुक्त बांस के एक भाग को काटकर आग पर गर्म किया जाता है.

बांस की तश्तरी : बांस की तश्तरी को चावल की बियर पीते हुए खाये जाने वाले नमकीन सेम अथवा गर्म चटनी रखने के लिए प्रयोग किया जाता है.

अंगामी नागा के बांस के चम्मच : अंगामी नागा बांस से बनाए गए विभिन्न आकार के चम्मचों का प्रयोग करते हैं.

केडजु : केडजु आओ नागा द्वारा घास तथा सूखी घास को ले जाने का एक दोशाखा होता है. यह बांस का बना होता है और इसका स्वरूप तथा संरचना बहुत रोचक होती है. इसका हैंडल पूर्ण कल्म बांस की लंबाई का होता है और इसकी उँगलियाँ भी बांस की एक कल्म से बनाई जाती हैं.

चांग बांस के मग : सौंदर्य बोध वाले चांग लोगों में बांस के पेय मग को लकड़ी पर नक्काशी के काम से संजाया जाता हैं, जिन्हें 'दोबु थुंग' कहा जाता है. मग के आवरण पर चित्र उकेरा जाता है और किनारे पर सजावटी पैटर्न बनाया जाता है. ये मग बहुत महंगे माने जाते है. पहले इनका प्रयोग अमीरों द्वारा ही किया जाता था.

चांग नागा क्रॉसबो : चांग नागा क्रॉसबो बांस, लकड़ी, रेश तथा हड्डी का बना एक शक्तिशाली शस्त्र होता है. यह बांस की मोटी तथा मजबूत बीम से बना होता है. लकड़ी के क्रॉस–बीम में ऊपरी नली पर तीर रखा जाता है. धनुष को तना हुआ रखने के लिए हड्डी का बना एक ट्रिगर असेंबली का प्रयोग किया जाता है. जब ट्रिगर खींचा जाता है, हुक दबता है और धनुष–तार तेज वेग से तीर को फेंकता है.

बांस के कंघे : चांग पुरुषों द्वारा बांस की पट्टियों के छोटे सजावटी कंघे लड़कियों को उपहार में देने के लिए बनाए जाते हैं.

कोनयक नागा बेल्ट : कोनयक नागा पुरुष अपनी कमर में एक कसी हुई बेंत की बेल्ट पहनते हैं. ये बेल्ट वयस्क लोगों द्वारा पहनी जाती है और एक बार इसे पहने जाने के बाद इसे हटाया नहीं जाता.

फिफा : फिफा नागालैंड के अंगामी और आओ नागा पुरुषों द्वारा पहने जाने वाली लेगिंग का एक जोड़ा होता है और इसे घुटने से टखने के बीच के पैर के हिस्से को ढकने के लिए पिंडली के ऊपर पहना जाता है. इसे बेंत की बारीक पट्टियों से एक विकर्णीय बुनाई में बुना जाता है. फिफा पर सजावटी पैटर्न बनाने के लिए ऑर्किड के तने की चमकीली पीली पट्टियों का प्रयोग किया जाता है. रंगीन ऊन के गुच्छों का भी सजावट के रूप में प्रयोग किया जाता है.

मछली पकड़ने के जाल और टोकरियाँ :–

लिथुओ : नागालैंड में प्रयोग की जाने वाली एक मछली पकड़ने की ट्रे है. इसे एक उथली वर्गाकार टोकरी की तरह बनाया जाता है.

प्रथागत टोपी : आओ नागा एक सजावटी प्रथागत टोपी का प्रयोग करते हैं, जो शंकु के आकार की होती है. बाहरी परत बांस अथवा बेंत की रंगी गई पट्टियों से बनाई जाती है और इसे पीली तथा काली पट्टियों से सजाया जाता है.

संगीत वाद्य यंत्र : नागा लोग प्रकृति से संगीत प्रेमी होते हैं. नागा लोगों में विभिन्न संगीत वाद्य यंत्रों का प्रयोग बहुत आम रहा है.

बांस की बांसुरी : पतले बांस से बनाया जाने वाला सबसे सरल वाद्य बांसुरी है. बांसुरी बनाने के लिए एक विशेष प्रकार के बांस 'अनि' का ही प्रयोग किया जाता है.

इससे मिलता–जुलता एक और प्रकार का ऐसा ही संगीत वाद्य यंत्र है, जिसे आओ बोली में 'मलेन' कहा जाता है, जो धान के पौधे के तने से बनाया जाता है. यह छोटा सा वाद्य यंत्र केवल फसल की बुआई के समय बनाया जाता है.

बांस की तुरही : बांस को दो नोड के साथ लगभग 4–5 फुट लंबी भुजा के रूप में काटा जाता है, पुन: नोड के ऊपरी हिस्से में एक छोटा छिद्र बनाया जाता है और एक छड़ी अथवा अंगुली के आकार का एक छोटा बांस का पाइप इसमें मजबूती से जोड़ा जाता है. इसे होठों पर रखा जाता है और उसके बाद जीभ तथा होठों को नियंत्रित करते हुए दोनों हाथों से पकड़ते हुए होठों की ओर दबाते हुए इसे बजाया जाता है.

बांस का माउथ ऑर्गन : नागा लोगों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले सबसे पुराना पारंपरिक संगीत वाद्य यंत्र में से एक है. यह बांस का बना सरल, बहुत प्रभावी तथा आकर्षक वाद्य यंत्र है. इसे बनाने के लिए एक प्रकार के पतले बांस 'अनि' का प्रयोग किया जाता है यह लड़कों तथा लड़कियों दोनों के द्वारा बिना किसी रोक के बजाया जा सकता है.

कप वायलिन : कप वायलिन का प्रयोग 'आओ' के बीच लोकप्रिय है. कप वायलिन बनाने के लिए अच्छी गुणवत्ता वाले मजबूत और पतले बांस का चयन किया जाता है अथवा कभी कभी सीप अथवा करेले का प्रयोग भी किया जाता है.

कहा गया है कि मनुष्य ने वाद्ययंत्र बजाना, केंकड़े से सीखा है. जब उसकी दस उंगलियां एक के बाद एक हिलती हैं तो ऐसा लगता है जैसे पियानो बजाने वाले की उंगलियां हों. पुरुष और महिलाएं दोनों इस वाद्ययंत्र को बजा सकते हैं. इस वाद्ययंत्र को कप वायलिन अथवा मिडनाईट वायलिन कहते हैं क्योंकि इसे मुख्यत: मध्य रात्रि में बजाया जाता है.

विवेक साव
क्षे.का., सेलम

Mizoram

Mizoram is a mountainous region sandwhiched between Myanmar in the east & south while Bangladesh in the west. It became the 23rd state of the Indian Union in February, 1987. It occupies the place of great strategic importance in the north-eastern corner of India. It shares boundary of total 722 kms. with Myanmar and Bangladesh.

Mizoram's hills are steep and are separated by rivers which flow either to the north or south creating deep gorges between the hill ranges. The average height of the hills is about 1000 metres and the highest peak here is the 'Blue Mountain (Phawngpui)' with a height of 2210 metres.

Mizoram has a moderate and pleasant climate throughout the year. Mizoram has great natural beauty and an endless variety of landscapes with its rich flora and fauna. The hills are marvellously green.

Historians believe that the Mizos are a part of the great wave of the Mongolian race spilling over into the eastern and southern India centuries ago. They came under the influence of the British Missionaries in the 19th century, and now most of the Mizos are Christians. The Missionaries introduced the Roman script for the Mizo language and formal education. As per the census of 2011, Mizoram has a population of 10.97 lakhs, literacy rate is 91.33% which is the second highest in India.

The Mizos are a distinct community and the social unit is the village. Mizo village is usually set up on top of a hill with the chief's house at the centre and the bachelors' dormitory 'Zawlbuk' is prominently located in the central place. In a way the focal point in the village is the Zawlbuk where all young bachelors of the village sleep. Zawlbuk is the training ground and indeed, the cradle wherein the Mizo youth is shaped into a responsible adult member of the society.

The social fabric in the Mizo society has undergone tremendous changes over the years.

The Mizo code of ethics or Dharma moved round "Tlawmngaihna", an untranslatable term meaning 'On the part of everyone to be hospitable, kind, unselfish and helpful to others'. The Mizos have been enchanted to their new-found faith of Christianity with so much dedication and submissioin that their entire social life and thought process have been altogether transformed and guided by the Christian Church organisations directly or indirectly and their sense of values have also undergone drastic changes.

The village exists like a big family.

Festivals : Nearly all the Mizo festivals revolve round the tilling of the land. 'Mim Kut', 'Chapchar Kut' and 'Pawl Kut' are the three major festivals in Mizoram, all of which are in some way or the other connected with agricultural activities.

Mim Kut is celebrated in August-September in the wake of the harvesting of the maize crop. Dedicated to the memory of their dead relatives, the festival is underlined by a spirit of thanks giving and remembrance of the years.

Chapchar Kut which is celebrated during spring time after the jhum cutting is over, is perhaps, the most joyous of all the Mizo festivals. The winter bows out yielding place to the spring which reinvigorates nature and brings a freshness to human life. The Mizos, irrespective of age and gender distinction, participate in the festival.

Pawl Kut a post-harvest festival, is celebrated during December-January. Again, a mood of thanks giving is evident, because the difficult tasks of tilling and harvesting are over. Community feasts are organised and dances are performed. Mothers with their children sit on memorial platform and feed one another. This custom, which is also performed during Chapchar Kut, is known as Chhawnghnawt.

Apart from these festivals, 'Anthurium Festival' is another festival, which is a tourism promotion venture of Tourism Department. It is a three day extravaganza of culture, music, dance, games, fashion show, handloom & handicrafts exhibition and traditional cuisines.

The most celebrated festivals of the state, Christmas and New Year are much revered in Mizoram and are hosted by the local churches. In the days or even weeks before the Christmas day, many people decorate their homes with lights and Christmas trees. The localities decorate their respective streets, lighting up the entire city. It is the tradition of the church to organize community feast.

Aizawl - The State Capital of Mizoram came into being as a fortified post on the recommendation of Mr. Dally of the Assam Military Battalion in the spring of 1890. It is now 112 years old and is at an altitude of 4000 ft. above sea level. It has a population of approximately 2.93 lakhs. The city stands on a high ridge surrounded on the east by the deep green valley of the river Tuirial and on the west by the river Tlawng with its lush emerald valleys. On the north, Aizawl is protected by beautiful high craggy hills of Durtlang and the capital city stands like a huge citadel. Aizawl is an ideal hill station for tourists looking for solitude, clean and fresh environment and new destinations. Aizawl is the political and cultural centre of Mizoram. It is here that the State Legislature is situated. It is also the seat of the Government and all important Government as well as Public Sector offices are located at Aizawl. It is also the commercial hub of the State.

Entry Formality

DOMESTIC TOURISTS: Inner Line Permit can be obtained from Liaison Officers posted in New Delhi, Kolkata, Guwahati, Shillong and Silchar. Two passports size photographs are required to be attached on the prescribed forms.

FOREIGN TOURISTS: For a group of 4 or more persons, Restricted Area Permit (RAP) can be obtained from the Government of Mizoram through Liaison Officers posted at New Delhi, Kolkata & Guwahati. For less than 4 persons, RAP has to obtained from the Ministry of Home Affairs, Government of India.

Local Transport : Taxis are the main mode of transport in the city and rates are negotiable. Buses ply on route within the state.

Places of interest :

Bara Bazar : This is the main shopping center with stalls selling garments and other commodities. The main bazar is where the people are best seen in their traditional costumes selling produce from farms and homesteads including river crabs with little wicker baskets.

Luangmual Handicarfts Centre: is 7 kms away and takes half an hour to reach by car. The 'Khumbeu' ceremonial bamboo hat is made here using waterproof 'hnahthial' leaves.

Mizoram State Museum: This museum is situated at Mc Donald Hill in the town center. It is open from Monday to Friday from 9.00 AM to 5 PM and on Saturday from 9.00 AM to 1 PM. It has an interesting collection of historical relics, ancient costumes and traditional implements.

Durtlang Hills: These beautiful, craggy hills offer a good view of Aizawl.

Mini Zoo: Home to species of animals and birds found only in the hills of Mizoram.

Berawtlang Tourist Complex: This is a recreational center situated 7 kms away from Aizawl City center. There are facilities of Restaurant as well as Tourist Cottages.

Dorendro Athokpam
Aizawl Branch, Mizoram

पूर्वोत्तर भारत की धरोहर
मिजोरम

मिजोरम के दर्शनीय स्थल

आईजोल शहर : आईजोल शहर मिजोरम की राजधानी है. यह काफी आकर्षक तथा चारों ओर पर्वतों से घिरा हुआ शहर है. इसकी सुंदरता देखते ही बनती है. मिजो भाषा में अइ का अर्थ होता हल्दी तथा जोल का अर्थ होता है मैदान. अतः इसका शाब्दिक अर्थ हल्दी का मैदान कहा जा सकता है. यह शहर काफी अनुपम तथा मनोरम छटा को प्रदर्शित करता है. यहां मिजोरम विश्वविद्यालय काफी महत्वपूर्ण है तथा यह नगर प्राकृतिक सौंदर्य के लिए विख्यात है.

वानतांग झरना : मिजोरम का वानतांग झरना उसी प्राकृतिक सौंदर्य का प्रदत्त उपहार है. प्रत्येक वर्ष यहां भारी संख्या में पर्यटक पहुंचते हैं तथा इस सौंदर्य का लुत्फ उठाते हैं.

मिजोरम का यह सबसे ऊंचा झरना है. यह दो पर्त वाला झरना है, जिसकी ऊंचाई लगभग 229 मीटर है. झरने को स्थानीय भाषा में खवतला कहा जाता है.

चम्फई : मिजोरम का प्राकृतिक सौंदर्य अद्वितीय है. यह कस्बा चम्फई जिले का मुख्यालय तो है ही साथ ही अपने प्राकृतिक सौंदर्य के कारण पर्यटकों का आकर्षण भी है. भारत–म्यांमार सीमा पर स्थित होने के

कारण इस कस्बे का सामरिक महत्व भी है. भारत–म्यांमार के बीच व्यापर का यह महत्वपूर्ण गलियारा भी है.

तामदिल झील : प्राकृतिक सौंदर्य का यह सबसे प्रमुख उदाहरण है. तामदिल झील मिजोरम की सुंदरता में चार चांद लगा देती है. पर्यटकों तथा सैलानियों को यह अपनी ओर आकर्षित कर अपने सौंदर्य से मंत्र मुग्ध कर देती है.

सैतुअल : सैतुअल बहुत ही महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थल है जो अपने सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है. जो भी सैलानी सैतुअल पहुंचते हैं, वे इसकी सुंदरता को देख कर दांतों तले उंगली दबा लेते है.

विनय कुमार
कदमकुंआ शाखा, क्षे.का. पटना

'हॉर्नबिल फेस्टिवल'

नागालैंड

प्रतिवर्ष दिनांक 1–10 दिसंबर को नागा हेरिटेज ग्राम किसामा में स्थित तथा नागालैंड की राजधानी किहिम से 12 किलोमीटर की दूरी पर जाप्फू पहाड़ी की तलहटी में मशहूर 'हॉर्नबिल फेस्टिवल' का आयोजन वर्ष 2000 से किया जा रहा है. नागालैंड की समृद्ध संस्कृति और परंपरा के जतन के उद्देश्य से यहाँ की जनजातियों में आपसी भाईचारा बढाने एवं उनकी सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने हेतु नागालैंड की सरकार द्वारा शुरू किया गया यह फेस्टिवल नागालैंड के रंगीन, जंगली पंछी 'हॉर्नबिल' का नाम धारण कर अब विश्व भर में मशहूर हो गया है. कृषि पर निर्भर यहां की विभिन्न जन जातियां इस त्योहार के उपलक्ष्य में किसामा में इकट्ठा होती है और अपने–अपने त्योहारों का रंगबिरंगी प्रदर्शन कर, कलाकृतियों, खेल, जात्रा, गेम्स, गीत–संगीत को लेकर अपनी परंपराओं का जश्न भी मनाती है. इस जश्न में विश्व भर से आए हुए लोग अपनी उपस्थिति देते हैं और यहां के खान–पान, गीत–संगीत, नृत्य, कलाकारी, वेशभूषा का आनंद उठाते हैं. पुरानी सांस्कृतिक विरासत के साथ अब 'मिस नागालैंड', भारत भर के बैंडस तथा रॉक कंसर्ट की सहभागिता ने इस फेस्टिवल को आधुनिकता का स्पर्श दिया है. दस दिनों तक चलने वाला यह कला, कलाकारों की रंगीनता से भरा हुआ माहौल अब 'त्योहारों का त्योहार' कहा जाता है.

डेविड मुंग,
दीमापुर शाखा, अगरतला

बैंक का 101 वां स्थापना दिवस

बैंक के 101वें स्थापना दिवस के अवसर पर मुंबई में दो महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का भव्य रूप से आयोजन किया गया.

दिनांक 11 नवंबर, 2019 को ग्राहकों के लिए एनसीपीए, मुंबई में आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि, माननीय राज्य मंत्री (वित्त और कॉर्पोरेट मामलें), श्री अनुराग ठाकुर ने किया. इस अवसर पर सम्माननीय अतिथि के रूप में श्री राजीव कुमार, वित्त सचिव, भारत सरकार भी उपस्थित रहें. इसी अवसर पर बैंक के तीन नये उत्पाद – 'यूनियन संपूर्ण' (कृषि क्षेत्र के लिए वन–स्टॉप–सोल्यूशन); 'ई–वे बिल्स' और 'एटीएम जीओ लोकेटर' का शुभारंभ किया गया. इसके साथ ही बैंक की त्रैमासिक गृह पत्रिका 'यूनियन धारा' के शताब्दी विशेषांक का विशेष रूप से विमोचन मुख्य अतिथियों के करकमलों से किया गया. कार्यक्रम के अंत में सुप्रसिद्ध गायक–संगीतकार श्री शंकर महादेवन ने अपने बेहतरीन गीत–संगीत से उपस्थितों का मन मोह लिया.

इसी श्रृंखला की दूसरी कड़ी के रुप में दिनांक 25 नवंबर, 2019 को रिलायंस जियो गार्डन, बी.के.सी., मुंबई में स्टाफ सदस्यों एवं उनके परिजनों के लिए बॉलीवुड के मशहूर संगीतकार, विशाल–शेखर और उनके बैंड द्वारा रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया. दोनों कार्यक्रमों में कार्यपालकों तथा ग्राहकों के साथ स्टाफ सदस्यों एवं उनके परिजनों ने बड़ी संख्या में भाग लिया.

उनाकोटी - एक रहस्यमयी गाथा

भारत गणराज्य के आठ राज्य पूर्वोत्तर में है. इन आठों राज्यों में सिक्किम को छोड़कर बाकि सात राज्यों को सात बहने कहते हैं. ये सात बहनें नदी, पहाड़ और वनों की मनोमुग्धकारी सुन्दरता से सुसज्जित है. इन्हीं बहनों में सबसे छोटी और सुन्दर बहन है, त्रिपुरा ! मान्यता है कि इस राज्य का नाम प्रसिध्द देवी त्रिपुरा सुंदरी के नाम पर पड़ा है. त्रिपुरा सुंदरी 52 शक्तिपीठों में से एक है. राज्य के कुल आठ जिलों में से उनाकोटी सबसे नवीनतम जिला है, जिसका गठन 21 जनवरी 2012 को उत्तर त्रिपुरा जिले से अलग करके किया गया है. इसका नाम एक रहस्यमयी सृजन 'उनाकोटी' के नाम पर रखा गया है. उनाकोटी जिले में दो तालुका है: एक कैलाश शहर और दूसरा उनाकोटी. उनाकोटी का पुराना नाम है सुबरै खुम (कोक बोरोक भाषा में) है. उनाकोटि जिले का मुख्यालय कैलाश शहर है जो तालुका मुख्यालय भी है. कैलाश शहर पहाड़ों से घिरे टेढ़े मेढ़े रास्ते से होते हुए करीब 8 की.मी. दूरी पर अपने कई पहाड़ी परिजनों से घिरे और अपने अंग में अद्भुत रहस्यमयी कलाकृतियों को लेकर बिराजमान है पहाड़ 'रघुनन्दन'! छोटे बड़े अनगिनत देवी देवताओं की मूर्तियाँ, इस पहाड़ों के अंग तथा छोटी बड़ी शिलाओं को खोदकर बनाई गई हैं. कहते हैं, मूर्तियों की संख्या उनाकोटी है. बंगाली भाषा (त्रिपुरा का मुख्य भाषा) में उनाकोटी का अर्थ एक कोटि (एक करोड़) से एक कम है, जिसके लिए इसका नाम उनाकोटी रखा गया है. यहाँ सिर्फ आदिवासी रहते हैं.

यहाँ अधिकतर मूर्तियाँ शिव भगवान तथा उनके परिवार की हैं. उनमें विशाल शिव और गणपति की मूर्तियाँ एवं पार्वती माँ की मूर्तियाँ शामिल है. उनाकोटी के केंद्र स्थल पर बिराजमान है उनाकोटिश्वर. कालभैरव की करीब 30 फूट ऊँची विशाल प्रतिमा जिनके एक पार्श्व में देवी पार्वती और दूसरे पार्श्व में देवी गंगा स्थित है. मूर्ति के केश की ऊंचाई करीब 10 फूट है. उनाकोटिश्वर मूर्ति के केश के पास बहते झरने को देखने से ऐसा प्रतीत होता है, जैसे शिवजी की जटा से गंगाजी निकली हो. शिव परिवार के अलावा अन्य देवी देवताओं में श्रीराम, हनुमान इत्यादि भी हैं. आप इसे एक खुला मंदिर कह सकते हैं. पुरातत्व वैज्ञानिकों की मानें तो यहाँ की कलाकृतियाँ 7वीं से 9वीं शताब्दी के बीच बनाई गई होंगी. पहाड़ के ऊपरी हिस्से में कई मूर्तियाँ और कुछ पत्थर इस तरह रखे गए हैं जो वहां पहले एक मंदिर होने का इशारा करते हैं. हाल में स्थानीय लोगों को वन सामग्री इकट्ठा करते समय जंगलों में कई मूर्तियाँ मिली हैं. जिससे यह लगता है कि अब भी कई मूर्तियाँ यहाँ आसपास के जंगल में मिट्टी के नीचे दबी हुई है. यहाँ की मूर्तियों की बनावट की तुलना कंबोडिया के अंगकोर वाट (Angkor Wat) या महाबलीपुरम की मूर्तियों से की जा सकती है. यह एक पुरातन शैव पीठ है. हर साल यहाँ अशोकाष्टमी के दिन हजारों शिव भक्तों का आगमन होता है. उन दिनों वहां का पूरा वातावरण शिवमय हो जाता है. उस दौरान यहाँ एक बड़ा मेला भी लगता है. उस मेले में यहां के स्थानीय बाशिंदे हस्तकला और स्थानीय उत्पादों को बेचते हैं.

पहाड़ के ऊपरी भाग में स्थित मूर्तियों के पास तथा पहाड़ के निम्न भाग में स्थित मूर्तियों के पास जाने के लिए आप वहाँ बने सीढ़ी का सहारा ले सकते हैं. अगर आप जोड़ों के दर्द या ह्रदय रोग से पीड़ित हैं और तीखी सीढ़ियों के सहारे ऊंचाई पर जा नहीं सकते तो निराश होने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि आप पहाड़ के एक किनारे खड़े होकर वहाँ बनी बहुत सारी मूर्तियाँ और प्रकृति का भी आनंद उठा सकते हैं.

यूँ तो कोई नहीं जानता कि इस घने जंगल में स्थित पहाड़ पर मूर्तियों को किसने और कब बनाया हैं. हाँ, इसके बारे में कई प्रचलित कहानियां जरुर हैं.

एक कहानी के अनुसार, एक बार शिव भगवान एक करोड़ देवी देवताओं के साथ इस रास्ते से अपने निवास स्थान कैलास जा रहे थे. शिवजी सुबरै खुम की मनोहर पहाड़ियों से मुग्ध होकर यहाँ रात्रि विश्राम करने लिए रुके. सोने से पूर्व शिवजी ने सभी देवी देवताओं को निर्देश दिया कि सूर्योदय से पहले निद्रात्याग करके उनके साथ कैलाश के लिए रवाना हो जाएँगे ताकि उनके यहाँ रात्रि विश्राम की बात किसी को पता न चले. पर उनके निर्देश के विपरीत, सुबह होने से पहले जहां शिवजी ने देखा कि उनको छोड़ सभी देवी देवताएं निद्रा में हैं तो कैलासपति नाराज हो गए और सभी देवी देवताओं को शिवजी ने पत्थर बन जाने का श्राप दे दिया और अकेले कैलास चले गए. इसलिए उनाकोटी में शिवजी को छोड़कर बाकि 99,99,999 देवी देवताएं पत्थर की मूर्तियाँ बनकर सुबरै खुम में रह गयीं. कहते हैं कि उनाकोटि की पहाड़ी मिट्टी के नीचे कई देवी देवताओं की मूर्तियाँ दबी हुई है, जिनके बारे में अभी तक किसी को कुछ पता नहीं है. इसलिए जब कभी उनाकोटी घूमने जाएँ तो वहाँ चलते समय ध्यान दें कि कहीं आपका पैर किसी देवी देवता पर तो नहीं रखा गया है.

दूसरी कहानी के अनुसार, यहां पर कलू कुम्हार नाम के एक शिल्पकार थे, जो पार्वती जी के बड़े भक्त थे. एक बार कलू कुम्हार ने शिवजी और पार्वती माँ के साथ कैलास जाने

की याचना की. शिवजी कलू कुम्हार को साथ में ले जाने को राजी नही थे. चूँकि माता पार्वती कलू कुम्हार की भक्ति से संतुष्ट थी. अतः उन्होंने शिवजी को मनाया और एक समाधान निकाला. उन्होंने कलू के सामने एक शर्त रखी. शर्त के अनुसार यदि कलू रात खत्म होने से पहले एक कोटि (करोड़) देवी देवताओं की मूर्ति बना दे तो वह शिव पार्वती के साथ कैलास जाएगा. कलू शर्त के अनुसार रात भर देवी देवताओं की मूर्तियाँ बनाते रहे लेकिन मूर्तियों की संख्या एक करोड़ से एक कम रह गयी और शर्त हार जाने की वजह से कलू कैलास नहीं जा पाए. कलू कुम्हार द्वारा बनायी गई सभी मूर्तियाँ सुबरै खुम में उनाकोटी देवी-देवताओं की मूर्ति बनकर रह गयी, जो आज भी विराजमान है.

इस कहानी का थोडा सा अलग रूप भी है कि कलू कुम्हार वहुत अच्छे शिल्पकार थे, जिसका उन्हें बड़ा घमंड था. कलू कुम्हार अपने को भगवान समझने लगे थे. उन्होंने एक रात में एक करोड़ मूर्तियाँ तो बनाई थी परन्तु अपने को देवता समझने के कारण उन्होंने उस एक करोड़ मूर्तियों में से एक मूर्ति अपनी भी बना दी. इस कारण कलू कुम्हार एक करोड़ देवी देवताओं की मूर्तियाँ बनाने से चूक गए और इस प्रकार उनाकोटी का सृजन हुआ.

उनाकोटी के बारे में ऐसी कई कहानियां प्रचलित हैं. परन्तु पुराण, इतिहास या अन्य किसी ग्रंथ में इसकी सृष्टि के बारे में कोई सटीक प्रमाण नहीं मिलता है. पुरातत्व विभाग भी अभी तक इस बारे में किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पाया है. इसलिए उनाकोटी अब भी एक रहस्य बना हुआ है.

यदि आप शोध में रूचि रखते हैं तो उनाकोटी के रहस्य को सुलझाने का यह एक अच्छा अवसर है.

रामचन्द्र सेठी
क्षे.का., गुवाहाटी

जोनबील मेला

क्या आपने किसी ऐसे मेले के बारे में सुना है, जहां आपको कुछ भी खरीदने के लिए पैसे की आवश्यकता नहीं है. वर्तमान समय में यह सुनने में थोड़ा अटपटा लग रहा होगा लेकिन यह सच्चाई है कि जोनबील मेले में ऐसा संभव है और इस मेले का आयोजन असम में अब भी किया जाता है.

असम में आयोजित होनेवाला जोनबील मेला शायद एकमात्र ऐसा मेला है जो वर्तमान में वस्तु विनिमय प्रणाली को जीवित रखे हुए है. गुवाहाटी के पास जोनबील में 3 दिन के लिए आयोजित होनेवाले मेले के दौरान वस्तुओं की खरीद वस्तु विनिमय प्रणाली के आधार पर होती है. इस मेले में उत्तर-पूर्व की पहाड़ियों और मैदानों के हजारों लोग एक साथ, साल में एक बार बार्टर फेस्ट (वस्तु विनिमय मेला) में भाग लेते हैं.

इसकी शुरुआत 15वीं शताब्दी के बाद से होना बताया जाता है. यह अहोम राजाओं द्वारा वर्तमान समय की प्रचलित राजनीतिक स्थितियों पर चर्चा करने के लिए कई शताब्दियों पहले आयोजित किया गया था. जोनबील मेला असम के सबसे आकर्षक और अनोखे त्योहारों में से एक है. असम राज्य की राजधानी गुवाहाटी से महज 50 किमी दूर यह एक 3 दिवसीय सामुदायिक मेला है जो माघ बिहु (जनवरी के मध्य) के सप्ताहांत पर आयोजित होता है.

मेला स्थल असम के मरिगांव जिले में स्थित जगरोड से 5 किमी दूर है. मेले के तीन दिनों के दौरान मैदानी इलाकों और पहाड़ियों के लोग अपनी जरूरतों के हिसाब से वस्तु विनिमय करते हैं. 'जोन' चंद्रमा के लिए प्रयोग में आनेवाला असमिया शब्द है और बील का अर्थ आद्रभूमि या झील होता है. यह त्योहार जोनबील झील के नाम पर तिवा समुदाय द्वारा मनाया जाता है. मेला लगाने से पहले मानव जाति की भलाई के लिए अग्नि पूजा की जाती है. जोनबेल वेटलैंड में सामुदायिक रूप से मछली पकड़ने के साथ मेले की शुरुआत होती है. मेले का उद्देश्य पूर्वोत्तर भारत में बिखरी विभिन्न जनजातियों और समुदायों के बीच सद्भाव और भाईचारे में वृद्धि करना है.

यह पहाड़ी लोग, मैदानी इलाके के लोगों के साथ अपने सामानों का आदान प्रदान करते हैं. पहाड़ियों से लोग मसाले, जड़ी-बूटी, अदरक, फल, चावल, मछली, केक, पीठा और अन्य सामान साथ ले जाने के लिए आते हैं. ये वैसा सामान होता हैं जिसकी उपज सामान्यतः पहाड़ियों में नहीं होती है. इसमें मुख्य रूप से जयंतिया (मेघालय) और कार्बी आंगलोंग (असम) की पहाड़ियों से लोग सामान लेने आते हैं. असम के अन्य क्षेत्रों से लगभग दस हजार आदिवासी यहाँ आते हैं और खूबसूरत घाटी में मिलते हैं. मेले के इन तीन दिनों को, ये सभी एक बड़े परिवार के रूप में वहाँ बांस की बनी झोपड़ियों में बिताते हैं और एक दूसरे के साथ अपने सुख दुःख को साझा करते हैं. यहाँ उपस्थित सभी एक समूह के रूप में एक साथ भोजन करते हैं. मेले की शुरुआत माघ माह के दूसरे सप्ताह के गुरुवार को होती है और इसकी समाप्ति शनिवार को होती है.

मेले के दौरान तिवा जनजातियों के राजा जिसे गोभाराजा कहा जाता है, अपने दरबारियों के साथ इस मेले में समुदाय दावत में भाग लेते हैं और फिर एक प्रचलित प्रथा के अंतर्गत अपने विषयों के कर को एकत्र करते हैं. इस त्योहार के दौरान विभिन्न जनजातियों के लोग अपने पारंपरिक नृत्य और संगीत का प्रदर्शन करते हैं और पूरे मेले के वातावरण को आनंदमय बनाते हैं.

यह मेला विभिन्न जनजातियों, पहाड़ी और मैदानी लोगों के बीच सद्भाव और भाईचारे के लिए प्रसिद्ध है.

कमल कृष्ण दास
क्षे.का., गुवाहाटी

uni One
UNITED FOR A GOOD CAUSE | **Diary**

दिवाली मेला, 2019

यूनियन (Uni One), यूनियन बैंक के कार्यपालकों की पत्नियों द्वारा संचालित एक गैर सरकारी संगठन, बैंक परिसर में हर साल दिवाली मेला आयोजित करता रहा है. इस मेले में इमिटेशन ज्वेलरी, कलात्मक चीजें, एंटीक ज्वेलरी, गिफ्ट आइटम, कपड़े तथा शालें, बेडशीट, तकिया कवर, दिवाली की मिठाइयां, मसालों के साथ खाने की वस्तुएं एवं अन्य सभी उपयोगी चीजों के स्टॉल बैंक के स्टाफ सदस्यों / मेहमानों के लिए लगाए गए थे.

इन चीजों की बिक्री से होने वाली कमाई का उपयोग गरीबों और जरूरतमंद लोगों की मदद और विभिन्न सामाजिक सेवा गतिविधियों के लिए किया जाता है.

इस बार वर्ष 2019 का दिवाली मेला 03 अक्तूबर 2019 को केन्द्रीय कार्यालय की दूसरी मंजिल पर स्टाफ कैंटीन हॉल में आयोजित किया गया. इसका उद्घाटन श्री राजकिरण रै जी.,एमडी एवं सीईओ, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के साथ श्रीमती सत्यवती रै, अध्यक्ष, यूनि–वन फाउंडेशन और श्री गोपाल सिंह गुसाईं, श्री दिनेश कुमार गर्ग, श्री मानस रंजन बिस्वाल, कार्यपालक निदेशक और उनकी पत्नियों की उपस्थिति में किया गया.

मेले में लगभग 100 स्टॉल थे और प्रदर्शित की गई लगभग सभी वस्तुओं की बिक्री हुई और यह दीवाली मेला सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ.

uni One
UNITED FOR A GOOD CAUSE

एमबीए फाउंडेशन को दान

MBA फाउंडेशन की शुरुआत स्वर्गीय श्री बालसुब्रमण्यन ने की थी.

यह फाउंडेशन विकलांग व्यक्तियों के पुनर्वास की दिशा में काम कर रहा है, ताकि उन्हें समाज की मुख्यधारा में शामिल होने का अवसर मिल सके.

यूनियन बैंक सोशल फाउंडेशन (UBSF) सालों से एमबीए फाउंडेशन के साथ जुड़ा हुआ है. ऐरोली स्थित इनके God's Abode नामक इंटिग्रेटेड रिहैबिलेशन सेंटर की 4थीं मंजिल की निर्माण लागत व्यय को यूनियन बैंक सोशल फाउंडेशन ने वहन किया है.

यूनियन फाउंडेशन द्वारा दि. 30–12–2019 को रु. 50000.00 की राशि एमबीए फाउंडेशन को दी गयी.

पूर्वोत्तर राज्य एवं उग्रवाद

वैदिक काल से ही पूर्वोत्तर क्षेत्र भारतवर्ष का अभिन्न अंग रहा है. यह क्षेत्र अपने गौरवशाली इतिहास और समृद्ध संस्कृति के अलावा भाषा, परंपरा, पर्व-त्योहार, वेश-भूषा आदि की दृष्टि से इतना वैविध्यपूर्ण और समुन्नत रहा है कि इसे भारत का सांस्कृतिक संग्रहालय भी कहा जा सकता है. ईसाई प्रचारकों की विभाजनकारी 'धर्मनीति' और अंग्रेजों की औपनिवेशिक 'राजनीति' ने पूर्वोत्तर भारत में क्रमश: अलगाववाद और उग्रवाद के बीज बोये. यह क्षेत्र स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर कुछेक साल पहले तक उपेक्षा का शिकार रहा है. चार देशों की सीमाओं से घिरे इस भौगोलिक क्षेत्र को, सिलीगुड़ी के निकट करीब 60 किमी की लंबाई तथा औसत चौड़ाई महज 22 किमी है. इस मार्ग को 'सिलीगुड़ी कॉरिडोर' या 'चिकन नेक' भी कहा जाता है, जो पूर्वोत्तर राज्यों को शेष भारत से जोड़ता है. पूर्वोत्तर में हो रही सुनियोजित घुसपैठ तथा धर्मांतरण को प्राथमिकता के आधार पर रोकना जरूरी था. अगर पूर्व में ऐसा किया गया होता तो पूर्वोत्तर की समस्याएं इतनी विकराल नहीं हो पातीं. परंतु खेदजनक है कि इस दिशा में पर्याप्त पहल नहीं हुई. फलत: पूर्वोत्तर का अधिकांश क्षेत्र अलगाववाद और हिंसा का शिकार हो गया. भारत के पूर्वोत्तर राज्यों और उग्रवाद के बीच आजादी के समय से ही चोली-दामन का साथ रहा है. यह कहना ज्यादा सही होगा कि यह दोनों एक-दूसरे की पहचान बन चुके हैं. सुंदर पहाड़ियों, घाटियों व नदियों से घिरे भारत के पूर्वोत्तर राज्यों के लिए बीते कुछ साल उग्रवाद के साए में रहे. पूर्वोत्तर भारत के सात राज्यों में प्राकृतिक सौंदर्य का खजाना बिखरा पड़ा है. लेकिन इनकी चर्चा इसके लिए नहीं, बल्कि चरमपंथ के लिए ही ज्यादा होती रही है. बीते दो दशकों से भी ज्यादा समय से यह पूरा इलाक़ा उग्रवाद का पर्याय बन गया है. हर नया साल इलाके के लोगों के लिए नई सुबह का संदेश लेकर जरूर आता है लेकिन बीतते न बीतते वह चरमपंथ की अपनी पारंपरिक छवि को और पुख्ता कर जाता है. नागालैंड में कोई डेढ़ दशक से जारी शांति प्रक्रिया इसका जीवंत उदाहरण है. इसी तरह असम में यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असम यानी अल्फा के साथ बातचीत की प्रक्रिया आज भी जारी है.

पूर्वोत्तर भारत के सात राज्यों में कोई भी राज्य इस समस्या से अछूता नहीं रहा है. इन तमाम राज्यों में समस्या की मूल वजह यह है कि ये लोग आजादी के इतने सालों बाद भी खुद को भारत का हिस्सा नहीं मानते. पहले इन इलाकों में राजाओं या कबीलों का शासन था. अब भी इन लोगों को लगता है कि भारत में जबरन उनका विलय किया गया है. इसलिए देश के दूसरे राज्यों से जाने वालों को खासकर मणिपुर व नागालैंड जैसे राज्यों में अब भी हिंदुस्तानी कहा जाता है. पहले ज्यादातर राज्य एक साथ थे. बाद में राजनैतिक समीकरणों के चलते उनको अलग राज्य का दर्जा दिया गया. इनके अलावा नार्थ ईस्ट फ्रंटियर एरिया यानी नेफा कहे जाने वाले इलाके को अरुणाचल प्रदेश का नाम दिया गया. उग्रवाद की समस्या ने सबसे पहले म्यांमार से सटे मिजोरम में सिर उठाया था. वहां लाल देंगा की अगुवाई में कोई दो दशकों तक हिंसक आंदोलन हुआ था. लेकिन बाद में केंद्र सरकार के साथ समझौते के तहत वहां शांति बहाल हुई और फिलहाल वही राज्य सबसे शांत माना जाता है. मिजोरम की तर्ज पर बाकी राज्यों में भी संप्रभुता की मांग में उग्रवाद ने सिर तो उठाया लेकिन वहां समाधान का वह तरीका कारगर नहीं हो सका जिसके चलते मिजोरम में स्थायी शांति बहाल हुई थी. मिसाल के तौर पर नागालैंड को गिनाया जा सकता है.

नागा समस्या : नागालैंड में नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल ऑफ नागालैंड (एनएससीएन) ने उग्रवाद का बिगुल बजाया था. बाद में वह गुट दो हिस्सों में बंट गया. नागा संगठन नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल ऑफ नागालैंड यानी एनएससीएन का इसाक-मुइवा गुट असम, मणिपुर और अरुणाचल प्रदेश के नागा-बहुल इलाकों को मिलाकर नागालैंड के गठन और संप्रभुता की मांग कर रहा है. केंद्र सरकार ने कोई 15 साल पहले संगठन के इसाक-मुइवा गुट के साथ शांति प्रक्रिया शुरू की थी. लेकिन देश-विदेश में दर्जनों बैठकों के बावजूद राज्य की जमीनी हकीकत में कोई बदलाव नहीं आया है. नतीजा यह रहा कि जो शांति प्रक्रिया उग्रवाद से जूझ रहे पूर्वोत्तर राज्यों के लिए एक मिसाल बन सकती थी, वह खुद ही अनिश्चितता के भंवर में फंस गई है. राज्य में सरकार चाहे किसी की भी हो, उग्रवादियों की समानांतर सरकार चलती है. नागा उग्रवादी पड़ोसी अरुणाचल प्रदेश और मणिपुर में भी सक्रिय हैं. नागा बहुल इलाकों को मिला कर ग्रेटर नागालैंड के गठन की मांग के चलते इलाके में अक्सर हिंसा होती रही है, जिसकी आंच पड़ोसी राज्यों को भी पहुंचती है.

मणिपुर : नागालैंड से सटे मणिपुर में उग्रवाद के पनपने की सबसे मजबूत वजह उसका म्यांमार की सीमा से सटा होना है. पूर्वोत्तर

में सबसे ज्यादा सक्रिय उग्रवादी गिरोह इसी राज्य में हैं. केंद्र सरकार ने उग्रवाद के दमन के लिए इलाके में सशस्त्र बल विशेषाधिकार अधिनियम तो लागू कर रखा है. लेकिन अब तक इस अधिनियम ने मुश्किलें ही ज्यादा पैदा की हैं. उग्रवादियों की तादाद लगातार बढ़ती ही जा रही है. नागालैंड की तरह यहां कोई शांति प्रक्रिया भी शुरू नहीं की गई है. वरिष्ठ राजनीतिक पर्यवेक्षक के. हेमेंद्र सिंह सवाल करते हैं, ''आखिर शांति प्रक्रिया किसके साथ शुरू करे सरकार?'' असम और नागालैंड में तो उग्रवादी संगठनों की तादाद कम है और उनके साथ बातचीत के जरिए शांति बहाल करने की कोशिश हो सकती है. लेकिन यहां कम से कम तीन दर्जन गुट हैं. उन सबको शांति प्रक्रिया के लिए एक छतरी के नीचे लाना असंभव है. ऐसे में मणिपुर से उग्रवाद का खात्मा मुश्किल लगता है. एक मोटे अनुमान के मुताबिक, इस राज्य में उग्रवाद के सिर उठाने के बाद अब तक कोई दस हजार लोग मारे जा चुके हैं. लेकिन गैर-सरकारी आंकड़ा इससे कई गुना ज्यादा है. दरअसल, मणिपुर लगभग दो हजार वर्षों तक एक स्वाधीन राज्य रहा है. वर्ष 1947 में ब्रिटिश शासकों की वापसी के बाद यह आजाद हो गया था. लेकिन दो साल बाद ही इसका भारत में विलय हो गया. मणिपुर के लोगों की दलील है कि उनके राजा से जबरन विलय के समझौते पर हस्ताक्षर कराए गए थे.

असम : भले ही असम में भी उग्रवाद की समस्या इतनी बड़ी नहीं है लेकिन बावजूद इसके राज्य में मौजूद अल्फ़ा उग्रवादी संगठन राज्यों में अपने पांव फैलाये हुए है. जिससे आज की तत्कालीन सरकार के साथ साथ पूर्व की सरकार ने भी लम्बे अरसे से अल्फ़ा के साथ शांति प्रक्रिया शुरू करने का प्रयास किया था और उग्रवादियों को समाज की मुख्यधारा में लाने का प्रयास आज भी जारी है लेकिन सफ़र अभी लंबा है.

अरुणाचल प्रदेश एवं मेघालय : असम के दौरे पर गए पूर्व केंद्रीय गृह सचिव, जी.के. पिल्लै, जो शांति प्रक्रिया शुरू करने में अहम भूमिका निभाते रहे हैं, कहते हैं-''अल्फा के बातचीत विरोधी नेताओं को चीन का भी समर्थन हासिल है.'' हालांकि चीन इसका खंडन करता रहा है. पिल्लै का कहना था कि पूर्वोत्तर के उग्रवादी गुटों को म्यांमार के जंगलों से खदेड़ने के लिए उस देश की सेना को मजबूत करना जरूरी है. म्यांमार की सेना इन संगठनों के खिलाफ अभियान चलाने की इच्छुक नहीं है और उसके पास वैसी ताकत भी नहीं है. नागा शांति प्रक्रिया में केंद्र के मध्यस्थ की भूमिका निभा चुके पिल्लै कहते हैं, ''असम के लोग अब शांति व विकास चाहते हैं. इसलिए अल्फा के प्रति लोगों का समर्थन घट रहा है''.

पूर्वोत्तर राज्यों में प्राकृतिक संसाधनों की भरमार होने के बावजूद भी आज तक पूर्वोत्तर का समुचित विकास नहीं हो पाया है और यहीं कारण है कि राज्य के लोग गरीबी और बेरोजगारी से जूझ रहे है और मजबूरन अपराध की तरफ अग्रसर हो रहे हैं. अरुणाचल प्रदेश और असम की नदियों पर अगर पनबिजली परियोजनाएं लगाई जाए तो वहां से देश के आधे हिस्से को बिजली की सप्लाई की जा सकती है लेकिन अब तक इसके लिए बनी तमाम योजनाएं फाइलों में पड़ी धूल फांक रही है. उग्रवादी संगठनों की दलील है कि विकास नहीं होने की वजह से इलाके में रोजगार के मौके नहीं है, नतीजन ज्यादातर युवक इन संगठनो में शामिल हो जाते हैं. मणिपुर के पत्रकार चूड़ामणि सिंह कहते हैं, दरअसल, उग्रवाद इस इलाके में आजीविका का प्रमुख साधन बन गया है. सरकार विकास नहीं होने के लिए उग्रवाद को जिम्मेदार ठहराती रही है और उग्रवादी सरकार को. 'पहले अंडा या पहले मुर्गी' की तर्ज पर आरोप-प्रत्यारोप का दौर चलता आ रहा था. हालांकि अब तत्कालीन सरकार से पूर्वोत्तर राज्यों को देश की मुख्य धारा से जोड़े जाने का काम जोरों से हो रहा है, पूर्वोत्तर के विकास में तत्कालीन सरकार ने यहां रोजगार को बढ़ावा देने के लिए पूर्वोत्तर विकास योजना 2017 को 2020 तक बढ़ाने की मंजूरी दी है. इस योजना के तहत पूर्वोत्तर राज्यों में 3,000 करोड़ रुपये से एमएसएमई क्षेत्र को प्रोत्साहन दिया गया है.

'एक्ट ईस्ट नीति' से खुलेंगे संभावनाओं के द्वार : इधर सरकार ने इस क्षेत्र का समग्र विकास सुनिश्चित करने तथा शांति स्थापित करने के लिए कई कदम उठाए हैं. सरकार की 'एक्ट ईस्ट नीति' ने संभावनाओं के द्वार खोलने के साथ इस क्षेत्र की जनता में नई उम्मीद भी पैदा की है. पूर्वोत्तर भारत को उत्पादन और विकास के हब के रूप में विकसित करने की महत्वाकांक्षी कार्य योजना का कार्यान्वयन किया जा रहा है. इस उपेक्षित क्षेत्र को आर्थिक रूप से अधिक गतिशील और समृद्ध बनाया जा रहा है. सड़क, रेल, नदी और हवाई मार्गों के संजाल द्वारा माल-असबाब और व्यक्तियों का पूर्वोत्तर आवागमन बढ़ाया जा रहा है. इससे तकनीक और विचारों के आदान-प्रदान एवं प्रवाह में भी गुणात्मक वृद्धि हो रही है. सरकार ने संवाद और संवेदनशीलता से इस क्षेत्र के वर्षों से लंबित कई मुद्दों का भी समाधान किया है.

राहुल राम
क्षे.का., त्रिवेन्द्रम

JOB FAMILY

1. Need & Significance of Job family

Allocation of capital by Government of India in public sector banks mandated these banks adopting "Reform Agenda for Responsive and Responsible Banking" known as EASE agenda of Government of India consisting of 6 themes and 62 action points which are to be implemented in set time frame.

As per Action Point 29, Banks should go for Specialisation through job families and to appropriately identify and optimally allocate personnel to enable:

a) Identification of roles for each job family

b) Obtaining of options

c) Optimal allocation of personnel to job families through an objective process

In order to enhance the overall efficiency and output of the organisation,it is necessary to have a pool of employees in important job functions with sound domain knowledge. In order to facilitate and foster development of specialised skills in identified functional banking areas , the concept of job family was introduced in our Bank vide IC:6869 dated 19-10-2018 and the details are as under.

2. Job family related terms

Job Family: Job Family is a group of jobs that involve work in the same general occupation. These jobs have related knowledge requirements, skill sets and abilities. Credit, Credit Monitoring & Risk Management (CCMR) is an example of a family.It is a general way to organize job functions into bigger groups to ease competence wise deployment of employees.

Function: Function is a more specialized area within a family. In a function, the same or relatively similar work is performed, a similar skill set is required and it is possible to move within the function with minimal training. For example, Processing of credit proposals is a function within the CCMR family.

Category: Category defines the type of work performed, as opposed to the occupation or subject matter. The three categories are: 1) Operational 2) Professional, 3) Supervisory and Managerial. A job function can include more than one type of work, so within processing, there can be the service of a technical officer as well as the branch head.

Job Level: Job level reflects the amount of responsibilities, impact and scope of a job as is defined by the scales in our organization.

3. Job families identified in our Bank

Job Families have been identified based on our organizational structure and covering the existing verticals as under.

Sr. No	Business Verticals Covered	Job Family
1.	Large Corporate, Mid-Corporate, MSME, Retail Advances, Credit Monitoring & Restructuring Department, Credit Recovery, Risk Management , Compliance.	Credit, Credit Monitoring & Risk
2.	International Banking & Domestic, Foreign Business, Treasury	Treasury & Forex
3.	Personal Banking & Operations, Business Process Transformation, Customer Acquisition Group, Government Business.	Branch Operations, Sales & Marketing.
4.	Rural & Agriculture Business Department, Financial Inclusion Department.	Agriculture & Financial Inclusion
5.	Human Resources, Training, Employee Relations, Vigilance.	HR &Vigilance
6.	Information Technology and Digital Banking Department, CISO Office.	IT, Digital Banking & CISO Office
7.	Central Accounts & Joint Venture, Finance Planning & Investor Relations, Audit	Central Accounts, Economic Intelligence & Analytics

3.1 Branch Managers are to be part of the Branch Operations, Sales & Marketing job family.

3.2 Officers from the 'general pool' i.e. those not part of any job family shall be deployed in departments of Support Services, Corporate Communications, and any other department as required.

3.3 In each job family, some job roles shall qualify as 'skilled or specialized', which shall be filled in by calling for applications for these specific job roles and taking decisions in this regard. Remaining job roles shall be occupied by officers, who remain in the 'general pool', that is those who do not opt for any particular job family, or those who are not selected for the job family to which they have applied. Thus in each job family there shall be a mix of specialized and general roles.

3.4 Bank at its discretion may utilize the services of officers from the general pool, who may not have opted for any job family, in the 'skilled or specialized' roles, if required. Therefore, mere placement of an officer from the 'general pool' in a particular department/branch/office would not place them in that job family.

3.5 Whether or not a role is a skilled one and in case of a skilled role, the job family to which it belongs, shall be decided by the characteristics of the job.

4. Eligibility & Method of Selection:

During phase I of the implementation of the scheme in October 2018, all confirmed officers (other than specialists) in scale III & below were eligible to apply. Now for selection under phase II which is in process, Scale I to scale IV officers with a minimum of 2 years of service in officer cadre as of 01-04-2019 will be considered for selection under the scheme for applications have been already called for.

The suitability of officers for selection of job family will on 10 points scoring pattern as under :

Sr. No.	Particulars	Maximum Score
1.	Professional Qualification & training	3.00
2.	Past Experience	2.00
3.	APR score in last three years	2.00
4.	Recommendation of FGM & Vertical Head	3.00
		10.00

5. Selection Process:

A Central Selection Committee (CSC) has been constituted for selection of employee into job families. This committee shall comprise of General Manager (HR), a General Manager from Central Office selected by ED, a Senior Executive in scale V/VI from each of the job families and Asst. General Manager (HR) as Member Secretary. FGMOs shall submit their recommendations to the CSC for consideration.The CSC shall consider the options and recommendations of the FGMO and shall identify suitable officers for filling the respective job families in the Zone.

During selection process, efforts shall be made to allocate officers to the job family of their first preference, if they have scored well against it. In case of excess officers having applied for a job family, the highest scorers shall be chosen for it and the officers next in line shall be considered for job family of second choice and so on. For this purpose, job familywise merit list of officers shall be prepared, based on score an officer has received against that job family. Care shall be taken to ensure equitable distribution of high performing officers among the job families. Preference shall be given to employees who have completed mandatory rural service.

In the first phase, the following numbers of officers have been selected in various job families.

Sr. No	Job Family	Number of officers selected
1.	Credit, Credit Monitoring & Risk	342
2.	Treasury & Forex	65
3.	Branch Operations, Sales & Marketing	297
4.	Agriculture & Financial Inclusion	21
5.	HR & Vigilance	44
6.	IT, Digital Banking & CISO Office	47
7.	Central Accounts, Economic Intelligence & Analytics	14
	Total	830

6. Placement of Selected Offices

Selected officers in scale I and II shall be allocated to Zone/ Regions for final placement, keeping in view the number of identified positions in the different job families. Selected officers in scale III shall be placed in suitable positions by the Zone, in consultation with the vertical heads of the respective job families. Posting of officers selected from different verticals of Central Office, shall be decided centrally. Some of the officers identified for different job families may already be working in that job family and in such cases no movement shall be required. However, in case of long tenure at the same branch/centre, an officer may be given suitable change to some other position within the job family.

7. Tenure in Job Family

The selected officers are expected to continue in the job family for a period of up to 10 years, shall also include any period of time already spent, in the job family to which they are selected. An officer must complete a minimum of 3 years in one function within a job family, after which he/she may be moved to another function within the same family. An officer shall also have the option to exit a job family, to which he has been selected, after one year of such selection. All such requests shall be considered by the Central Committee on recommendation of FGMO and if accepted, the concerned officer shall be shifted to the general pool.

Officers who exit from a job family, on their own request shall be barred from applying to another job family for 2 years or 2 opportunities, whichever is earlier. However, if he/she is discontinued from a job family by the Bank, he/she may apply for selection in another job family.

8. Benefits of Job Family

A career path based on the job family approach shall allow employees to work in their area of interest, at the same time allowing the Bank to reap the benefits of their professional qualifications.

Creation of job families and selection of officers under them shall ensure building of officers with sound domain specific knowledge. This shall work towards reducing mistakes/risk and opportunity loss, thereby enhancing efficiency.

Selection into a job family of own choice, shall convey recognition of one's good performance and pave the way for further grooming with exposure to best practices of banking through both internal and external trainings at reputed institutes, thereby encouraging a performance culture and giving officers the confidence to take up higher assignments.

Deployment based on the job family approach, shall streamline training needs assessment, as well as ensure proper utilization of learned skills/knowhow at the workplace.

Janardan Gadi
Staff College, Bengaluru

पूर्वोत्तर भारत में उद्योग विकास

भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में अपार प्राकृतिक संसाधन हैं. यहां देश का 34% जल संसाधन हैं. यह क्षेत्र पूर्व के मुख्य देशों तथा बांग्लादेश एवं म्यांमार जैसे पड़ोसी देशों के निकट होने के कारण कूटनीतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है. अपार संसाधन, ऊपजाऊ कृषि भूमि और अकूत मानव पूंजी, इन सबके साथ यह क्षेत्र देश के सर्वाधिक संपन्न क्षेत्रों में से एक हो सकता है.

इसके बावजूद भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र देश के सर्वाधिक पिछड़े क्षेत्रों में से एक है. यहां की प्रति व्यक्ति आय सबसे कम है, निजी निवेश की कमी है, पूंजीगत निर्माण का निम्न स्तर अवसंरचनागत पर्याप्त सुविधाएं और भौगोलिक दृष्टि से अलग-थलग होने से उसके खनिज संसाधनों, जल ऊर्जा क्षमता और जैव विविधता का पर्याप्त रूप से प्रयोग नहीं किया गया है. खराब बुनियादी ढ़ांचा, अपर्याप्त बिजली की आपूर्ति और उत्पादन की उच्च लागत के कारण पूंजी की कमी आदि इस क्षेत्र में औद्योगिक विकास की कमी के कई कारक हैं.

क्षेत्र की कमजोरी : सार्वजनिक क्षेत्र के निवेश का निम्न स्तर और मुश्किल भौगोलिक पृष्ठभूमि.

हालांकि, पिछले कई वर्षों में इस क्षेत्र की स्थिति में काफी सुधार हुआ है. मेघालय, त्रिपुरा और अरुणाचल प्रदेश में सबसे अधिक वृद्धि दर्ज करने के साथ क्षेत्र के सभी आठ राज्यों में औद्योगिक गतिविधि की हिस्सेदारी बढ़ी है.

उत्तर-पूर्वी राज्य खनिज भंडार, प्राकृतिक परिदृश्य, चाय संपदा, तेल और प्राकृतिक गैस से भी अच्छी तरह से संपन्न हैं. जो सेवाओं, औद्योगिक और विनिर्माण निवेश के लिए बहुत अच्छा अवसर प्रदान करते हैं. विदेशी पर्यटकों के लिए भी यह क्षेत्र आकर्षण का सबब है. केन्द्र और राज्य सरकार क्षेत्र भर में व्यवसायों के लिए विभिन्न सेक्टर-लिंक्ड और स्थान-विशिष्ट प्रोत्साहन और कर लाभ प्रदान करती हैं. उत्तर पूर्वी राज्य भी अंग्रेजी दक्षता के साथ उच्च शिक्षित आबादी का दावा करते हैं. विदेशी निवेशकों के लिए यह क्षेत्र काफी लाभदायक साबित हो रहा है.

हाल ही में भारत सरकार की 'पूर्व की ओर देखो' नीति ने उत्तर पूर्व को और अधिक महत्वपूर्ण और रणनीतिक बना दिया है.

इस क्षेत्र के उद्योगों को मोटे तौर पर निम्नानुसार वर्गीकृत किया जा सकता है :

कृषि आधारित उद्योग : इसमें चाय, चीनी, अनाज, मिल उत्पाद उद्योग (चावल, तेल और आटा मिलें), खाद्य प्रसंस्करण और कपड़ा उद्योग शामिल हैं.

खनिज आधारित उद्योग : खनिज आधारित उद्योगों में रेलवे वर्कशॉप, इंजीनियरिंग उद्योग और री-रोलिंग मिल्स, स्टीलवर्क्स, मोटर-वाहन वर्कशॉप, जस्ती तार इकाइयां, साइकिल कारखाने, एल्यूमीनियम के बर्तन, साइकिल स्पेयर पार्ट्स, स्टील उद्योग शामिल हैं. तार जाल, कांटेदार तार, सीमेंट उद्योग आदि के अलावा गैर-धातु आधारित उद्योगों में पेट्रोलियम तेल उद्योग और प्राकृतिक गैस आधारित उद्योग भी शामिल हैं.

वन-आधारित उद्योग : इसमें प्लाईवुड, आटा-चक्की, कागज और कागज लुगदी, मैच, पत्र, हार्ड बोर्ड उद्योग आदि शामिल हैं.

अन्य उद्योग : बिजली उत्पादन, उर्वरक, प्रिंटिंग प्रेस, ईंट और टाइल्स, बर्फ, रसायन उद्योग आदि शामिल हैं.

उत्तर पूर्वी क्षेत्र के संगठित उद्योगों में चाय, पेट्रोलियम,कागज, सीमेंट, प्लाईवुड, कोयला, जूट, चीनी, उर्वरक आदि शामिल हैं.

पूर्वोत्तर क्षेत्र के सात राज्यों में असम सबसे अधिक संपन्न औद्योगिक राज्य है. चाय और पेट्रोलियम क्षेत्र राज्य के औद्योगिक परिदृश्य पर हावी है. असम में कच्चे तेल के कुल उत्पादन के आधे से भी कम, 52% चाय और लगभग 55% प्लाईवुड उत्पादन होता है. इनके अतिरिक्त उल्लेखनीय बोंगाईगांव रिफाइनरी और पेट्रोलियम इकाई में उत्पादित पॉलिएस्टर फाइबर पर आधारित फाइबर मिश्रित पॉलिएस्टर यार्न मिलों की स्थापना की गई है.

ये उद्योग, क्षेत्र के आर्थिक विकास में योगदान दे रहे हैं. साथ ही कई समस्याओं का सामना भी कर रहे हैं.

चाय उद्योग : असम और त्रिपुरा इस क्षेत्र में पारंपरिक चाय उगाने वाले क्षेत्र हैं. असम भारत में चाय का सबसे बड़ा उत्पादक है. अन्य सभी पूर्वोत्तर राज्यों अर्थात अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड में चाय की खेती करने के लिए कुछ प्रयास किए जा रहे हैं.

तेल उद्योग : असम देश का पहला राज्य है, जहां 1889 में डिगबोई में तेल पाया गया था. डिगबोई, असम में 1901 के दौरान देश की सबसे पुरानी तेल रिफाइनरी स्थापित की गई थी. रिफाइनरी अब भारतीय तेल निगम के असम डिवीजन से संबंधित है. 3 लाख टन पेट्रोल, केरोसिन, डीजल और अन्य पेट्रोलियम उत्पादों की शोधन क्षमता है. असम में सबसे पुरानी और सबसे लंबी क्रॉस कंट्री कच्चे तेल की पाइपलाइन (लगभग 1148 किमी) है. असम, अपनी अंतर्निहित शक्ति के साथ असम तेल और गैस क्षेत्र में अन्वेषण के अवसर प्रदान करता है. निजी प्रतिभागियों के लिए तेल क्षेत्र द्वार असम ने खोल दिये हैं. साथ ही ब्रह्मपुत्र को राष्ट्रीय जलमार्ग घोषित करने से तेल क्षेत्र के विकास के लिए कच्चे माल और परियोजना उपकरणों के परिवहन में सुविधा हुई है. सार्वजनिक क्षेत्र के तहत गुवाहाटी के नूनमाटी में पेट्रोलियम उद्योग स्थापित किया गया. वर्ष 1962 में इसका उत्पादन शुरू हुआ था.

पर्यटन उद्योग : भारत का उत्तर पूर्वी भाग लगभग दूसरी दुनिया है. यह जादुई सुंदरता और मनमोहक विविधता का स्थान है. जहां ब्रह्मपुत्र, बराक और इम्फाल जैसी नदियां बहती हैं और जहां पहाड़ लुभावने परिदृश्य से भरे हैं. इस क्षेत्र की लोक संस्कृति भी महत्वपूर्ण है.

उत्तर-पूर्व में पर्यटन उद्योग कई राष्ट्रीय उद्यानों, पशु और पक्षी अभयारनों, विरासत स्थलों, ऐतिहासिक स्थलों और विभिन्न संस्कृतियों के बीच समेटे हुए है. आने वाले दशकों में इस क्षेत्र में अधिक वृद्धि होगी. इस क्षेत्र के विकास को बढ़ाने के लिए बुनियादी ढ़ांचे का विकास जरूरी है. उत्पाद विकास, ट्रेकिंग, विंटर स्पोर्ट्स, वाइल्ड लाइफ और रिवर बीच रिसॉर्ट्स का विकास, सांस्कृतिक आत्मीयता वाले क्षेत्रों और देशों के बाजारों के नए स्रोतों की खोज करना, पर्यावरण और प्राकृतिक विरासत परियोजनाओं का सांस्कृतिक संरक्षण और विपणन योजना का शुभारंभ, विभिन्न पर्यटन केंद्रों में सस्ते आवास उपलब्ध कराना, सार्वजनिक क्षेत्र के निगमों में सेवा दक्षता सुधार, हवाई अड्डों पर सुविधा प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करना, मानव संसाधन विकास, निगरानी और मूल्यांकन, संगठन को मजबूत करना, जागरूकता और सार्वजनिक भागीदारी

बनाना और आधारभूत संरचना के विकास में निजी क्षेत्र की भागीदारी को सुविधाजनक बनाना आदि के जरिए इस क्षेत्र को एक आकर्षक पर्यटन स्थल के रूप में पेश करने का प्रयास किया जा रहा है ताकि इस क्षेत्र के लिए वह राजस्व अर्जित कर सकें और स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर प्रदान कर सकें.

रेशम उद्योग : दुनिया में उत्पादित विभिन्न कपड़ा फाइबर के बीच रेशम एक अद्वितीय स्थान रखता है. जिन राज्यों में सेरीकल्चर और रेशम बुनाई को प्राथमिकता दी है, उनमें असम, मणिपुर और मिजोरम शामिल हैं. असम सबसे महत्वपूर्ण रेशम उत्पादक राज्य है. असम को सेरीकल्चर के अभ्यास के लिए उपयुक्त जलवायु और वातावरण मिला है. असम में सिल्क वर्म्स की तीन किस्में पाई जाती हैं, जिनका नाम है-मुगा, एरी और पैट या शहतूत सिल्क वर्म्स. देश में असम मुर्गा और एरी रेशम का सबसे बड़ा उत्पादक है.

बेरोजगारी की समस्या के लिए उपाय : औद्योगीकरण जिससे शिक्षित व्यक्तियों और कुशल श्रमिकों के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा करना.

नई कृषि तकनीक और खेती की आधुनिक विधियों का प्रसार एवं कृषि उत्पादकता बढ़ाना.

उत्पादन उन्मुख, तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा प्रणाली को प्रतिस्थापित करना.

स्वरोजगार के दायरे को बढ़ाने के लिए उदार संस्थागत वित्त को उपलब्ध कराना.

लघु अवधि के उपाय : छोटे उद्योगों और व्यापार के लिए लोगों के छोटे समूहों को विशेष सहायता प्रदान करना.

सिंचाई, बिजली परियोजनाओं और सड़क निर्माण कार्यक्रम के तहत काम और प्रशिक्षण शिविरों की स्थापना करना.

वर्तमान में जनबल (मैन पावर) की कमी के क्षेत्रों में प्रशिक्षण सुविधाओं की व्यवस्था करना.

सार्वजनिक अधिकारियों द्वारा कुटीर और लघु उद्योग के उत्पादों को सक्रिय प्रोत्साहन.

परिवहन और संचार क्षेत्र : उचित परिवहन और संचार प्रणाली के अभाव में इस क्षेत्र का आर्थिक विकास मंद हो रहा है. इस क्षेत्र की प्रमुख परिवहन प्रणालियों में शामिल हैं - रेल, सड़क, जल और वायु परिवहन. सड़क परिवहन प्रणाली उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में परिवहन के सबसे महत्वपूर्ण साधनों में से एक है. क्षेत्र के कठिन और दुर्गम क्षेत्रों में, सड़क परिवहन ही उतना एकमात्र साधन है. रेल परिवहन का विस्तार नहीं हुआ है.

डाकघरों का नेटवर्क, टेलीफोन एक्सचेंज और टेलीफोन कनेक्शन, संचार का प्रमुख आधारभूत ढ़ांचा है. दूरसंचार के माध्यम से उत्तर पूर्व में संचार नेटवर्क को बेहतर बनाने के लिए योजनाएं बनानी होंगी.

लघु उद्योग की समस्याएँ :

अकुशल जनशक्ति :- अशिक्षा, अज्ञान, प्रशिक्षण सुविधाओं की कमी के कारण लघु

उद्योगों में जनशक्ति की अक्षमता ने इस के विकास को प्रभावित किया है.

ऋण सुविधा का अभाव :- वाणिज्यिक बैंकों के राष्ट्रीयकरण के बाद इस स्थिति को बदल दिया गया है लेकिन अब भी यह संतोषजनक स्तर से दूर है.

पुरानी मशीनरी :- पुराने और अप्रचलित मशीनरी के कारण छोटे पैमाने के उद्योगों को समस्याओं का सामना करना पड़ता है.

विपणन सुविधाओं का अभाव :- उद्योगों के लिए संगठित विपणन सुविधाओं का अभाव है. उन्हें अपने उत्पाद बेचने के लिए बिचौलियों पर निर्भर रहना पड़ता है.

पुराने डिजाइन :- पुराने डिजाइनों के साथ छोटे पैमाने के उद्योग उत्पाद की आधुनिक मांग को पूरा करने में असमर्थ हैं.

लघु-स्तरीय उद्योगों की संभावनाएँ :- उत्तर-पूर्व क्षेत्र में लघु-स्तरीय उद्योग, अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं.

श्रम गहन :- लघु उद्योग श्रम आधारित है. वे बड़े उद्योगों की तुलना में अधिक रोजगार के अवसर प्रदान करेंगे और बेरोजगारी की समस्या को हल करने में मदद करेंगे.

कम पूंजी निवेश :- छोटे पैमाने के उद्योगों को कम पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है. चूंकि इस क्षेत्र में पूंजी दुर्लभ है. इसलिए लघु उद्योग इस क्षेत्र के लिए सबसे उपयुक्त हैं.

पूर्वोत्तर भारत उद्योग-धंधों के विकास हेतु बहुत बड़ा क्षेत्र है. सरकारी सहायता प्राप्त होगी या सरकार द्वारा इन क्षेत्रों के विकास की तरफ ध्यान दिया जाएगा तो एक बार पुनः भारत उद्योग के क्षेत्र में विश्व प्रसिद्ध हो जाएगा.

शुभोदीप मुखर्जी
क्षे.म.प्र.का.कोलकाता

प्रतियोगिता क्र. 152 | नयी प्रतियोगिता / New Contest | Contest No. 152

फोटो–अनिता भोबे, यूनियन धारा

शीर्षक दें /'Coin a Caption'

क्या यह तस्वीर आपको कल्पना की उड़ान भरने या अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित कर रही है? तो फिर इंतजार कैसा? फौरन अपने की–बोर्ड पर उंगलियाँ चलाना शुरू करें और हमें 'uniondhara@unionbankofindia.com' या 'sulabhakore@unionbankofindia.com' पर इस तस्वीर से संबंधित सिर्फ एक या दो पंक्तियों में बढ़िया–सा शीर्षक लिखकर ई–मेल करें. आप अपनी प्रविष्टि 'संपादक, यूनियन धारा, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केंद्रीय कार्यालय, यूनियन बैंक भवन, 11वीं मंज़िल, 239, विधान भवन मार्ग, नरीमन पॉइंट, मुंबई–400 021' इस पते पर भी प्रेषित कर सकते हैं. शीर्षक अंग्रेजी या हिन्दी में भेजा जा सकता है. दोनों ही श्रेणियों के लिए अलग–अलग पुरस्कार रखे गए हैं. कृपया नोट करें कि यह प्रतियोगिता सिर्फ बैंक के सेवारत कार्मिकों के लिए ही है.

यदि आपका शीर्षक हमारे स्तर पर चुना जाता है, तब आपको पुरस्कार के साथ–साथ यूनियन धारा में प्रकाशित होने का मौका भी मिलेगा.

जल्दी करें, प्रविष्टियां प्राप्त करने की अंतिम तिथि है, **20 मई 2020**.

संपादक

Does this photograph fire your imagination or spontaneously inspire to express your feelings? Then what are you waiting for? Start keying in and e-mail us your superb, classy caption, only in one or two lines, related to this photograph only in one or two lines at 'uniondhara@unionbankofindia.com' or 'sulabhakore@unionbankofindia.com'. You can also send your entries to 'Editor, Union Dhara, Union Bank of India, Central Office, Union Bank Bhavan, 11th floor, 239, Vidhan Bhavan Marg, Nariman Point, Mumbai – 400 021'. Caption can be sent in English or Hindi. Both the categories have different prizes. Please note that this contest is open only for the present staff members of the Bank.

If your caption is chosen, then you will be awarded a prize and your caption will be published in 'Union Dhara'.

Hurry up, the last date to receive entries is **20th May, 2020**.

Editor

'यूनियन धारा' प्रतियोगिता क्र.150 'हरित पहल पर स्लोगन लिखें'

पुरस्कार प्राप्त योगदान कर्ता

	हिंदी खंड	अंग्रेजी खंड
प्रथम पुरस्कार	सुश्री नीरजा कोष्टी, क्षे.का., जबलपुर	श्री सचिन कुमार, आर एम आर बी डी, कें. का., मुंबई
द्वितीय पुरस्कार	श्री गुंजेश बिसेन, जबलपुर सिटी शाखा	श्री संजय शर्मा, आर एम आर बी डी, कें. का., मुंबई
तृतीय पुरस्कार	श्री मनीष कुमार बन्सल, क्षे.का., जबलपुर	श्री गोकुलानंद दास, आर एम आर बी डी, कें. का., मुंबई
प्रोत्साहन पुरस्कार	श्री अनुराग गुप्ता, आर एम आर बी डी, कें. का., मुंबई	श्री महेश घोरपडे, अनुपालना विभाग (के वाई सी), कें. का., मुंबई

सभी विजेताओं को हार्दिक बधाई !!!

उच्च कार्यपालक वेतनमान VII में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई !!

श्री डी.बी. कांबले
महाप्रबंधक

श्री टाटा वेंकट वेणुगोपाल
महाप्रबंधक

उच्च कार्यपालक वेतनमान VI में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई !!

श्री जी.एन. गामी
उप महाप्रबंधक

श्री रमेश वेगे
उप महाप्रबंधक

श्री सरोज कुमार दाश
उप महाप्रबंधक

श्री बरुन कुमार
उप महाप्रबंधक

श्री एन.सी.वी. भास्कर राव
उप महाप्रबंधक

श्रीमती सौम्या श्रीधर
उप महाप्रबंधक

श्री प्रकाश जी. लोखंडे
उप महाप्रबंधक

श्री मनोज कुमार
उप महाप्रबंधक

श्री अजय कुमार
उप महाप्रबंधक

श्री मुकेश बी. शर्मा
उप महाप्रबंधक

श्री विकास कुमार सिन्हा
उप महाप्रबंधक

श्री हरि ओम वत्स
उप महाप्रबंधक

श्री टी. नंजुनडप्पा
उप महाप्रबंधक

हम आपके नेतृत्व में बैंक के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं.

शुभमस्तु

श्री जी.आर. पाडलकर
महाप्रबंधक

श्री एच.सी. मित्तल
महाप्रबंधक

श्री एम.पी. सिंह
उप महाप्रबंधक

श्री पी.आर. गुप्ता
उप महाप्रबंधक

श्री ए.के. अग्निहोत्री
उप महाप्रबंधक

श्री सी.बी. झा
उप महाप्रबंधक

श्री एन.के. राऊत
उप महाप्रबंधक

श्री डी.के. नाईक
उप महाप्रबंधक

श्री वी.के.एस. सास्त्री
उप महाप्रबंधक

श्री अनुराग चतुर्वेदी
उप महाप्रबंधक

हमें गर्व है

दिनांक 23.07.2019 को श्री यशवंत कुमार जीनगर, वरिष्ठ प्रबंधक और सीएजी प्रमुख, क्षे.का., उदयपुर को न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी के श्री डी.डी. बंसीवाल, वरिष्ठ डिवीज़नल प्रबंधक, उदयपुर द्वारा सम्मानित किया गया. यह सम्मान यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी के साथ गौरवपूर्ण 100 साल पूरे होने तथा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के वैल्यूएबल कस्टमर की तरह साथ निभाने के लिये प्रदान किया गया.

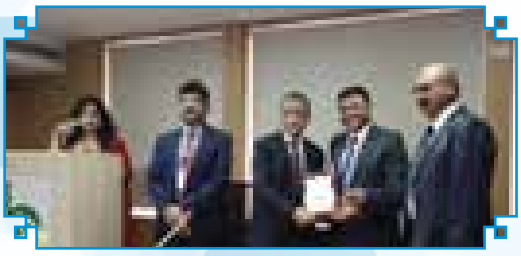

दि. 19.11.2019 को वित्त मंत्रालय द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में, पीएफआरडीए, भारत सरकार द्वारा 'अटल पेंशन अभियान' में बेहतरीन प्रदर्शन करने के उपलक्ष्य में श्री मनोज कुमार, क्षेत्र प्रमुख, इंदौर को अवार्ड ऑफ एप्रिसिएशन प्रदान किया गया.

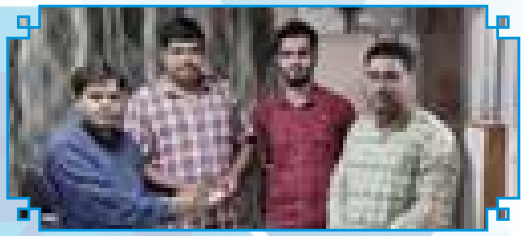

हमारी खेमली शाखा, उदयपुर के मुख्य खजांची **श्री हर्षित मिड्ढा** ने ग्राहक द्वारा भूलवश अधिक जमा की हुई.रु. 50,000/- की राशि उन्हें वापस लौटायी.

हमारी आगरा मुख्य शाखा के प्रधान खजांची श्री योगेश शर्मा ने ग्राहक द्वारा शाखा के कैश काउंटर पर भूलवश छोड़ी गयी रु.5.00 लाख की राशि उन्हें वापस लौटायी.

बधाई

शतकवीर मैच रेफरी, सुनील चतुर्वेदी

क्रिकेट की दुनिया में बैंक का प्रतिनिधित्व करनेवाले मुंबई की खार शाखा के प्रबंधक श्री सुनील चतुर्वेदी शतकवीर मैच रेफरी बने. दिल्ली और हैदराबाद के बीच रणजी ट्रॉफी मुकाबले के दौरान सुनील चतुर्वेदी 100 प्रथम श्रेणी मैचों में रेफरी की भूमिका निभाने वाले देश के पहले शख्स बने. उत्तर प्रदेश क्रिकेट संघ के सचिव युद्धवीर सिंह ने इस दौरान उन्हें सम्मानित किया तथा दिलीप रणजी टीम के कप्तान शिखर धवन, भारतीय टीम के तेज गेंदबाज इशांत शर्मा ने भी इस दौरान सुनील की तारीफ करते हुए उन्हें गुलदस्ता भेंट किया.

कुमारी एन. जी. एस. कीर्तना, सुपुत्री श्रीमती एन.वी.एन.आर. अन्नपूर्णा, क्षे.का., विशाखापट्टणम ने विजयवाड़ा के स्थानिक सुब्रमन्य संगीता समिति संस्था द्वारा दिनांक 20.07.2019 को आयोजित शहर स्तरीय कर्नाटक संगीत एवं वायलिन दोनों प्रतियोगिताओं में प्रथम पुरस्कार जीता तथा मशहूर कर्नाटक संगीतकार, श्री मल्लादि सूरि बाबू के कर कमलों से उन्हें पुरस्कृत किया गया. इसी प्रतियोगिता में उनकी दूसरी सुपुत्री सुश्री एन.बी.एस. गीतिका ने द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया.

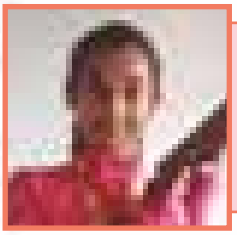

सुश्री प्राजक्ता, सुपुत्री श्री नरेंद्र पवार, प्रधान खजांची, सोनगीर शाखा, नासिक राज्यस्तरीय शालेय 10 मीटर एयर रायफल शूटिंग चैंपियनशिप में विजेता रहीं.

कुमारी हरीका, सुपुत्री श्री पी.आर.वी. श्रीनिवास राव, शाखा प्रबंधक, अमलापुरम शाखा, विशाखापट्टणम ने आंध्र प्रदेश बोर्ड की 10वीं कक्षा की परीक्षा 10 जीपीए अंकों के साथ उत्तीर्ण की.

सुश्री राजदीप जया हर्षद्रय, पत्नी श्री अमित कपाड़िया, सहायक प्रबंधक, निकोल शाखा, अहमदाबाद ने 'हेमचंद्राचार्य नॉर्थ गुजरात यूनिवर्सिटी' से 'गुजराती' विषय में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की.

कुमारी वैष्णवी, सुपुत्री सुश्री ए आर सूर्या कुमारी, वरिष्ठ प्रबंधक (विपणन), क्षे.का., विशाखापट्टणम ने आंध्र प्रदेश बोर्ड की 10वीं कक्षा की परीक्षा 9.7 जीपीए अंकों के साथ उत्तीर्ण की.

कुमारी मनसा, सुपुत्री सुश्री सीएच माधवी, एसडब्ल्यूओ-बी, क्षे.का., विशाखापट्टणम ने आंध्र प्रदेश बोर्ड की 10वीं कक्षा की परीक्षा 9.8 जीपीए अंकों के साथ उत्तीर्ण की.

श्री अंकित, सुपुत्र श्री देवराज हवलदार, वरिष्ठ प्रबंधक, भिवंडी शाखा, महाराष्ट्र ने मुंबई यूनिवर्सिटी के यादवराव तासगावकर कॉलेज ऑफ इंजिनियरिंग, भिवपुरी से बी.ई.(मैकेनिकल) की परीक्षा में 62.33% अंक प्राप्त किये.

कुमार सयान, सुपुत्र श्री रणनिपुण बैनर्जी, मुख्य प्रबंधक (आवि), क्षे.का., मुंबई (उत्तर) ने केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित 12वीं कक्षा की परीक्षा में 92.50% अंक प्राप्त किये.

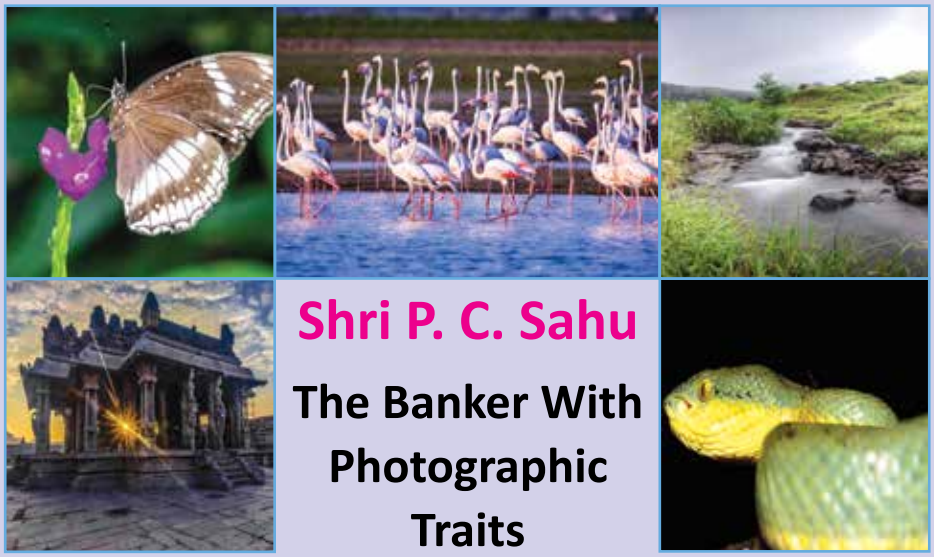

Shri P. C. Sahu

The Banker With Photographic Traits

"Photographs open doors into the past but they also allow a look into the future." - Sally Mann

Friends, today's tech-savvy young generation is 'Selfie maniac'. With the advent of progressive features readily available at their finger tips on mobile phones, everyone poses as a great photographer! But does anybody know that photography requires a creative eye and a technique to convert a mundane subject into an interesting and captivating photograph. The heart and mind are the true lenses of the camera. One of our colleagues bitten by the shutterbug is Mr. Prabhash Chandra Sahu, Senior Manager, Vigilance Dept., C.O., Mumbai. This science graduate joined our Bank as a Scale-I Officer in October, 2001. Basically a native of Bhagalpur, Bihar, he enjoys his Mumbai posting rekindling his photographic talents. He loves shooting things differently and has also developed editing skills to edit pics in Adobe Photoshop. Leaving early in the morning at around 6.00 am to join DCP group for photo walk at different destinations is his Sunday regime. Instead of resting at home on Sundays, he refreshes himself with a good pics trip. Apart from photography, he can play keyboard instrument with one hand and guitar too. But these skills have taken a back seat now as he is trying to get the mastery over table top photography. He says, "Stay low, quiet, keep it simple, don't expect too much, enjoy what you have. The photography has taught me that nothing as such is good or bad on this earth. Our perspective makes every place/ subject interesting." In this candid interview, he describes in detail about his photographic passion.

****

For the very first time, who introduced you to the camera?

In June 1989, while my family was on a pious tour to Haridwar, Dehradun, Mussoorie and Rishikesh, my father had purchased a 'Kodak - Point & Shoot film camera' to capture the awesome natural beauty of the place. That was the first time when I had held a camera and focussed on the object. Though I was not very successful in my first attempt, I had made up my mind to learn the technical aspects to develop my clicking skills. Thereafter, at the age of 20, I was the official photographer for my cousin's wedding and thus I delved deeply in this hobby.

Photography is an active & is the most interesting & sophisticated art form of this century - what do you say?

I've learned over the years exploring photography personally that there is more to enjoy than 'just clicking pictures'. It's a kind of meditation for me, enriching my life in both simple and stellar ways!

Photography requires immense patience and concentration - do you agree?

While you could technically just take photographs from your comfort couch, I'd suggest making your hobby an active lifestyle. I personally love to travel and explore various places. One need not travel to radically new, far away and expensive places, but just go out to a local park or walk through some city streets to take good photographs. It's a talent; no one can take this away from you. Also, it enables us to document our lives and preserve it as history. No doubt, this requires a lot of patience and concentration, but the final output definitely gives you immense inner peace and satisfaction.

Please elaborate on the types of cameras available in the market.

The different cameras available in the market include: **DSLR Camera** (Digital Single Lens Reflex Camera), the most popular one, is a combo of digital imaging sensor with a single reflex camera with detachable lenses. **Mirrorless Camera:** Here absence of optical view finder makes the camera much lighter in weight. **Point and Shoot Camera:** It is a compact camera with a fixed lens but variable focal length, useful for people on vacation to capture family pictures. **Bridge Camera:** It lies between DSLR and

Point & Shoot cameras. These come with fixed lens but most of them cover the telephoto focal range. There are also many other types like Mid Zide format camera, Mobile Camera, Action Camera, etc. Variation in the type of camera depends on the size of sensor on it. Full frame camera has a sensor size of 36*24mm while crop sensor has a size of 22*15mm. Mobile camera has generally sensor size of 6.17*4.55mm. The bigger the sensor size, more details the camera captures and the higher is its price.

Is there any demarcation in the subjects/topics depending on colour medium?

After photography's monochromatic inception in the early 1800s, enthusiasts began experimenting with colour photography. Though colour film reached the masses then, many photographers eschewed this new development and remained loyal to black and white image. Photographers still face the dilemma of deciding whether to present their image in colour or black and white. Elements of colour theory attract the viewer's eye when used effectively. One may convert images to black and white when the light, form or texture in the scene is more compelling than the hues of the subject matter.

What are the different genres of photography?

The different genres of photography are Abstract, Black & White, Commercial product, Wedding/ Event, Macro, Food Photography, Landscape, Travel Photography, Portrait, Product, Fine Art, Fashion, Architectural, Advertising or Life Style, Sports/Action.

This is a costly affair. Is the talent in this field restricted only to the upper strata of the society?

You can pick up photography on virtually any budget! There are many inexpensive camera kits like Canon EOS 550D DSLR Kit come with everything you would possibly need to get started for just a few thousand bucks. If you search online for photography club in your area, you'll find groups that meet on a consistent basis. There are plenty of them online viz. Instagram, You Tube which are free of cost or charge nominally and help the aspiring photographers to learn and develop their hands on photography.

Have you taken any technical training in this field?

Definitely, I have a Diploma in Photography, Post processing/Post Production/ Certification in Table top Photography/Product Photography to my credit. Here technical knowledge & experience as well, of the photographer matters the most.

Now a days, camera is easily available on your mobile phones. What is your experience?

Of course, there is a vast difference in the picture quality of a DSLR and phone camera. The shutter speed, focus and depth of field are best understood with DSLR. The main role is played by sensor. You can achieve excellent results if you understand how to operate various functions of DSLR camera. But if you want photos just for memories and album purpose, then phone camera is the best and easiest to operate. But its biggest drawback is pixels, which blur on enlarging for prints. According to me, the camera you own at the moment when you are clicking is the best camera for photography. To capture the moment for memories is more important than the type of camera.

How do you give captions? Are they necessary?

Photo captions are necessary as this is often the first element read along with the photograph uploaded. Photo captions are important to correlate the caption with the story in photograph.

Have you won any awards for your work?

Generally, I do not participate in any photography competition. My work is my satisfaction and reward. However, based on my work, I got the lifetime memberships of Photographic Society of India, Mumbai (the oldest in Mumbai) and Federation of Indian Photographers Association which are the awards in itself.

What is the difference between a 'still photography' and 'motion photography'?

Still pictures aim to tell a story all in one frame in an instant of time. Motion photography or cinematography as it is called, is aimed to build a story by creating interlocking shots that when edited and played together tell a whole story. I have not yet single-handedly shot for any film.

Who are your ideals in this field?

My ideals in this field are: **Karl Taylor** - a global ambassador for Hasselblad Camera Company and Broncolor Lighting. 'Variety is the spice of life' is his ethos. Karl regularly travels around the globe, as a photographer, ambassador and educator for leading players in the industry and his own range of courses have become the benchmark for effective, entertaining and inspirational training and **Alex Koloskov** is a commercial photographer, co-founder and teacher at Photigy Photography School, instructor at KelbyOne.com, Udemy.com. He is a mix of technicality, innovation, and out of the box thinking who loves to take technical challenges in anything. including photography. He has carved out a stunning photography style that is crisp, sharp, and crystal clear.

What is your message for budding photographers?

Keep it organic and timeless and your images will withstand the test of time. Stop overdoing Photoshop and applying the coolest filters to your digital images. Keep it simple yet classy!

'Union Dhara' wishes him all the Best in his future clicking endeavours.

Supriya Nadkarni
Union Dhara, C.O.

Our Customers from North East

व्यवसाय से सिविल इंजीनियर रह चुके क्षितिज चंद्र साहा का वर्ष 1971 से भारतीय स्टेट बैंक के साथ खाता था लेकिन वर्ष 1981 से वे यूनियन बैंक ऑफ इंडिया से जुड़ गए. 'आप आ जाईए, आपका काम हो जाएगा' यह कहना है, यूनियनाइट्स का! परिणामस्वरूप इस बैंक के साथ हमारा एक अलग रिश्ता बन गया है. आज यदि आप देखेगें तो इस इमारत में तीन बैंक है, कोटक महिंद्रा, एक्सिस बैंक और यूनियन बैंक! लेकिन यूनियन बैंक अब हमारी आदत बन गया है. यहां के सभी स्टाफ सदस्य काम के आदि हो चुके हैं और कोई भी ग्राहक यहां इंतजार करते हुए आप नहीं पाएंगे. बैंक की सेवा और बैंक के प्रति साहा जी का अपनत्व, उनके शब्दों से ही नहीं बल्कि उनकी भंगिमाओं से भी झलकता है.

क्षितिज चंद्र साह, अगरतला शाखा
शाखा प्रबंधक, अगरतला शाखा

We have been maintaining a good relation and business with Union Bank of India, Agartala Branch, since 2000. We are having various Loan Accounts like : Cash Credit A/c, SOD A/C, Term Loan (mortgage) in the name of Niladri Motors (Hero Division), Niladri Motors (Tata Division) and Nimai Bricks Industry and many more. The overall services rendered by Union Bank are extremely satisfactory and appreciable. We shall always remain with Union Bank of India. We are trying our best to do a good business in the present competitive and hard economy and with the help of the Bank, we will succeed.

We are also happy to learn that Union Bank has completed 100 years with grand success. We wish our best wishes and all round success to the Bank in the coming era. Last but not the least, the relation of staff of Agartala Branch with us is uncomparable and a matter of pride for all of us. Thank you !

Nimai Kar, Agartala Branch

I opened an account in Union Bank right after they started the branch in Ganeshguri. Since then I have been associated with this bank. I have never been disappointed in any way-be it the efficiency of the staff or the hospitality of each and every member. Whenever I am at the bank with any issue, it has been solved with utmost sincerity and within the shortest span possible. I have presently 3 accounts in the Union Bank which are of my wife, my daughter and myself. Iqt has always been a lucrative journey with this bank as I have applied for quite many loans in the last few years and was always satisfied with all of them. Well, in short, I am happy to be a part of this journey with this bank and till now, I have no complaints as such. I am thankful to all the members for being so helpful and co-operative for all these years.

Hence, I wish all the very best to the Union Bank and its members for a bright future ahead.

Dilip Kumar Baishya, Guwahati
R.O. Guwahati

We are having different accounts with Union Bank of India, Agartala Branch since 2007. We have a very good relation with the Bank and have been operating many accounts like cash credit, SOD, Home Loan (Union Home), Union Miles, Bank Guarantee (BG), in various names like Sayak Enterprise, Sayak Agency, Mediclaze and Sah Distributors. We are pioneer in whole-sale medicine business, mobile sales, net-working and many more and all are endowed with the good services of Union Bank, Agartala Branch. We are really happy with the services and relationship of Union Bank family and we feel part and parcel of your reputed Bank.

In the centenary celebrations of Union Bank of India, we extend our best wishes and wish the Bank every success in all parameters. We are proud of the Bank and its strong support to us.

Alok Saha, Agartala Branch

Lochan Tea joined Union Bank in 1998 on the introduction of Chandan Tea Corporation who in turn have been with Siliguri Main Branch since much earlier than us. As a professional tea planter in Darjeeling area since 1976, I started my business in 1998. I slowly developed tea export to many countries and now we bagged status of an export house unit. Our experience has been of something extraordinary nature since Union Bank is a bank with a heart and really a 'good people to work with' spirited organization. They exclusive developed some services tailor-made for us like getting a forex terminal at Siliguri as we are the first properly tea export oriented unit in North Bengal and so far this facility was available in Calcutta only. We grew from strength to strength and since the inception of Tea Park with an integrated ICD, our new horizon is reaching the next level which will soon become a trend setter.

We are very proud of our Bank and its leadership who have been easily accessible. We have been meeting the top management so often for the betterment of the industry. Our city has an unique locational advantage over others having four international borders with Bangladesh, Bhutan and Nepal while China is just a stone's throw from here and this has necessitated the visit of topmost executives and we have met them almost all over our association with bank.

Rajiv Lochan, Siliguri Main Branch

R.O. Siliguri

आर्मी में कार्यरत पिता की तीन बेटों के साथ इकलौती बेटी एवान से पिता की अनेक अपेक्षाएँ थी लेकिन एवान ज्यादा पढ़ लिख नहीं पायी. 12वीं तक पढ़ने के बाद वह नागालैंड जैसे आर्गेनिक राज्य में कृषि औजारों की डीलरशिप लेकर कारोबार में उतरीं. यूनियन बैंक में आने से पूर्व वह भारतीय स्टेट बैंक के साथ जुड़ी हुई थी लेकिन अब एक चालू खाता, एक सीसी और व्यक्तिगत खाते के साथ वह यूनियन बैंक के साथ जुड़ी हुई है. 'यूनियन बैंक के कर्मचारी बहुत सहयोग देते हैं और यहां आने के बाद सुकून महसूस होता है मेरी कोई भी समस्या, यहां आने के बाद समस्या नहीं रह जाती'. यह कहना है, सुश्री एवान कुपा का जो कि वर्ष 1995 से नागालैंड में अपना कारोबार करती आ रहीं है.

एवान कुपा, दीमापुर शाखा

Amardeep - The Alluring Dancer

Ms. AMANDEEP KAUR, daughter of Mr. Darshan Singh, Assistant Manager, R.O., Kolkata is a musically inclined soul.

This class IX student of G.D. Birla Centre for Education, Kolkata is trained in the Indian classical dance form 'Bharatnatyam' since her childhood and is now giving her solo stage performances. Her mother was the first one to catch her latent dancing talent and kept no stone unturned to mould her into a proper classical dancer. Under the able guidance of her guru, Smt. Mani Kutty, she honed her dancing skills. Amandeep had earned a medal at 'The India - Russia Friendship Festival - Cultural Competition, 2016' organised by 'The Youth Guild for Friendship Russian Centre of Science & Culture, Kolkata'. Smt. Kabita Kar, the famous professional Bharatnatyam dancer from Kolkata is her biggest inspiration and the role model.

According to her, 'Bharatanatyam', a pre-eminent Indian classical dance form and presumably the oldest classical dance heritage of India, is regarded as the mother of many Indian classical dance forms. Conventionally a solo dance performed only by women, it was initiated in the Hindu temples of Tamil Nadu and eventually flourished in South India. A form of illustrative anecdote of Hindu religious themes and spiritual ideas emoted by dancer with excellent footwork and impressive gestures, its performance repertoire includes nrita, nritya and natya. The dance integrates elements of music, theatre, poetry, sculpture and literature. This multi-dimentional art understands and explores the body, mind and spirit. A popular interpretation of the name of the style is :- BHAva (emotion) + RAga (musical mode) + TAla (rhythm) NATYAM (dance) = BHARAT NATYAM. Due to its wide range of movements and postures and the balanced melange of the rhythmic and mimetic aspects, it lends itself well to experimental and fusion choreography.

This avid young dancer is equally interested in singing, painting and writing poems too. She is also a good badminton player. She aspires to become a strong and fearless journalist in years to come.

Union Dhara wishes her all the best in her career!!

यूनियन बैंक से प्यार करता हूं

दिल से उसको याद करता हूं
यूनियन बैंक से प्यार करता हूं

बैंक की सेवा से हूं निवृत्त
पेंशनधारक हूं, काम से मुक्त
आता है वह याद जमाना
ईमानदारी से वेतन कमाना
करता हूं जो भी अपार करता हूं
यूनियन बैंक से प्यार करता हूं

हम थे बैंक के कर्मचारी पुराने
जैसे गीतों में मीठे मधुर तराने
हस्तचालित था लेजर रजिस्टर
वाऊचर, पासबुक या हो मस्टर
दिमाग में यादें तैयार रखता हूं
यूनियन बैंक से प्यार करता हूं

पोस्टींग, कॉलिग, चेकींग, बैलंसिंग
काम से टक्कर लेते थे बैल के सिंग
डे बुक का हर दिन बैठता मेल
छमाही ब्याज के हिसाब का खेल
सच लगता था कारोबार करता हूं
यूनियन बैंक से प्यार करता हूं

कैश, रसीद, पेमेंट, डेबिट क्रेडिट
जमा, अग्रिम फिर सबका ऑडीट
ग्राहक सेवा थी हमारी सबसे ऊपर
बैंक की तरक्की हो गयी सुपर डूपर
इसलिए सलाम सौ बार करता हूं
यूनियन बैंक से प्यार करता हूं

कब के गुजर गये वो पुराने दिन
कम्यूटर ने लेखनी को लिया छीन
आरटीजीएस, ई-बैंकींग या हो एटीएम
मोबाईल बैंकिंग में बस गया पेटीएम
कालाय तस्मै नमः का उच्चार करता हूं
और मैं यूनियन बैंक से प्यार करता हूं.

विजय बागवे
सेवानिवृत्त, मुंबई

तनाव के दौरान मानव संसाधन नीतियाँ एवं बैंक की भूमिका

मानव संसाधन - किसी संगठन को विशेषकारी बनाने एवं उसकी लक्ष्य प्राप्ति के लिए मानवशक्ति का चुनाव करना पड़ता है, जिसका संगठित रूप मानव संसाधन कहलाता है. संगठन के उद्देश्य को समझना, उनके लक्ष्य की प्राप्ति को सही दिशा देना, मानव संसाधन का दैनिक कार्य है. संस्था के कुशल प्रबंधन में मानव संसाधन का सर्वाधिक महत्व होता है. मानव संसाधन प्रबंधन के सभी अवयवों जैसे भर्ती, नियोजन, प्रशिक्षण, अभिप्रेरणा, आदि को एकीकृत रूप में कार्य करना चाहिए क्योंकि संगठन के अन्य संसाधनों की सफलता एवं असफलता मानव संसाधन पर निर्भर है. उपयुक्त स्थान एवं उपयुक्त समय पर उपयुक्त कर्मचारी की नियुक्ति, सफल मानव प्रबंधन है. यह अत्यधिक सक्रिय, गतिशील एवं संवेदनशील संसाधन है. यही कारण है कि मानव संसाधन प्रबंधन सदैव किसी संगठन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू रहा है.

संगठन – यह सिर्फ एक स्थान पर संगठित होकर किसी व्यक्ति विशेष की सोच का नतीजा है, जहां विभिन्न पदों पर आसीन होकर मानव ही उसकी और अपनी उन्नति के लिए कार्यरत रहता है. इसलिए यह अनिवार्य हो जाता है कि सही जगह पर सही व्यक्ति का उपयोग हो. संगठन का मूल उद्देश्य अपनी लक्ष्य की प्राप्ति करना तथा साथ ही साथ अपने मानव संसाधन के निजी लक्ष्यों की भी पूर्ति करना होता है. जिस संगठन का एक-एक कर्मचारीगण ब्राण्ड एम्बेसेडर होगा, उस संगठन को शिखर पर आसीन होने से कोई नहीं रोक सकता तथा ऐसे कर्मचारियों को तैयार करना सफल मानव संसाधन प्रबंधन की पहचान है. तनाव मुक्त कुशल एवं विशेषज्ञता प्राप्त कर्मचारी संगठन की संपत्ति होते हैं. अतः संगठन को चाहिए कि वे अपने कर्मचारियों की कार्यक्षमता बढ़ाने पर विशेष ध्यान दें ताकि कारोबार के लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त किया जा सके.

तनाव – किसी परिस्थिति को नियंत्रित करने में शक्ति हीनता की भावना का पैदा होना तनाव कहलाता है. तनाव जितना ज्यादा होगा, दायित्व को कुशलता पूर्वक सम्पन्न करना उतना ही कठिन होगा. तनाव हमारी सोच को बुरा तथा दृष्टिकोण को नकारात्मक बनाता है. इसके कारण हम अपने कार्यों में रुचि नहीं लेने लगते हैं. फलतः बैंक अवनति की ओर अग्रसर होने लगता है. अतः अन्दर की प्रसन्नता का स्रोत कभी भी कम न हो पाये ऐसा प्रयास करते रहना चाहिए, क्योंकि प्रसन्नता ही हमारी ताकत होती है. यदि मन हार गया तो असफलता सुनिश्चित है. 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत' किसी भी संस्था का आंतरिक ग्राहक - जो सेवा प्रदाता की ओर से सेवाएँ प्रदत्त करते हैं, यदि संतुष्ट या तनावमुक्त नहीं हैं, तो वह उस संस्था के ग्राहकों को संतुष्ट या खुश नहीं कर सकते. अतः बैंक में कार्यरत स्टाफ का खुश रहना, धैर्यवान रहना, ज़िंदादिल रहना, संतुष्ट रहना एवं निराशा में नहीं रहना नितांत आवश्यक है.

कार्यस्थल पर तनाव के कारण :-

1. **बढ़ती जिम्मेदारियाँ :-** बैंकों में अत्यधिक बढ़ती जिम्मेदारियों के कारण कर्मचारी तनाव से ग्रसित हो जाते हैं. फलतः बैंकिंग उद्योग से सेवा त्याग कर अन्य उद्योगों के प्रति आकर्षित हो जाते हैं, जहां उनके लिए श्रम एवं जीवन संतुलन स्वास्थ्य पूर्ण होता है.

2. **सेवा त्याग :-** सेवा त्याग से कर्मचारियों की संख्या में तीव्र कमी आती है, फलतः मौजूदा कर्मचारियों में असंतोष की भावना पनपने लगती है, जो आगे चलकर तनाव का कारण बनती है.

3. **उत्पादों एवं सेवाओं में बढ़ती जटिलताएँ :-** इसके कारण कर्मचारी स्वाभाविक रूप से कार्य में आनंद नहीं ले पाते, जिसका बैंक पर कुप्रभाव पड़ता है. फलतः स्टाफ अपने आप तनाव के घेरे में आने लगते हैं.

4. **स्टाफ के कार्यजीवन एवं व्यक्तिगत जीवन में बेहतरीन तालमेल का अभाव होना :-** स्टाफ की व्यक्तिगत जीवन की अपेक्षाएँ जब कार्यजीवन पर हावी होने लगती हैं तब वह

अपना सर्वश्रेष्ठ नहीं दे पाता है. वह संस्था के साथ एकात्म नहीं हो पाता, जो तनाव का कारण बनती है.

5. कार्य का निष्पादन किस ढंग से करना है, इसके बारे में निर्णय नहीं ले पाना :– इस प्रवृत्ति से कार्यनिष्पादन की क्षमता में अवरोध उत्पन्न होने लगता है. फलतः कार्य बढ़ता जाता है और अंत में एक बड़ा बोझ बनकर मन पर बैठ जाता है.

6. निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति न होना :– लक्ष्य की प्राप्ति न होने पर कर्मचारी में हीन भावना जागृत हो जाती है. सब ने कर ली और मैं नहीं कर पाया, ऐसी सोच आ जाती है, जिससे तनाव एवं अवसाद मन में घर करने लगता है.

7. कमजोरियों को पर्दे में रखना :– प्रायः बैंक स्टाफ अपनी कमजोरियों को बढ़ा चढ़ा कर प्रदर्शित करते हैं, जिससे झूठ बोलने एवं छिपाने की भावना आ जाती है.

8. असहज कार्य वातावरण :– जैसे अधिक गर्मी, सर्दी, शोर, अपर्याप्त प्रकाश व्यवस्था, अनुपयुक्त उपकरण इत्यादि.

9. अपने सामर्थ्य से अधिक काम करना :– सामर्थ्य से अधिक काम करने हेतु प्रयास करना, तनाव पैदा करता है.

10. जिंदगी भर सीखते रहने की प्रक्रिया से अधूरापन

तनाव के दौरान मानव संसाधन की नीति

I. अपने समय का नियंत्रण :– कर्मचारीगण समय की पाबंदी में काम करने की कला पैदा करें. क्योंकि काम समय पर खत्म हो तो उसका पूरा लाभ मिल सकता है एवं तनाव से भी मुक्ति मिल सकती है.

II. निःस्वार्थ भाव को आगे रखें :– निःस्वार्थ भाव को आगे रख कर एक साथ मिलकर आमोद प्रमोद के साथ काम किया जाए.

III. 'ना' कहना :– यदि कर्मचारीगण कुछ गतिविधियों से बोझ महसूस कर रहे हों, तो 'ना' कहना सीख लें.

IV. कार्य सूची :– अपने निर्धारित लक्ष्य और हर लक्ष्य को पूरा करने के लिए निर्धारित कार्रवाई की सूची बनाना.

V. सकारात्मक सोच :– पूरी शक्ति एवं तन्मयता के साथ काम करते रहने का सामर्थ्य हो एवं अपने कार्य निष्पादन का खुद मूल्यांकन करने एवं अपने परिणामों में सुधार लाने का सतत प्रयत्न करते रहना चाहिए.

VI. विध्वंसक क्षणों एवं भावनाओं को नियंत्रित करते हुए उनका दिशा परिवर्तन करने की योग्यता रखना.

VII. योग्य कर्मियों को बैंक से जोड़े रखना एवं कार्मिकों को प्रोत्साहित करना.

VIII. ज्यादा से ज्यादा नए वर्ग को प्रशिक्षण देना.

IX. सेवा निवृत्ति के कारण कर्मचारियों की रिक्तियों को शीघ्रातिशीघ्र भरना. बैंक के लिए आवश्यक है कि वह अपने स्टाफ की देखभाल करें एवं उन्हें एहसास दिलाएँ कि यह उनकी अपनी संस्था है. वरिष्ठतम प्रबंधन तंत्र को इस कार्य में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए.

बैंक की भूमिका

बैंक के लिए आवश्यक है कि वह अपने कार्मिकों को समय-समय पर प्रशिक्षण, उनकी व्यक्तिगत एवं संस्थागत समस्याओं का निराकरण, वेतन संबंधी मुद्दे, त्रुटियों एवं उनकी कार्यक्षमता के आकलन पर ध्यान दें. जिससे कर्मचारियों का मनोबल बना रहे और वह पूरी कुशलता के साथ तनाव मुक्त होकर अपनी कार्यक्षमता का प्रदर्शन कर सके. सूचना एवं प्रौद्योगिकी के माध्यम से बैंक के कर्मचारियों का पूरा विस्तृत ब्यौरा रखा जा सकता है. स्वस्थ एवं सुप्रसन्न कर्मचारियों से उत्पादकता बढ़ती है. तनाव मुक्त बैंक स्टाफ के संदर्भ में बैंकिंग उद्योग और बैंक स्तर पर मानव संसाधन विकास, महत्वपूर्ण स्थान रखता है.

अतः जब संसाधन छींटमुक्त होगा तभी उसका ध्यान अपने काम की ओर लगा रहेगा. इसलिए बैंक एवं कर्मचारी एक दूसरे के पूरक बने रहें, ताकि दोनों अपने लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढ़ सकें और उसे पूरा कर सकें.

उमेश प्रसाद
सेवानिवृत्त, पटना

Shri Udayan Joarder, retired Chief Manager, has won the first prize at the 3rd Photography and Painting Exhibition & Competition organized by 'Budge Budge Maheshtala Nature Study Centre, West Bengal.

श्री संतोष श्रीवास्तव, सेवानिवृत्त स्टाफ, एसटीसी, भोपाल को साहित्यिक समूह सोपान तथा भावों के मोती (हिंदी साहित्यिक समूह) द्वारा उनके उत्कृष्ट लेखन हेतु सर्वश्रेष्ठ रचनाकार के सम्मान से सम्मानित किया गया.

AWARDS GALORE

Our Bank's Training System i.e. Staff College, Bengaluru, won the prestigious 'Knowledge Management Leadership Award' for 'Use of Best Training Methods' as announced by Asia Pasific HRM Congress at the glittering function held at Vivanta by Taj, Yeshwantpur, Bengaluru. The Award was received by Shri Sarvesh Ranjan, Principal and Shri Shiva Kumar Shukla, Asst. General Manager, Staff College, Bengaluru at the hands of Dr. Santanu Rath, Director, The Odisha Mining Corporation Limited and Shri Pramod Gupta, CEO, Deeksha.

Our Bank has been awarded NASSCOM-DSCI Excellence Awards 2019 - Special Jury recognition on improved Cyber Security practices. The award was received by Shri Anil Kuril, CISO at the awards ceremony in NASSCOM-DSCI Annual Information Security Summit, 2019 held on 05.12.2019.

केंद्रीकृत समाचार

Our Bank launched online Green E-Pledge, a step towards creating customer awareness to maintain the Earth's Green Cover on the occasion of 150th birth anniversary of Mahatma Gandhi. An innovative Portal for the same was also inaugurated by Shri Rajkiran Rai G., MD & CEO, at the Corporate Office in Mumbai. This Portal will be available to customers for their feedback and suggestions. Also present on the occasion were Shri Gopal S. Gusain, Shri Dinesh Kumar Garg, Shri Manas R. Biswal, Executive Directors; Shri Kalyan Kumar, General Manager and other Executives of the Bank.

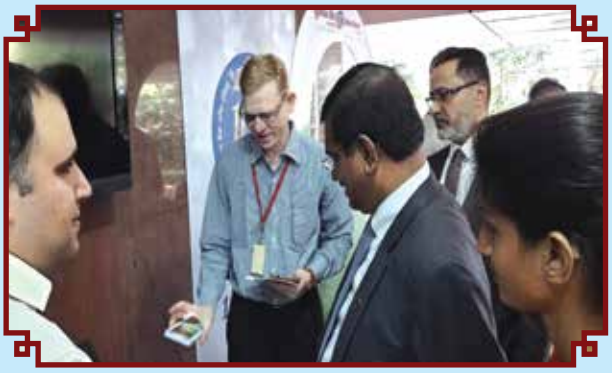

On 03.12.2019, our Bank observed the 'International Day of Persons with Disabilities' at its Head Office in Mumbai. As an extension of its equal opportunity policy, this year our Bank carried out activities to spread awareness among all employees about the difficulties faced by person with disabilities in their day-to-day life and the support that must be extended to them to make the workplace accessible and inclusive. A pop-quiz on disability related issues with solutions was rolled out for employees and an 'experience counter' was set up to popularize various assistive tools. Assistive technologies like JAWS and TalkBack were on display along with accessible sports equipments and games such as Braille playing cards, special chess boards and ringing cricket balls. Our Bank also conducted online quiz on pan-India basis to create awareness and garner support for the cause.

Shri Rajkiran Rai G., MD & CEO, flanked by Shri Gopal Singh Gusain, Shri Dinesh Kumar Garg & Shri Manas Ranjan Biswal, Executive Directors, at the press conference held in Mumbai on the occasion of announcement of Q-2/H1 Financial Results for the quarter/half year ended September 30, 2019.

On 27.08.2019 our Bank, entered into partnership agreement with BankBazaar.com for digital sourcing of Housing Loan Business. The partnership is in line with the growing trend of financial services moving to the Digital space. With its presence on BankBazaar, a leading Fintech player, our Bank increases its reach beyond the traditional brick and mortar physical channels.

Shri Rajkiran Rai G., MD & CEO, Shri Dinesh Kumar Garg, Executive Director, Shri Adhil Shetty, CEO, BankBazaar.com. on the occasion of signing of partnership agreement for Digital Sourcing of Housing Loan Business, held at Bank's Corporate Office, Mumbai.

On 3.10.2019, our Bank as part of its ongoing Centenary Year Celebrations, installed E-Waste Collection Point at its Mumbai Main Branch, Corporate Office, Nariman Point, Mumbai, which was inaugurated by Shri Rajkiran Rai G., MD & CEO. Also present on the occasion were Shri Gopal S. Gusain, Shri Dinesh Kumar Garg, Shri Manas R. Biswal, Executive Directors; Shri P. Satyanarayana & Shri Kalyan Kumar, General Managers.

Shri Rajkiran Rai G., Managing Director & CEO, Union Bank of India, unfurling the national flag on the occasion of Independence Day celebrations held on 15th August 2019 at Central Office, Mumbai

Our Bank marked its centenary year celebrations with footprints and created a positive impact on the environment. 'Go Green Campaign' was inaugurated on the 73rd Independence Day celebrations which included a Green Pledge, floating of an e-Magazine and plantation of trees through all 63 regions across the country. The event was launched through 'ECOTHON', a green march from the corporate office at Nariman Point to Marine Drive, led by Shri Rajkiran Rai G., MD & CEO, along with his team.

Shri Rajkiran Rai G., MD & CEO and Shri Dinesh Kumar Garg, along with Senior Executives at the launch of 'Go Green Campaign'

On 18.09.2019, our Bank signed MoU with M/s Capital India Finance Ltd. (CIFL), a professionally managed NBFC under Co-origination Model for Lending to Priority Sector as per RBI defined model. This arrangement will entail joint contribution of Credit at the facility level, by both the Lending Partners viz. our Bank and CIFL.

Shri Rajkiran Rai G., our MD & CEO and Shri Keshav Porwal, MD, CIFL on the occasion of signing of MoU at the Bank's Head Office in Mumbai. Also seen are Shri M. R. Biswal, ED along with Shri P. S. Rajan, GM (CP & MSME) from Union Bank of India & Shri Amit Sahai Kulshreshtha, ED & CEO, CIFL.

Our Bank observed Vigilance Awareness Week from 29th October, 2019 to 2nd November, 2019 on the theme 'INTEGRITY- A WAY OF LIFE' envisaged by Central Vigilance Commission. Various programmes were scheduled for creating awareness among youth, employees, their family members and the public at large, highlighting evils of corruption and its impact on the society. Also, on this occasion, 'Integrity Pledge' was administered by all employees of the Bank.

Shri Rajkiran Rai G., Managing Director & CEO flanked by Shri Gopal Singh Gusain, Shri Dinesh Kumar Garg, Shri Manas Ranjan Biswal, Executive Directors; Shri MVSN Murthy, Chief Vigilance Officer and Senior Executives of the Bank on the occasion of administering Integrity Pledge.

Our Bank observed Vigilance Awareness Week-2019 from 28th October 2019 to 2nd November 2019 on the theme, "Integrity - A way of Life". As part of this Week, the Bank launched a unique 2 day training program covering all the practical aspects of Preventive Vigilance. It is intended that this will certainly help the Staff members of the Bank in understanding the importance of Preventive Vigilance in their day-to-day Banking functions. Shri MVSN Murthy, Chief Vigilance Officer of the Bank, addressed the participants of 1st batch of this training Program at Staff Training Centre, Powai, Mumbai.

समाचार (उत्तर)

दि. 20.08.2019 को बजाज अलियांज जनरल इश्योरेंस के यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के साथ 2 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में क्षे.का., उदयपुर में श्री अनिल बछावत, क्लस्टर प्रमुख, बजाज और हमारे उदयपुर के क्षेत्र प्रमुख, श्री जे.एस. तोमर द्वारा केक काटा गया.

क्षे.का., रायपुर में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर दि.15.08.2019 को हरित पहल वॉकथॉन का आयोजन श्री एम.के. श्रीवास्तव, क्षेत्र प्रमुख की अध्यक्षता में रायपुर शहर में क्षेत्रीय कार्यालय एवं शाखाओं के स्टाफ सदस्यों के साथ किया गया.

भारत सरकार के 'डिजिटल इंडिया' कार्यक्रम के तहत दि. 21.08.2019 को बिलासपुर के डी.पी. विप्रा कॉलेज में कैशलेस कैम्पस का उद्घाटन किया गया. इस अवसर पर भोपाल अंचल प्रमुख, श्री विनायक वी. टेंभूर्णे, क्षेत्र प्रमुख, रायपुर; श्री एम. के. श्रीवास्तव, सीएजी प्रमुख, रायपुर; श्री निखिल सोनी एवं बिलासपुर शाखा प्रमुख, श्री दिनेश प्रसाद उपस्थित थे.

यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया के शताब्दी वर्ष पूर्ण होने एवं 101वें स्थापना दिवस के अवसर पर दिनांक 11.11.2019 को श्री एम.के. श्रीवास्तव, क्षेत्र प्रमुख, रायपुर की अध्यक्षता में शहर में प्रभातफेरी का आयोजन किया गया. इस अवसर पर क्षेत्र की समस्त शाखाओं में केक काट कर एवं सम्मानित ग्राहकों को मिठाइयां देकर सम्मानित किया गया.

वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवा विभाग के निर्देशानुसार 'ग्राहकों तक पहुँच हेतु पहल कैंप' के दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन दि. 4–5 अक्तूबर 2019 को बैंक के अग्रणी जिला प्रबन्धक कार्यालय, भदोही द्वारा भदोही स्थित होटल अर्सलान में चला. इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भदोही जिले के जिलाधिकारी, श्री राजेन्द्र प्रसाद, श्री आर.के. कश्यप, महाप्रबंधक, सहायक सेवा विभाग (केंद्रीय कार्यालय, मुंबई), श्री गुना नन्द गामी, क्षेत्र प्रमुख (प्रयागराज), अग्रणी जिला प्रबन्धक, श्री उमेश कुमार उपस्थित रहें. इस कार्यक्रम में कुल 19 बैंकों एवं 6 वित्तीय संस्थाओं ने कैनोपी लगाई. इस अवसर पर विभिन्न बैंकों के क्षेत्र प्रमुख भी उपस्थित रहे.

दिनांक 22.08.2019 को क्षे.का., प्रयागराज में 'गो ग्रीन कैम्पेन' के तहत, क्षेत्रीय कार्यालय परिसर में श्री पी.सी.पाणिग्रही, महाप्रबंधक (वित्तीय समावेशन), श्री गुना नन्द गामी, क्षेत्र प्रमुख, प्रयागराज द्वारा वृक्षारोपण किया गया.

स्वतंत्रता दिवस पर क्षे.का., प्रयागराज द्वारा बच्चों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. क्षेत्र प्रमुख श्री गुना नन्द गामी द्वारा प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया.

बैंक के 'गो ग्रीन पहल' के तहत यूनियन वृक्ष – 'एक कदम स्वच्छता की ओर' टैग लाइन के अंतर्गत दिनांक 05.09.2019 को क्षे.का., कानपुर एवं क्षेत्र की शाखाओं द्वारा शिक्षक दिवस के अवसर पर विभिन्न स्थानों पर लगभग एक हज़ार वृक्षों का वृक्षारोपण किया गया.

दिनांक 05.08.2019 को क्षे.का., जबलपुर द्वारा मेगा ऋण वितरण शिविर का आयोजन किया गया, जिसका शुभारंभ श्री विनायक वी. टेंभूर्णे, महाप्रबंधक, क्षेमप्रका, भोपाल एवं श्री अरुण कुमार, क्षेत्र प्रमुख, जबलपुर द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया. कार्यक्रम में जबलपुर क्षेत्र की शाखाओं के शाखा प्रबन्धक एवं सम्मानीय ग्राहक उपस्थित रहे. कुल 165 लाभार्थियों को ऋण वितरित किया गया.

दिनांक 9.08.2019 को श्री दिनेश कुमार गर्ग, कार्यपालक निदेशक द्वारा उनके इंदौर दौरे के दौरान कारोबार समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की गयी. इस अवसर पर उनके साथ उपस्थित थे, श्री विनायक वी. टेंम्भूर्णे, महाप्रबंधक, भोपाल अंचल; श्री मनोज कुमार, क्षेत्र प्रमुख, इंदौर तथा श्री अनुज कुमार, सरल प्रमुख, इंदौर. इस दौरे के दौरान, एक ऋण शिविर का भी आयोजन किया गया तथा श्री दिनेश कुमार गर्ग द्वारा हितग्राहियों को ऋण स्वीकृति पत्र भी वितरित किये गये.

दि. 11.09.2019 को क्षे.का., मेरठ के यूनियन समृद्धि केंद्र, सहारनपुर का उद्घाटन श्री अतुल कुमार, अंचल प्रमुख, लखनऊ एवं सुश्री मीना खन्ना, महाप्रबंधक, ग्रामीण एवं कृषि कारोबार विभाग, कें.का. द्वारा किया गया. इस अवसर पर श्री बी.एन. सिंह, क्षेत्र प्रमुख, मेरठ उपस्थित थे.

भारत सरकार, वित्तीय सेवाएँ विभाग के निर्देशानुसार जबलपुर जिले के समस्त बैंकों द्वारा आयोजित दो दिवसीय ग्राहक जागरूकता कार्यक्रम का शुभारंभ 4 अक्तूबर 2019 को होटल गुलजार टावर्स में किया गया. दि. 05.10.2019 को केंद्रीय केबिनेट मंत्री श्री प्रह्लाद सिंह पटेल जी का आगमन इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रहा.

दि. 5.11.2019 को क्षे.का., जबलपुर द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्र प्रमुख, श्री अरुण कुमार एवं अन्य स्टाफ सदस्यों द्वारा रक्तदान किया.

दि. 02.12.2019 को क्षे.म.प्र., भोपाल श्री विनायक वी. टेंम्भूर्णे एवं क्षेत्र प्रमुख, श्री अरुण कुमार द्वारा जबलपुर क्षेत्र की सक्का शाखा के नए परिसर का उद्घाटन किया गया.

दि. 01.07.2019 को श्री राजकिरण रै जी., प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी द्वारा इंदौर दौरे के दौरान उज्जैन स्थित यूनियन समृद्धि केंद्र की प्रथम वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सहभागिता देते हुए विभिन्न ऋण योजनाओं के हितग्राहियों को ऋण स्वीकृति पत्र वितरित किए गये तथा उत्कृष्ट कार्य निष्पादन करने वाले ग्रामीण विकास अधिकारियों को भी पुरस्कृत किया गया.

दिनांक 09.08.2019 को बैंक के कार्यपालक निदेशक, श्री दिनेश कुमार गर्ग द्वारा पिपलिया शाखा स्थित ई-लॉबी का उद्घाटन किया गया. इस अवसर पर, श्री विनायक वी. टेंम्भूर्णे, महाप्रबंधक, भोपाल अंचल के साथ श्री मनोज कुमार, क्षेत्र प्रमुख, इंदौर; श्री अनुज कुमार, सरल प्रमुख उपस्थित थे.

दि. 30.07.2019 को उत्तरप्रदेश के चंदौली जिले में आयोजित वित्तीय समावेशन शिविर में श्री राज किरण रै. जी., प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी; श्री जगमोहन सिंह, क्षेत्र महाप्रबंधक, वाराणसी अंचल; श्री आर के नन्दा, उप अंचल प्रमुख; श्री पी के दास, प्रबंध निदेशक, काशी गोमती ग्रामीण बैंक; श्री विकास कुमार सिन्हा, काशी गोमती ग्रामीण बैंक के क्षेत्र प्रमुख, वाराणसी तथा श्री नवनीत सिंह चहल, जिलाधिकारी, चंदौली. इस दौरे के दौरान श्री राजकिरण रै जी., प्रबंध निदेशक एवं सीईओ द्वारा वाराणसी की सोनापुरा शाखा का उद्घाटन भी किया गया तथा क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, वाराणसी द्वारा आयोजित स्टाफ बैठक को संबोधित भी किया गया.

दि. 23.11.2019 को हमारे क्षे.का., इंदौर द्वारा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, कॉर्पोरेशन बैंक एवं आन्ध्रा बैंक द्वारा यशवंत क्लब, इंदौर में 'मैत्री क्रिकेट टूर्नामेंट, 2019' आयोजित किया गया. इस टूर्नामेंट में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की टीम विजयी रही. क्षे.का. इंदौर की विजेता टीम ट्रॉफी के साथ.

दि. 11.11.2019 को क्षे.का.,जबलपुर एवं क्षेत्र की सभी शाखाओं में बैंक स्थापना दिवस मनाया गया.

दि. 24.10.2019 को क्षे.का.,जबलपुर द्वारा सतर्कता जागरूकता रैली का आयोजन किया गया. इस आयोजन में क्षेत्र प्रमुख, श्री अरुण कुमार एवं अन्य स्टाफ सदस्य.

जिला समन्वय समिति, चंदौली की विशेष बैठक में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री राज किरण रै जी., वाराणसी अंचल के क्षेत्र महाप्रबंधक, श्री जगमोहन सिंह एवं अन्य अधिकारीगण.

दि. 10.10.2019 को भोपाल क्षेत्र की चोपना शाखा के नए परिसर का उद्घाटन श्री विनायक वी. टेम्भूर्णे, अंचल प्रमुख एवं श्री गुरतेज सिंह, क्षेत्र प्रमुख, भोपाल ने किया. इस अवसर पर श्री नारायण वागाद्रे, शाखा प्रबन्धक के साथ अन्य शाखाओं के शाखा प्रबन्धक एवं स्टाफ सदस्य भी मौजूद रहे.

क्षे.म.का, वाराणसी द्वारा 17 अक्तूबर से 05 नवंबर तक आयोजित रीटेल एवं एमएसएमई क्रेडिट कैम्पेन में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के साथ वित्तीय वर्ष 2019–20 में अक्तूबर माह तक एसयूडी लाइफ इश्योरेंस के तहत उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विजेताओं को सम्मानित करने हेतु दिनांक 08.11.19 को पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया. दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए, क्षे.म.प्र., श्री जगमोहन सिंह.

दि. 10.11.2019 को बैंक के शताब्दी वर्ष समारोह के तहत क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय वाराणसी एवं क्षे.का.,वाराणसी द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया. इस अवसर पर मीडिया को संबोधित करते हुए क्षेत्र महाप्रबंधक श्री जगमोहन सिंह एवं क्षेत्र प्रमुख, वाराणसी, श्री विकास कुमार सिन्हा.

दि. 11.11.2019 को बैंक के शताब्दी वर्ष समारोह के तहत क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, वाराणसी एवं क्षे.का., वाराणसी द्वारा मैराथॉन का आयोजन किया गया. क्षेत्र प्रमुख, श्री विकास कुमार सिन्हा की अगुवाई में मैराथॉन में भाग लेते हुए बैंक कर्मी.

दि. 26.12.2019 को श्री अतुल कुमार, महाप्रबंधक, लखनऊ द्वारा हरदोई जिले की नई शाखा, अटवारा चकोला का उद्घाटन किया गया.

'ग्राम स्वराज अभियान' के अन्तर्गत बैंक को आबंटित 'आकांक्षी' चंदौली जिले के दौरे के दौरान एकोना गांव में आयोजित वित्तीय समावेशन जागरुकता शिविर में उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए. श्री सुशील पाणिग्राही, उप महाप्रबंधक (एफआई), के. का. मुम्बई

वित्तीय समावेशन के तहत भारत सरकार के 'ग्राम स्वराज अभियान' के अन्तर्गत यूनियन बैंक को आबंटित 'आकांक्षी' जिला कोंडागांव में आयोजित 'जन–जागरण कार्यक्रम' में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए, श्री सुनील कुमार, स.म.प्र., वित्तीय समावेशन विभाग, के.का., मुम्बई.

दि. 26.07.2019 को अपने कोलकाता अंचल के दौरे के उपलक्ष्य में कोलकाता अंचल द्वारा आयोजित मेगा क्रेडिट कैंप में ऋणधारकों को ऋण स्वीकृति पत्र एवं गाड़ी की चाबी मुहैया कराते हुए, श्री दिनेश कुमार गर्ग, कार्यपालक निदेशक; श्री एन.आर. सामल, अंचल प्रमुख, कोलकाता और श्री ए.के. परिडा, क्षेत्र प्रमुख, कोलकाता.

क्षे.का., रांची द्वारा दि. 14.08.2019 को क्षेत्र के एमएसएमई ग्राहकों हेतु संगोष्ठी का आयोजन किया गया. संगोष्ठी के दौरान ग्राहकों से चर्चा करते हुए श्री प्रवीण शर्मा, क्षेत्र महाप्रबंधक, रांची; साथ में हैं श्री विपन सिंह, क्षेत्र प्रमुख, रांची एवं श्री संजीव कुमार, सरल प्रमुख, रांची.

सतर्कता जागरुकता सप्ताह के दौरान नवम्बर–2019 में आयोजित बीरचन्द्र नगर शाखा ने टुइकरमा विद्यालय में चित्र अंकन प्रतियोगिता आयोजित की थी, जिसके विजेता को पुरस्कार और प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए विद्यालय की प्रधानाचार्या तथा साथ में शाखा प्रबंधक, श्री त्रिपुरेश देबबरमा तथा उप–शाखा प्रमुख, श्री एस.के. रूबेल.

दि. 15.08.2019 को क्षेत्र महाप्रबंधक एवं क्षे.का., रांची परिसर में श्री प्रवीण शर्मा, अंचल प्रमुख, रांची ने ध्वजारोहण किया. इस अवसर पर श्री विपन सिंह, क्षेत्र प्रमुख, रांची; श्री संजीव कुमार, सरल प्रमुख, रांची तथा रांची स्थित बैंक के कार्यालयों तथा शाखाओं के स्टाफ तथा परिवार के सदस्य उपस्थित रहे.

बैंक के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में क्षे.का., भुवनेश्वर द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर में जमा कुल 555 ब्लड यूनिट्स का योगदान ओड़ीशा के कॅपिटल अस्पताल को दिया गया. बैंक के इस कार्य की सराहना करते हुए ओड़ीशा सरकार ने उन्हें पुरस्कृत किया. इस अवसर पर श्री रूप लाल मीणा, उमप्र, क्षे.का., भुवनेश्वर; श्री राकेश चन्द्र पति, समप्र, क्षे.का., भुवनेश्वर तथा श्री अनिल कुमार मोहंती, ब्लड बैंक प्रबंधक, कॅपिटल अस्पताल उपस्थित थे.

दि. 17–18 अगस्त 2019 को क्षे.का., रांची द्वारा श्री विपन सिंह, क्षेत्र प्रमुख की मेजबानी में क्षेत्रान्तर्गत सभी शाखा प्रमुखों के साथ विचार–विमर्श प्रक्रिया कार्यक्रम का आयोजन किया गया. श्री मदनेश मिश्रा, संयुक्त सचिव, वित्तीय सेवाएँ विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार सह हमारे बैंक के बोर्ड सदस्य, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे. कार्यक्रम की अध्यक्षता, श्री प्रवीण शर्मा, अंचल प्रमुख द्वारा की गई.

दि. 13.08.2019 को स्टा.प्र.कें., भुवनेश्वर में हरित पहल के अंतर्गत श्री मानस रंजन बिस्वाल, कार्यपालक निदेशक एवं श्री प्रवीण शर्मा, महाप्रबंधक, क्षेमप्रका, रांची द्वारा वृक्षारोपण किया गया. इस अवसर पर श्री प्रकाश चन्द्र पति, समप्र, क्षे.का., भुवनेश्वर; श्री दिवाकर लेंका, केंद्र प्रभारी एवं प्रशिक्षण केंद्र के समस्त स्टाफ एवं प्रशिक्षार्थी उपस्थित थे.

दि. 11.11.2019 को बैंक की सौंवी वर्षगाठ पूर्ण होने पर क्षे.का., हावड़ा द्वारा 'मैराथॉन प्रतियोगिता' तथा सभी कर्मचारियों के लिए 'ब्लड डोनेशन कैंप' एवं 'स्वास्थ्य चेक अप कैंप' का आयोजन किया गया. इस अवसर पर हावड़ा डिविजन के एसीपी, श्री अशोक कुमार, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे.

दि. 13.08.2019 को स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र, भुवनेश्वर में वातानुकूलित प्रेक्षागृह का उद्घाटन करते हुए श्री मानस रंजन बिस्वाल, कार्यपालक निदेशक.

उसी दिन, स्टा. प्र. केंद्र, भुवनेश्वर में व्यायामशाला का उद्घाटन करते हुए श्री मानस रंजन बिस्वाल, कार्यपालक निदेशक; साथ हैं श्री दिवाकर लेंका, केंद्र प्रभारी; एवं समस्त स्टाफ सदस्य एवं प्रशिक्षार्थी.

दि. 19.10.2019 को क्षे.का., सिलीगुड़ी द्वारा सतर्कता जागरुकता के उपलक्ष्य में विजिथॉन का आयोजन किया गया, जिसमें स्थानीय 13 शाखाओं के स्टाफ सदस्यों ने अपनी प्रतिभागिता दर्ज की.

बैंक के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में दिनांक 09.11.2019 को क्षे.का., सिलीगुड़ी द्वारा मैराथॉन का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्राधीन समस्त शाखाओं के प्रतिभागियों ने अपनी प्रतिभागिता दर्ज की.

दि. 09.12.2019 को कार्यपालक निदेशक, श्री दिनेश कुमार गर्ग द्वारा, हावड़ा क्षेत्रीय कार्यालय का निरीक्षण किया गया तथा क्षेत्र के सभी शाखा प्रबन्धकों के साथ एक समीक्षा बैठक भी की गई. बैठक में अंचल प्रमुख, श्री निहार रंजन सामल एवं क्षेत्र प्रमुख, कोलकाता श्री ए. के. परिडा के साथ क्षेत्र प्रमुख हावडा, श्री कुंदन लाल भी उपस्थित थे.

दि. 24.12.2019 को श्री निहार रंजन सामल, महाप्रबंधक, कोलकाता एवं श्री कुन्दन लाल, क्षेत्र प्रमुख, हावड़ा ने हावड़ा क्षेत्राधीन बनमालीपुर शाखा के नए परिसर का उद्घाटन किया.

समाचार (पश्चिम)

दि. 17–18 अगस्त, 2019 को अहमदाबाद क्षेत्र में क्षेत्रीय कार्यालय स्तर पर शाखाओं के साथ चर्चा एवं परामर्श प्रक्रिया आयोजित की गयी. जिसमें शाखा प्रमुखों को श्री राजकिरण रै जी., MD & CEO ने संबोधित किया. साथ में उपस्थित थे, श्री प्रमोद कुमार सोनी, अंचल प्रमुख, अहमदाबाद; श्री लुक़मान अली खान, उप अंचल प्रमुख एवं श्री राजेश कुमार, क्षेत्र प्रमुख, अहमदाबाद.

क्षे.का., अहमदाबाद में दि. 13.11.2019 को 'ग्रीन कॉज़ पैथोलॉजिकल लैबोरेटरी' के सहयोग से रक्त दान शिविर का आयोजन किया गया. श्री प्रमोद कुमार सोनी, अंचल प्रमुख; श्री लुक़मान अली खान, उप अंचल प्रमुख; श्री राजेश कुमार, क्षेत्र प्रमुख की उपस्थिति में इस शिविर का शुभारंभ किया गया. इसमें क्षेत्रीय कार्यालय एवं शाखाओं के कार्मिकों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया.

दि. 05.09.2019 को केंद्रीय विद्यालय, मकरपुरा, बडौदा में वृक्षारोपण करते हुए श्री अखिलेश कुमार, क्षेत्र प्रमुख, बडौदा तथा प्राचार्य, केंद्रीय विद्यालय एवं शिक्षकगण.

स्वतंत्रता दिवस के दौरान हरित पहल कार्यक्रम के अंतर्गत महेसाणा के क्षेत्र प्रमुख श्री हरे कृष्ण दास एवं अन्य स्टाफ सदस्यों द्वारा वृक्षारोपण किया गया एवं रैली निकालकर 'एक कदम पर्यावरण की ओर' विषय पर जनता को जागरूक करने का प्रयास किया गया.

क्षे.का. मुंबई (पश्चिम) द्वारा 17 एवं 18 अगस्त, 2019 को सभी शाखा प्रबंधकों की बैठक का आयोजन किया गया जिसमें राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के साथ बैंकिंग को जोड़ने लिए सामूहिक परामर्श और विचार विमर्श किया गया. बैठक के दौरान श्री राजकिरण रै जी., प्रबंध निदेशक एवं सीईओ तथा श्री अमरेन्द्र कुमार, क्षेत्र प्रमुख, क्षे.का., मुंबई (प.) द्वारा शाखा प्रबंधकों से सरकार की केंद्रीय योजनाओं को लोकप्रिय बनाने हेतु अनुरोध किया गया.

हरित पहल (गो ग्रीन) के अंतर्गत शिक्षक दिवस के अवसर पर दि. 05 सितम्बर 2019 को होलिडे होम तीथल, वलसाड में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस अवसर पर श्री पी के सोनी, क्षेत्र महा प्रबंधक, अहमदाबाद वृक्षारोपण करते हुए; साथ हैं, विशिष्ट अतिथि श्रीमती दक्षा भरई, सहायक वन संरक्षक, वलसाड एवं श्री प्रांजल बाजपेयी, क्षेत्रीय प्रमुख, सूरत एवं अन्य स्टाफ सदस्य.

दि. 05 सितम्बर, 2019 को हरित पहल कार्यक्रम के तहत डीएवी विद्यालय, कोलशेत में वृक्षारोपण किया गया. हरित पहल की शपथ लेते हुए क्षेत्र प्रमुख, श्री कबीर भट्टाचार्य, उप क्षेत्र प्रमुख, श्री राजकुमार एवं श्री अशोक उपाध्याय, शाखा प्रबंधक, कापूरबावडी एवं स्कूल के शिक्षकगण.

दि. 15 अगस्त, 2019 को हरित पहल अभियान के अंतर्गत क्षे.का., मुंबई (उत्तर) की ओर से एक भव्य रोड शो कार्यक्रम का आयोजन किया गया, 'हरित पहल' की शपथ सभी स्टाफ सदस्यों ने ली. कार्यक्रम का नेतृत्व उप क्षेत्र प्रमुख, श्री राजकुमार द्वारा किया गया.

दि. 17 एवं 18 अगस्त, 2019 को क्षे.का., मुंबई (उत्तर) के सम्मेलन कक्ष में शाखा प्रबंधकों के साथ परामर्श एवं चर्चा का आयोजन किया गया, जिसमें केन्द्रीय कार्यालय से महाप्रबंधक (एलसीवी) श्री ए.के.सिंह (मध्य में); श्री कबीर भट्टाचार्य, क्षेत्र प्रमुख, मुंबई (उत्तर) एवं श्री संदीप कुमार, प्रभारी (सरल)एवं अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

क्षेत्रीय प्रमुख, श्री सुमेर सिंह सरोया के साथ-साथ वरिष्ठ कार्यपालक व अन्य स्टाफ सदस्यों के साथ शताब्दी वर्ष कार्यक्रम का आयोजन दि. 11.11.2019 को क्षे.का., नागपुर की सिविल लाइन्स शाखा में किया गया.

दि. 15.08.2019 को आयोजित 'गो ग्रीन अभियान' में क्षे.का., बड़ौदा के परिसर में वृक्षारोपण कार्यक्रम एवं जागरुकता रैली का प्रतिनिधित्व करते हुए, श्री आशीष सुवालका, उप क्षेत्र प्रमुख, बडौदा तथा क्षे.का. एवं बड़ौदा सिटी शाखाओं के स्टाफ-सदस्य.

क्षे.का., सूरत के दौरे के दौरान दि. 27 सितम्बर 2019 को श्री केवल हांडा, अध्यक्ष, का स्टाफ बैठक में पुष्प गुच्छ से स्वागत करते हुए श्री पी के सोनी, अंचल प्रमुख अहमदाबाद, साथ में हैं, श्री प्रांजल बाजपेयी, क्षे. प्रमुख, सूरत. इस अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय एवं स्थानीय शाखाओं के स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

एमएसएमई सहायता एवं प्रचार अभियान के अंतर्गत दि. 05.08.2019 को क्षे. का., मुंबई (उत्तर) के सम्मेलन कक्ष में आयोजित विशेष अग्रिम शिविर में कार्यपालक निदेशक, श्री गोपाल सिंह गुसाईं द्वारा ग्राहकों को ऋण संवितरण किया गया. साथ में, श्री कबीर भट्टाचार्य, क्षेत्र प्रमुख, मुंबई (उत्तर) एवं श्री संदीप कुमार, प्रभारी, सरल.

दि. 19-10-19 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह के उपलक्ष्य में क्षे.प्र., मुंबई (उत्तर) श्री कबीर भट्टाचार्य के नेतृत्व में कलासुगंधा मंडल के नवजीवन स्कूल के अल्पसुविधा प्राप्त 100 बच्चों को स्कूल बैग, एक दिन का भोजन एवं अल्पाहार दिया गया. फोटो में, क्षे.प्र., श्री कबीर भट्टाचार्य के साथ उप क्षे.प्र.,श्री राजकुमार; स्कूल के न्यासी श्री जितेंद्र बजाज, अन्य स्टाफ सदस्य एवं विद्यार्थीगण.

दिनांक 06 सितम्बर 2019 को यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के मिड कॉर्पोरेट शाखा के नवीन परिसर का उद्घाटन श्री अरुण कुमार शर्मा, महाप्रबंधक, बीएसएनएल एवं श्री प्रमोद कुमार सोनी, अंचल प्रमुख, अहमदाबाद के कर कमलों द्वारा श्री प्रांजल बाजपेयी, क्षेत्रीय प्रमुख, सूरत एवं श्री कुन्दन कुमार सिन्हा, सरल प्रमुख, सूरत की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया. इस अवसर पर श्री संदीप पटाड़िया, शाखा प्रबंधक, मिड कॉर्पोरेट शाखा तथा अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

दि. 09.11.2019 को शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में क्षे.का., नासिक द्वारा मैराथॉन दौड़ का आयोजन किया गया एवं विजेताओं को पुरस्कृत भी किया गया.

दि. 26.11.2019 को क्षे.का., नासिक में संविधान दिवस के उपलक्ष्य में क्षेत्र प्रमुख, डॉ अजित मराठे एवं उप क्षेत्र प्रमुख, श्री संजय लकड़ा द्वारा डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की प्रतिमा का माल्यार्पण किया गया.

दि. 02 अक्तूबर 2019 को गांधी जयंती के अवसर पर हरित पहल अभियान के अंतर्गत वृक्षारोपण करते हुए क्षेत्र महाप्रबन्धक, श्री पी. सत्यनारायन. साथ में हैं, क्षेत्र प्रमुख मुंबई (उत्तर) श्री कबीर भट्टाचार्य, अंचलीय सतर्कता विभाग से श्री राजीव तिवारी एवं अन्य स्टाफ सदस्य.

दि. 16.11.2019 को हयात रिजेंसी, अहमदाबाद में ग्राहक और स्टाफ मीट का आयोजन किया गया. जिसमें बैंक के प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, श्री राजकिरण रै जी. के साथ कार्पोरेशन बैंक की प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, श्रीमती पी.वी.भारती, आंध्रा बैंक के प्रबंध निदेशक एवं सीईओ श्री जे. पकीरिसामी उपस्थित थे. इस मीट में तीनों बैंकों के प्रबंध निदेशक एवं सीईओ ने नए वित्तीय वर्ष में आंध्रा बैंक और कॉर्पोरेशन बैंक के यूनियन बैंक ऑफ इंडिया में विलय की स्थिति के बारे में ग्राहकों व स्टाफ को संबोधित किया एवं उनके प्रश्नों के उत्तर भी दिये.

दि. 19.10.2019 को उमरगाँव में हरित पहल के अंतर्गत मुख्य अतिथि श्री एम वी एस एन मूर्ति, मुख्य सतर्कता अधिकारी द्वारा वृक्षारोपण किया गया तथा 'सतर्कता जागरूकता शिविर' में लोक नृत्य प्रस्तुत करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया गया. इस अवसर पर श्री प्रमोद कुमार सोनी, क्षेत्र महाप्रबंधक, अहमदाबाद; श्री प्रांजल बाजपेयी, क्षेत्र प्रमुख, सूरत तथा श्री संजीव रंजन सहाय, सहायक महाप्रबंधक, सतर्कता विभाग, एवं श्री सुनील सिंह नेगी, उप क्षेत्र प्रमुख, सूरत उपस्थित थे.

दि. 10.11.2019 को यूनियन बैंक के शताब्दी वर्ष पूर्ण करने के अवसर पर आयोजित मैराथन में क्षेत्र महाप्रबंधक श्री पी. सत्यनारायन; क्षेत्र प्रमुख, मुंबई (उत्तर) श्री कबीर भट्टाचार्य, श्री के. पी. आचार्य, महाप्रबंधक, केन्द्रीय लेखा परीक्षा कार्यालय, श्री एम वेंकटेश (महाप्रबंधक, आरबीएमडी), श्री कल्याण कुमार, महाप्रबंधक (बीपीटी); श्री टाटा वेंकेटरामन (महाप्रबंधक, डीबीडी), श्री राजीव मिश्रा (क्षेत्र प्रमुख, मुंबई दक्षिण) श्री राजीव कुमार (उमप्र, सीएजी) श्री के. एस. अनंत (उमप्र, प्रबंध निदेशक सचिवालय) सुश्री जयश्री डेरी डेविड (कॉर्पोरेट, ठाणे महानगर पालिका) एवं श्री नवल किशोर दीक्षित (राजभाषा प्रभारी) उपस्थित रहें.

दि. 22.10.2019 को यूनियन बैंक स्पोर्ट्स एवं कल्चरल एसोशिएशन, नागपुर द्वारा साई श्रद्धा लॉन, गोरेपेठ, नागपुर में आयोजित कोजागीरी कार्यक्रम उद्घाटन श्री सुमेर सिंह सरोया, क्षेत्र प्रमुख, नागपुर ने किया. इस अवसर पर सांस्कृतिक गीत गायन के साथ-साथ ही वित्तीय वर्ष में सेवानिवृत्त स्टाफ सदस्यों को सम्मानित किया गया. इस अवसर पर श्री अरविंद कुमार सुसरला, उप क्षेत्र प्रमुख, नागपुर; श्री राजेश यादव, सहायक महाप्रबंधक, धंतोली शाखा के साथ क्षेत्रीय कार्यालय व शाखा के स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

दि. 4 और 5 अक्तूबर, 2019 को राजकोट में सभी बैंकों के लिए ग्राहक उन्मुख कदम शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें हमारी बैंक का प्रतिनिधित्व क्षे.का., राजकोट द्वारा किया गया. इस कार्यक्रम में कैबिनेट राज्य मंत्री, श्री पुरुषोत्तम रूपाला जी के साथ श्री मानस रंजन बिस्वाल, कार्यपालक निदेशक एवं श्री प्रमोद कुमार सोनी, क्षेत्र महाप्रबंधक, अहमदाबाद उपस्थित रहे. साथ में है, श्री ए के एस चौहान, क्षेत्र प्रमुख, राजकोट.

क्षे.का., अहमदाबाद के अंतर्गत आश्रम रोड शाखा में दि. 24.12.2019 को 'ई-वेस्ट बिन' की शुरुआत की गयी. ग्राहक अपने मोबाइल, चार्जर इत्यादि ई-वेस्ट को उसमें डाल सकते हैं. इस अवसर पर श्री प्रमोद कुमार सोनी, अंचल प्रमुख के साथ श्री राजेश कुमार, क्षेत्र प्रमुख,अहमदाबाद एवं श्री रंजन मिश्रा, शाखा प्रमुख, आश्रम रोड शाखा, अहमदाबाद उपस्थित थे.

दि. 11.09.2019 को नासिक क्षेत्राधीन सोनगीर शाखा के नए परिसर का उद्घाटन करते हुए क्षेत्र प्रमुख, डॉ. अजित मराठे एवं शाखा प्रबंधक श्री संदीप महाजन और सोनगीर गांव के सरपंच श्री अविनाश महाजन.

सतर्कता सप्ताह के अंतर्गत दि. 24.10.2019 को नासिक क्षेत्र की नायगांव शाखा के शाखा प्रबंधक श्री योगेश पाटिल ने 'गोदा यूनियन कृषक को-ऑपरेटिव सोसायटी, नायगांव' में कैंप का आयोजन कर सतर्कता हेतु सभी को जागृत किया.

सतर्कता सप्ताह के अंतर्गत नासिक क्षेत्र की कलवन शाखा द्वारा दि. 23.10.2019 को हनी बनी स्कूल में रंगोली प्रतियोगिता एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया एवं विजेताओं को पुरस्कृत किया गया.

क्षे.का., नागपुर व सेमीनरी हिल्स शाखा के स्टाफ सदस्यों ने दि. 04.10.2019 को पं. नेहरू उच्च माध्यमिक सेमीनरी हिल्स, नागपुर के परिसर में श्री सुमेर सिंह सरोया, क्षेत्र प्रमुख की अध्यक्षता में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन श्री सिद्धार्थ गजभिए, मुख्य प्रबंधक, क्षे.का., नागपुर; श्री प्रदीप फुलझेले, शाखा प्रबंधक तथा श्री प्रकाश भोयर, स्कूल के मुख्य अध्यापक की उपस्थिति में किया गया.

दि. 15.10.2019 को दीपालीनगर शाखा, क्षे.का., नासिक द्वारा सतर्कता अभियान के अंतर्गत गुरुनानक इंजिनियरिंग कॉलेज, नासिक में वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में श्री संजय लकड़ा, उप क्षेत्र प्रमुख, नासिक के साथ श्री. सचिन पगारे, शाखा प्रबंधक, दीपालीनगर शाखा एवं अन्य उपस्थित थे.

समाचार (दक्षिण)

Bank, under its CSR activity, donated 22 computers, UPS and other computer peripherals to Karnataka Govt. Polytechnic, the second largest polytechnic institute in Karnataka state. On 09.08.2019, Shri Raj Kiran Rai G., MD & CEO lighting the traditional lamp on this occasion at KPT campus, Mangaluru. Present on the occasion were Shri B. Sreenivasa Rao, FGM, Bengaluru and Shri T. Nanjundappa, Regional Head, Mangaluru.

बेंगलूरु क्षेत्रांतर्गत दि. 10.10.2019 को यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के संयोजन में कॉर्पोरेशन बैंक व आंध्रा बैंक के साथ होटल ताज वेस्ट एण्ड में तीन बैंकों के प्रबंध निदेशक व सीईओ के साथ ग्राहकों व स्टाफ सदस्यों के लिए टाउन हॉल बैठक का आयोजन किया गया. बैठक के दौरान मंच पर (बाएँ से) श्री बिरुपाक्ष मिश्र, कार्यपालक निदेशक तथा श्रीमती पी.वी.भारती, एमडी व सीईओ, कॉर्पोरेशन बैंक, श्री राजकिरण रै जी., एमडी व सीईओ तथा श्री डी.के. गर्ग, कार्यपालक निदेशक, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, श्री जे. पकीरिसामी, एमडी व सीईओ, आंध्रा बैंक की मौजूदगी में उपस्थित ग्राहकों को संबोधित करते हुए क्षेत्र महाप्रबंधक, बेंगलूरु श्री बी.श्रीनिवास राव.

सतर्कता जागरूकता सप्ताह–2019 के आयोजनों की शृंखला में क्षेत्र महाप्रबंधक, बेंगलूरु, श्री बी. श्रीनिवास राव (मध्य में) की अध्यक्षता व क्षेत्र प्रमुख, बेंगलूरु, श्री आलोक कुमार; उप अंचल प्रमुख, बेंगलूरु श्री के.एस.एन.मूर्ति; प्राचार्य, स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलूरु श्री सर्वेश रंजन की गरिमामय उपस्थिति में क्षेत्र के समस्त कार्यपालकों व स्टाफ सदस्यों ने विजिथॉन–2019 में उत्साह पूर्वक भाग लेकर भ्रष्टाचार मुक्त भारत बनाने का आह्वान किया.

दि. 15.08.2019 को केन्द्रीय विद्यालय, एमईजी सेंटर, बेंगलूरु के प्रांगण में बैंक द्वारा प्रायोजित 'यूनियन वृक्ष–एक कदम पर्यावरण की ओर–हरित पहल' अभियान के अंतर्गत विद्यालय की प्राचार्य श्रीमती सुगंती सोलोमन की उपस्थिति में क्षेत्र महाप्रबंधक, बेंगलूरु, श्री बी. श्रीनिवास राव व क्षे.प्र., बेंगलूरु श्री आलोक कुमार द्वारा वृक्षारोपण किया गया. इस अवसर पर उप अं. प्र. श्री के.एस.एन.मूर्ति के साथ क्षेत्र के समस्त कार्यपालक उपस्थित रहे.

29.07.2019 को क्षे.का., मदुरै के अंतर्गत आने वाली वत्रप शाखा के नए परिसर का उद्घाटन, श्री जगदेश्वरन, डिप्टी कलेक्टर द्वारा श्री श्रीनिवास वंगला, क्षेत्र प्रमुख, मदुरै; क्षेत्रीय कार्यालय के अन्य अधिकारियों और ग्राहकों की उपस्थिति में किया गया.

दि. 18.10.2019 को बी. श्रीनिवास, क्षेत्र म.प्र., बेंगलूरु के साथ, श्री अजय कुमार, क्षे.प्र., विशाखापट्टणम एवं अन्य स्टाफ सदस्य भ्रष्टाचार के खिलाफ आर.के. बीच पर वॉकथॉन करते हुए.

दि. 18.07.2019 को गुवाहाटी में आयोजित यूनियन सेंटेनरी कैम्पेन में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु नोडल क्षे.का., बेंगलूरु को हमारे बैंक के प्रबंध निदेशक व सीईओ, श्री राजकिरण रै जी. व कार्यपालक निदेशक, श्री एम.आर. बिस्वाल द्वारा क्रमशः शील्ड व प्रमाणपत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया. इस अवसर पर हमारे बैंक के कार्यपालक निदेशकगण श्री दिनेश कुमार गर्ग (बाएँ से प्रथम) व श्री गोपाल सिंह गुसाईं तथा श्री पी.एस. राजन, महाप्रबंधक, एमएसएमई, के.का., मुंबई भी उपस्थित थे.

क्षे.का., कोट्टायम द्वारा दिनांक 4 एवं 5 अक्तूबर, 2019 को कट्टप्पना में ग्राहक जन संपर्क कार्यक्रम आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में इडुक्की जिला कलेक्टर, श्री एच दिनेशन (IAS) मुख्य अतिथि थे. साथ में, श्री पी एस राजन, महाप्रबंधक (एमएसएमई), कें.का.; श्री बीजू कुरियन, महाप्रबंधक, DIC, इडुक्की; श्री वेद प्रकाश अरोड़ा, क्षेत्र प्रमुख, कोट्टायम; श्री राजगोपालन, अग्रणी जिला प्रबंधक, इडुक्की एवं इडुक्की जिले के विभिन्न बैंकों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया.

क्षे.का., मदुरै में दि.15 अगस्त 2019 को कार्यालय के सभी स्टाफ सदस्यों ने मिलकर स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण में भाग लिया. इस अवसर पर क्षेत्र प्रमुख, श्री श्रीनिवास वंगला और उप क्षेत्र प्रमुख, श्री एम आर मणियम उपस्थित थे.

On the eve of 'Go Green Campaign', saplings were planted on 15.8.19 at R.O. Visakhapatnam followed by a 'Go Green walk'. Mr. Ajay Kumar, RO, Visakhapatnam; Mr. Dayanand Choudhary, Dy.Regional Head and staff members from RO and branches participated in the event.

बैंक के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में क्षे.का., विजयवाड़ा में दिनांक 10.11.2019 को मैराथॉन का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 200 से 250 स्टाफ सदस्यों ने परिवार सहित भाग लिया.

क्षे.का., विजयवाड़ा द्वारा चलाए गए 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' के दौरान लोगों में सतर्कता फैलाने हेतु 'वॉकथॉन' का आयोजन किया गया.

'स्वच्छता पखवाड़ा 2019' के दौरान विजयवाड़ा क्षेत्र द्वारा विज्ञान विहार स्कूल में स्वच्छता के प्रति बच्चों में जागरूकता लाने हेतु निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

हेल्थ टिप्स

खट्टी-मीठी चटकारेवाली गुणकारी इमली

इमली के खट्टे-मीठे स्वाद के कारण इसका नाम लेते ही सभी के मुँह में पानी आ जाता है. कोई भी भारतीय चाट, इमली की चटनी के बिना अधूरी है. दक्षिण भारतीय व्यंजनों में तो इमली की खास जगह है. पकी इमली का स्वाद खट्टा-मीठा होता है. एक साल पुरानी इमली अधिक गुणकारी होती है. कच्ची इमली खट्टी, भारी व वायुनाशक होती है. पकी इमली एसीडिटी तथा कॉन्स्टीपेशन दूर करने वाली, कफ तथा वायुनाशक प्रकृति की होती है. यह पित्तनाशक है. इमली के फूलों को भी स्वादिष्ट पकवान बनाने हेतु उपयोग में लाया जाता है. इसके पत्ते शरीर को शीतलता प्रदान करते हैं एवं अपित्तकर होते हैं और पेट के कीड़ों को नष्ट करने में भी मदद करते हैं. तो चलिए, जानते हैं इसके गुणों के बारे में!

* नशा समाप्ति के लिए पकी इमली का गूदा जल में भिगोकर, मथकर और छानकर उसमें थोड़ा गुड़ मिलाकर पिलाना चाहिए.

* इमली के गूदे का पानी पीने से वमन, पीलिया, प्लेग, गर्मी के ज्वर में भी लाभ होता है.

* हृदय की दाहकता या जलन को शांत करने के लिये पकी हुई इमली के रस में मिश्री मिलाकर पिलानी चाहिये.

* इमली के गूदे को हाथ और पैरों के तलुए पर मलने से लू का प्रभाव समाप्त हो जाता है.

* इमली की ताजी पत्तियाँ उबालकर, उसी पानी से मोच या टूटे अंग को सेंके ताकि एक जगह जमा हुआ रक्त फ़ैल जाए.

* 10 ग्राम इमली को 1 किलो जल में उबाल कर छाने और उसमें थोड़ा सा गुलाब जल मिलाकर रोगी को गरारे या कुल्ला कराने से गले की सूजन में आराम मिलता है.

* टी.बी. या क्षय की खांसी में जब कफ़ के साथ थोड़ा रक्त आता हो, तब इमली के बीजों को तवे पर सेंके तथा ऊपर के छिलके निकाल कर उसके चूर्ण को 3 ग्राम तक घृत या मधु के साथ दिन में 3-4 बार चाटने से खांसी कम होने लगती है, कफ़ सरलता से निकलने लगता है और रक्तस्त्राव व पीला कफ़ गिरना भी समाप्त हो जाता है.

* इमली के वृक्ष की जली हुई छाल का भस्म 10 ग्राम बकरी के दूध के साथ प्रतिदिन सेवन करने से पान्डु रोग ठीक हो जाता है.

* पित्त ज्वर में 20 ग्राम इमली 100 ग्राम पानी में रात भर भिगोकर जल को छानकर उसमें थोड़ा बूरा मिलाकर 4-5 ग्राम इसबगोल की फंकी लेकर ऊपर से इस जल को पीने से लाभ होता है.

* इमली, शरीर से खराब कोलेस्ट्रॉल को कम करने और इसमें मौजूद पोटेशियम उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करने में मदद करती है.

गर्भवती या स्तनपान कराने वाली महिलाओं को इमली के अधिक सेवन से बचना चाहिए क्योंकि इससे रक्त में एस्ट्रोजन का स्तर बढ़ जाता है जो गर्भाशय में संकुचन और ब्लीडिंग पैदा कर सकता है. डायबिटीज के मरीजों को इमली का उपयोग करते समय अतिरिक्त सावधानी बरतने की आवश्यकता है. अगर आप खून को पतला करने वाली किसी दवा का सेवन कर रहे हैं, तो इमली का उपयोग बिल्कुल न करें. जिन लोगों को इमली के सेवन से एलर्जी होती है उन्हें त्वचा पर चकत्ते, खुजली, सूजन, चक्कर, बेहोशी, उल्टी, सांस की तकलीफ आदि जैसी हो सकते हैं. तकलीफें अन्य किसी रेचक उत्पाद के साथ इमली का उपयोग नहीं करना चाहिए.

सुप्रिया नाडकर्णी
यूनियन धारा, कें.का.

व्यंजन

मोमोज

मोमोज पूर्वोत्तर भारत का लोकप्रिय नाश्ता है. इसे अलग-अलग प्रकार की सब्जियों से भरी हुई पोटली आकार के गोले में भाप से या तेल में पकाया जाता है. वर्तमान में देश के सभी भागों में 'मोमोज' बहुत पसंद किए जाने लगे हैं. हम यहां शाकाहारी मोमोज बना रहें हैं :

आवश्यक सामग्री (4 व्यक्तियों के लिए) :

मैदा/आटा-2 कप, नमक - स्वादानुसार, पत्ता गोभी-1/2 कप (यहां आप अपनी पसंद के अनुसार मटर, पनीर, चिकन या मांस भी ले सकते हैं), गाजर- 1, हरी मिर्च (बारीक कटी हुई) - 1 चम्मच, प्याज (बारीक कटा हुआ) - 1, लहसुन पेस्ट -1/2 चम्मच, अदरक पेस्ट - 1/2 चम्मच, तेल -1 कप

मोमोज कवर :

मैदे/आटे को एक बर्तन में डाले और उसमें नमक, तेल और थोड़ा-थोड़ा पानी डाल कर चिकना गूंध लें. गूंधने के बाद 15 मिनट के लिए अलग से रखें.

मोमोज का मसाला :

कड़ाई में तेल गर्म करें और उसमें प्याज (बारीक कटा हुआ) और लहसून डालकर हल्के भूरा रंग होने तक भून लें. उसमें पत्ता गोभी, गाजर डालकर मिक्स कर लें. स्वादानुसार नमक, हरी मिर्च और अदरक डाल कर पका लें.

मोमोज बनाने की विधि :

गूँधे हुए आटे के छोटे-छोटे आकार के मोमोज कवर बनाकर उनमें 1 चम्मच मसाला भरें और चारों कोनों में पानी लगाकर बंद कर किनारों को एक साथ इकट्ठा कर पोटली का आकार दें.

मोमोज पकाने वाला बर्तन या इडली स्टैंड लेकर सबसे नीचे वाले बर्तन में पानी तथा ऊपर वाली छलनी या बर्तन में मोमोज रखकर भाप से पकायें.

मोमोज आप मेयोनीज़ एवं सेजवान चटनी, लाल टमाटर मिर्च की चटनी या सॉस के साथ खा सकते हैं.

सुधीर प्रसाद
कें.का., मुंबई

आपकी पाती
Opinion Gallery

" I am thankful to you for sending me the Union Dhara on a regular basis. It is really a pleasure to receive Union Dhara-post retirement -and read this attractive House Magazine, which contains a lot of information and current affairs. This also helps to cherish old memories of my 30+ years of association with our beloved Bank and keep the link alive. There is no exaggeration to say that the full coverage, the excellent get up in size, design, quality of paper and printing makes this worth preserving. Warm Regards to you and your Team!"

A.R. Kalyanakrishnan (retd)

मुझे आपकी गृह पत्रिका 'यूनियन धारा' का शताब्दी विशेषांक प्राप्त हुआ. पत्रिका का आवरण पृष्ठ सुंदर और आकर्षक है. पत्रिका में प्रकाशित आलेख–'गौरवशाली अतीत से.... सुनहरे भविष्य की ओर' में बैंक के इतिहास को बहुत ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है. पत्रिका में प्रकाशित सभी आलेख पाठक को बैंक के 100 वर्ष की गरिमामयी यात्रा से परिचित कराते हैं. पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए पूरी संपादकीय टीम प्रशंसा की पात्र है.

के. वेंकेटसन, एर्णाकुलम अंचल
महाप्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा

मैं 'यूनियन धारा' तथा 'यूनियन सृजन' के प्रत्येक अंक का नियमित पाठक हूं. इन दोनों गृह पत्रिकाओं को निरंतर पढ़ता हूं. विगत अंकों की बातें करें तो यूनियन धारा के सितंबर 2019–'शताब्दी विशेषांक' ने मुझे यह पत्र लिखने को मजबूर कर दिया. यह अंक अपने आप में यूनियन बैंक को समेटे हुए है. इसमें शामिल रचनाएं, जानकारियां तथा इतिहास को पढ़कर मैं ओत–प्रोत हो गया हूँ. मैं संपादक महोदया तथा यूनियन धारा की पूरी टीम को बधाई देता हूं. यह अंक हम सब यूनियनाइट्स के लिए एक उपहार है.

मंतोष कुमार सिंह
सीएजी प्रमुख, क्षे.का. पटना

'यूनियन धारा' का सितंबर अंक शताब्दी विशेषांक हमें प्राप्त हुआ, धन्यवाद ! 'यूनियन धारा' तो हमेशा से ही विशेष रही है, यह नवीन अंक तो पत्रिका से अधिक एक पूरी पुस्तक है, जिसमें यूनियन बैंक की पूरी गाथा है. कार्यपालक महोदय, श्री गोपाल सिंह गोसाईं जी का यह कथन बिल्कुल सही है कि अमेरिका में प्रमुख स्टॉक एक्सचेंज के सर्वे के दौरान यह बात सामने आई कि सौ साल में केवल एक ही कंपनी बच पाई. यूनियन बैंक को यह गौरव प्राप्त हुआ. 1969 में राष्ट्रीयकरण के बाद बैंक ने एक के बाद एक मुकाम हासिल किए. सन् 1976 से निरंतर प्रकाशित होने वाली बैंक की यह गृह पत्रिका बेहद ही आकर्षक एवं जानकारी से परिपूर्ण है. 'हमारे सम्मानीय ग्राहक' शीर्षक के अंतर्गत विभिन्न ग्राहकों के अनुभव एवं उनकी सफलता की कहानी बैंक का ग्राहकों से जुड़ाव प्रदर्शित करता है. बृहत प्रशिक्षण आधार बैंक का बल है. 'हमारी विरासत–हमारी शाखाएं' बिल्कुल सार्थक है. पत्रिका सह पुस्तक को तैयार करने हेतु संपादक मंडल की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है, इसके लिए संपादक मंडल एवं पूरी टीम को बहुत–बहुत शुभकामनाएं !

अमित शर्मा, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), आंध्रा बैंक, हैदराबाद

'यूनियन धारा' का जुलाई–सितंबर 2019 शताब्दी विशेषांक प्राप्त हुआ. यह अंक 'गागर में सागर' जैसा है एवं वाकई संग्रहणीय है. जैसा कि संपादकीय में कहा गया है कि यूनियन बैंक ने 100 वर्षों की यात्रा पूरी की है, पूरी पत्रिका पढ़ते हुए यूनियन बैंक के गौरवशाली अतीत, सुदृढ़ वर्तमान एवं सुनहरे भविष्य की तस्वीर सामने घूमती है. पत्रिका को आरंभ से अंत तक देखते हुए बहुत खूबसूरती के साथ पाठक भी 100 वर्षों की यात्रा करता है तथा खास बात यह कि कहीं भी क्रम टूटता नहीं है, इसके लिए संपादक मंडल को बहुत बहुत बधाई. 'भारतीय रुपये की यात्रा' बहुत ही शोधपरक लेख है. इस रोचक एवं ज्ञानवर्धक विशेषांक के प्रकाशन हेतु आपको व आपके संपादन सहयोगियों को अनेकानेक शुभकामनाएं!

अजय तिवारी, जबलपुर
सदस्य सचिव (बैंक नराकास, जबलपुर) भारतीय स्टेट बैंक

'यूनियन धारा – शताब्दी विशेषांक' प्राप्त हुआ. धन्यवाद !
पत्रिका का कलेवर आकर्षक है. पत्रिका में आपके बैंक द्वारा अब तक तय की गई लंबी यात्रा का वर्णन रोचक ढंग से किया गया है. साथ में, इस लंबी यात्रा के दौरान आपसे बैंकिंग से संबंध रखने वाली संस्थाओं की जानकारी भी दी गई है. यूनि–वन फ़ाउंडेशन द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों संबंधी सचित्र रिपोर्टों को भी पर्याप्त स्थान दिया गया है. 'भारतीय रुपये की यात्रा' लेख से पाठकगण निश्चित ही लाभान्वित होंगे. 'हमारे प्रतिभाशाली स्टाफ सदस्य' लेख से शेष कर्मचारी भी प्रभावित होकर अपनी प्रतिभा को उजागर करने की दिशा में अग्रसर होंगे. पत्रिका में प्रकाशित सभी सामग्री स्तरीय है.

सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल को बधाई.

मैथ्यु जोसेफ़, कैनरा बैंक
क्षे.का. एर्णाकुलम.

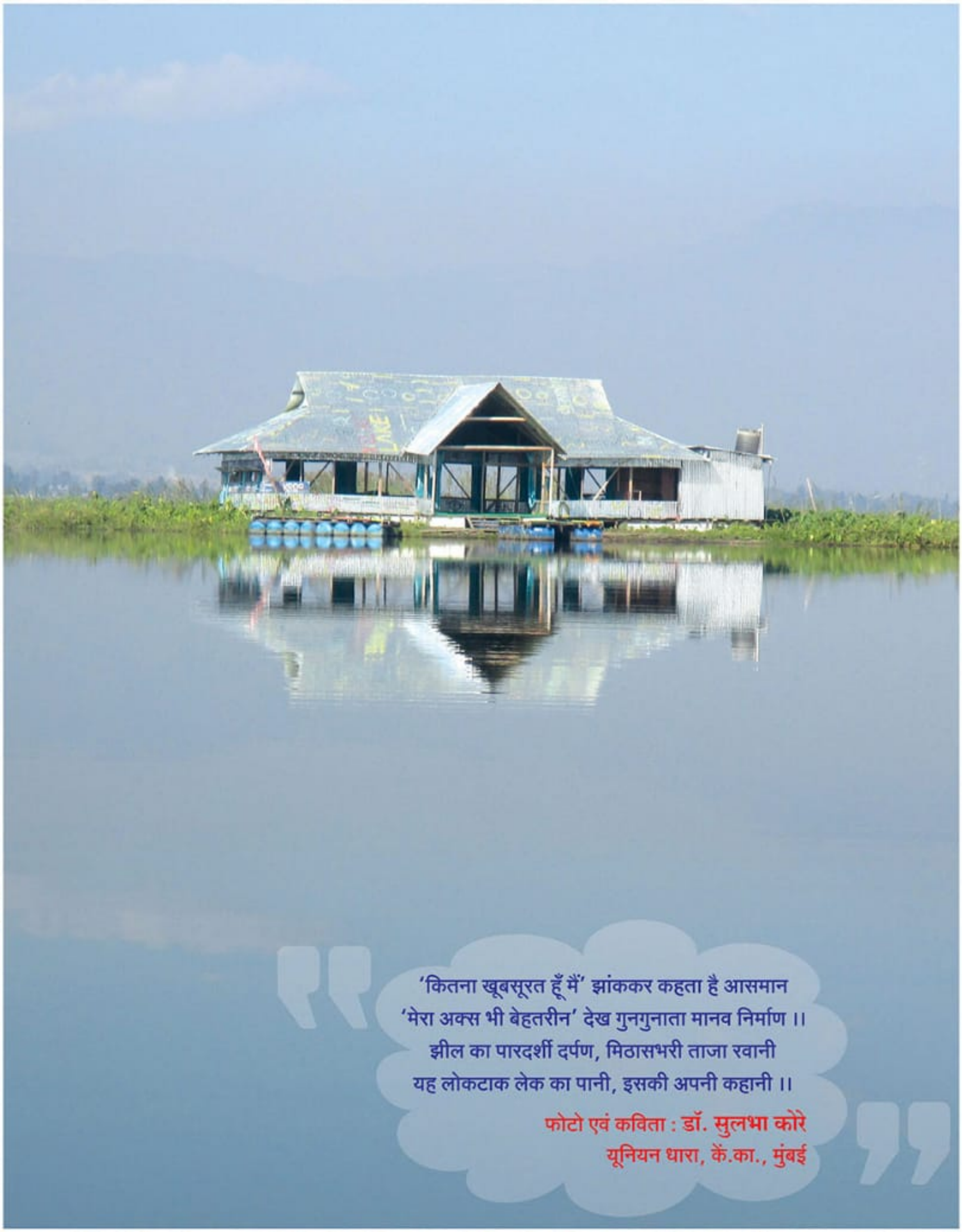

'कितना खूबसूरत हूँ मैं' झांककर कहता है आसमान
'मेरा अक्स भी बेहतरीन' देख गुनगुनाता मानव निर्माण ।।
झील का पारदर्शी दर्पण, मिठासभरी ताजा रवानी
यह लोकटाक लेक का पानी, इसकी अपनी कहानी ।।

फोटो एवं कविता : डॉ. सुलभा कोरे
यूनियन धारा, कें.का., मुंबई

Printed and Published by Dr. Sulabha Shrikant Kore, on behalf of Union Bank of India and Printed at Jayant Printery LLP, 352/354, Murlidhar Temple Compund, Near Thakurdwar Post Office, J.S.S. Road, Mumbai - 400 002 and Published at Union Bank of India, 239, Union Bank Bhavan, Vidhan Bhavan Marg, Nariman Point, Mumbai - 400 021. Editor - Dr. Sulabha Kore.